RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
विशेष संपादक
मुकेश कुमार सिंह
सहायक संपादक
कोमल सुल्तानिया
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
राजनीतिक ब्यूरो
अमरेंद्र शर्मा 9899360011
प्रभाकर कुमार राय
प्रबंधक
अविनाश कुमार 8287266244
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह 9546224277
क्राइम ब्यूरो
एसएन श्याम
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,
(ब्यूरो चीफ), 9334194515, 7677093032
समस्तीपुर : राजेश कुमार
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
मुंगेर : सिद्धांत
कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता
9973077043
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : नवल वत्स, 9818901841
स्वाति, रंजीत कुमार
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318

प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION
PT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 9, अंक : 3-4, सितम्बर-अक्टूबर 2022, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

07 मन की थोथ भरने आता हर साल करवाचौथ

चिकित्सा क्षेत्र में क्रांति का शंखनाद ... 10

बच्चों को उनकी मातृभाषा में ... 18

राहुल बाबा कोरे महान बनने का... 12

सोशल मीडिया पर स्क्रॉल होती... 24

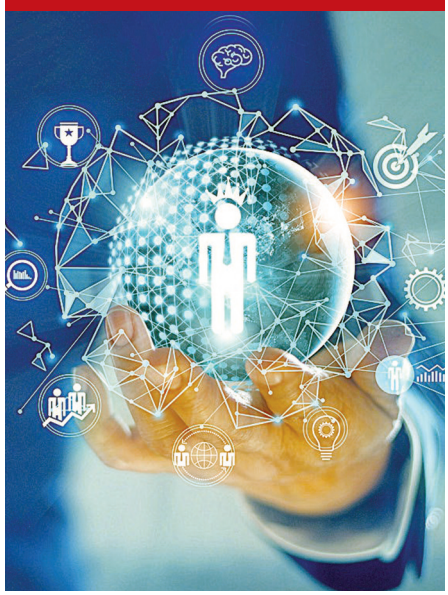

खैरात की राजनीति अब और नहीं

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

मुफ्त का चंदन घिस रघुनंदनह्न की तर्ज पर जनाधार विहीन राजनेताओं द्वारा मुफ्त की सौगात बांटने की राजनीति पर अब नकेल कसने की तैयारी है। इस मामले में पिछले दिनों शीर्ष अदालत की सख्त टिप्पणी और चुनाव आयोग की जवाबदेही तय करने की कोशिशों के बाद आयोग ने मुफ्त के प्रलोभनों को मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट के दायरे में लाने की कवायद शुरू की है। दरअसल, यह मामला अभी शीर्ष अदालत में लंबित है। अगस्त माह में तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश एनवी रमन ने इस मामले को नई पीठ को भेज दिया था। इससे पहले प्रधानमंत्री ने भी मुफ्त की राजनीति को देश के विकास में बाधक बताया था। कोर्ट द्वारा इस अपसंस्कृति को गंभीरता से लेने के बाद सार्वजनिक विमर्श में शामिल मुद्दा जोर पकड़ रहा है। देश की आर्थिक नियमन से जुड़ी संस्थाएं भी चेताती रही हैं कि मुफ्त की राजनीति से राज्यों की अर्थव्यवस्था पर घातक प्रतिकूल असर पड़ता रहा है। क्या मजाक है कि पहले मुफ्त की राजनीति को परवान चढ़ाया जाता है और फिर केंद्र सरकार की संस्थाओं व बैंक से ऋण लेकर राज्य पर कर्ज का बोझ बढ़ाया जाता है। विडंबना यही है कि देश में रेवड़ी संस्कृति पर लगाम लगाने के लिये कोई कारगर कानून नहीं है। इस बाबत शीर्ष अदालत में चुनाव आयोग ने लाचारगी जतायी थी। तभी कोर्ट ने लॉलीपॉप संस्कृति पर लगाम लगाने के लिये मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट को प्रभावी बनाने को कहा। कोर्ट ने आयोग को याद दिलाया कि संविधान के अनुच्छेद 324 के अंतर्गत उसे चुनाव संचालन के लिये कारगर नियम बनाने का अधिकार है। अब इसी कड़ी में चुनाव आयोग ने आचार संहिता में संशोधन की बात कही है। आयोग ने राजनीतिक दलों से कहा है कि वे अपने चुनावी घोषणा पत्र में उल्लेख करें कि जो वायदे वे कर रहे हैं, उन पर कितना खर्च आयेगा? उसके लिये वित्तीय संसाधन कहां से जुटाएंगे? आयोग ने इस बाबत 19 अक्टूबर तक जवाब मांगा है। साथ ही पूछा है राजनीतिक दल स्पष्ट करें कि उनकी मुफ्त की घोषणाओं से किस वर्ग को लाभ होगा? दरअसल, आधारहीन राजनेता मुफ्त की राजनीति के जरिये सफलता का शॉर्टकट तलाश रहे हैं। उन्हें लगता है प्रलोभन की राजनीति से जनता उनके सुनहरे सपनों में खोकर उन्हें कुर्सी पर बैठा देगी। दक्षिण भारत से शुरू हुआ मुफ्त देने का रोग पूरे देश पर लग गया है। विडंबना यही है कि राजनीतिक दल आम जनता को स्थायी रोजगार देने वाली रचनात्मक विकास की योजनाएं बनाने और ढांचागत सुविधाओं को विस्तार देने के बजाय सब्जबाग दिखाने लगते हैं। सवाल है कि राजनेता पार्टी फंड व व्यक्तिगत संसाधनों से क्यों नहीं अपने मुफ्त के वायदों को पूरा करते? सरकारी धन से होने वाले खर्च का अंतिम बोझ भी देश के करदाताओं पर ही पड़ता है। देश में कई बीमारू राज्य इस हालात की बानगी दशार्ते हैं। दीर्घकालीन व स्थायी विकास के बजाय प्रलोभन की राजनीति ने अंततः जीवन स्तर में अपेक्षित सुधार को पलीता ही लगाया है। जैसा कि जाहिर था राजनीतिक दलों की तरफ से विरोध के स्वर उभरने लगे हैं। राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों को नियंत्रित करने के भी आरोप लगाए जा रहे हैं। कुर्सी के लिये प्रलोभन के हथकंडे अपनाकर अपनी नैया पार लगाने वाले नेताओं की कारगुजारी पर नकेल लगाने का वक्त आ गया है। केंद्र सरकार को भी इस मामले में सख्त रवैया अपनाना चाहिए। तभी इस बीमारी से छुटकारा संभव है।

चुनाव के समय खंडित न हो भाईचारे का भाव

चुनाव में कुछ लोगों द्वारा इसे आपसी साख का प्रश्न बना लिया जाता है जो धीरे-धीरे जहर का रूप ले लेता है। बढ़ती प्रतिद्धंद्विता रिश्तों का कत्ल करने लगती है। अगर कोई ऐसे समय साथ न दे तो मित्र भी दुश्मन लगने लग जाते है। मगर यह हमारी भूल है। कोई भी चुनाव आखरी नहीं होता है। और रिश्तों से बढ़कर तो कतई नहीं। हम पद पाने की होड़ में ये भूल जाते है कि हमसे पहले भी चुनाव हुए है और आगे भी होंगे। इसलिए कुछ वोटों के लिए परिवार के लोगों, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों, पड़ोसियों और अन्य से दुश्मनी के भाव से पेश आना सही नहीं है। क्योंकि चुनाव की रात ढलते ही हमें अपने आगे के दिन इन्ही लोगों के साथ व्यतीत करने है।

एकता और भाईचारा किसी प्रगतिशील समाज की मूलभूत जरूरत है। लेकिन सामाज विभिन्न जातियों और समुदायों में बंटा हुआ है, कई बार ये वजहें कड़ुवाहट पैदा करती हैं। ऐसी स्थितियों में ही सजग रहने की जरूरत होती है। शायरों ने एकता और भाईचारा जैसे बुनियादी इंसानी जज्बातों को खूबसूरत अल्फाजों से नवाजा है। हमारे देश में चुनाव जहाँ लोकतंत्र के लिए पर्व का रूप लेकर आते है वही ये हमारे समाज में आपसी भाईचारे और एकता को खत्म करने में किसी यम से कम नहीं है। सत्ता का नशा ऐसे समय चरम पर होता है जो हमारे आपसी प्यार को निगल जाता है और दीखते है तो सिर्फ वोट।

कई प्रत्याशी (सभी नहीं) इन दिनों चुनावी लाभ के लिए मुद्दे उठाते हैं और एक-दूसरे पर आरोप लगाते हैं, जिसका कारण है कि पक्ष और विपक्ष के बीच रिश्तों में कमी आ गई है। सभी लोग एक-दूसरे पर बयानों के जरिए आक्रामक प्रहार करते रहते हैं और आपस में उलझते रहते हैं, जिसके कारण समस्याओं का तार्किक रिश्ता ही जैसे रुक गया है। सुधार के पक्ष में जो काम होने चाहिए वो नहीं हो पा रहे हैं। विकास की दिशा में भी ठोस कदम उठाना और ऐसी कई सारी चचाएं उठने ही नहीं पाती है और बात वहीं की वहीं धरी रह जाती है। चुनाव धार्मिक युद्ध बन जाते हैं, हिन्दू-मुस्लिम और जाति -पाति में फूट डाल देते हैं, प्रत्याशी नेता। चुनाव तो खत्म हो जाते हैं लेकिन वह फूट आजीवन चलती रहती है।

चुनाव में कुछ लोगों द्वारा इसे आपसी साख का

बढ़ती प्रतिद्धंद्विता रिश्तों का कत्ल करने लगती है। अगर कोई ऐसे समय साथ न दे तो मित्र भी दुश्मन लगने लग जाते है। मगर यह हमारी भूल है। कोई भी चुनाव आखरी नहीं होता है। और रिश्तों से बढ़कर तो कतई नहीं। हम पद पाने की होड़ में ये भूल जाते है कि हमसे पहले भी चुनाव हुए है और आगे भी होंगे। इसलिए कुछ वोटों के लिए परिवार के लोगों, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों, पड़ोसियों और अन्य से दुश्मनी के भाव से पेश आना सही नहीं है। क्योंकि चुनाव की रात ढलते ही हमें अपने आगे के दिन इन्ही लोगों के साथ व्यतीत करने है। एकता और भाईचारा किसी प्रगतिशील समाज की मूलभूत जरूरत है। लेकिन सामाज विभिन्न जातियों और समुदायों में बंटा हुआ है, कई बार ये वजहें कड़ुवाहट पैदा करती हैं। ऐसी स्थितियों में ही सजग रहने की जरूरत होती है।

प्रश्न बना लिया जाता है जो धीरे-धीरे जहर का रूप ले लेता है। बढ़ती प्रतिद्धंद्विता रिश्तों का कत्ल करने लगती है। अगर कोई ऐसे समय साथ न दे तो मित्र भी दुश्मन लगने लग जाते है। मगर यह हमारी भूल है। कोई भी चुनाव आखरी नहीं होता है। और रिश्तों से बढ़कर तो कतई नहीं। हम पद पाने की होड़ में ये भूल जाते है कि हमसे पहले भी चुनाव हुए है और आगे भी होंगे। इसलिए कुछ वोटों के लिए परिवार के लोगों, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों, पड़ोसियों और अन्य से दुश्मनी के भाव से पेश आना सही नहीं है। क्योंकि चुनाव की रात ढलते ही हमें अपने आगे के दिन इन्ही लोगों के साथ व्यतीत करने है।

ऐसा भी देखने में आता है कि कई प्रतिद्वंदी ऐसे समय अपनी पिछली हारों का बदला लेने को आतुर रहते है। और इस बदले कि आग में गाँवों में आपसी दंगे-फसाद शुरू हो जाते है। जो गाँव का वातावरण खराब ही नहीं करते; कई बार गाँव की पावन भूमि को लहूलुहान कर देते है। जो लम्बे तनाव का कारण बनती है। ऐसे समय हमें सोचना चाहिए कि चुनाव खेल कि तरह है और इसमें खेल भावना का महत्व है। हार-जीत जीवन में चलती रहती है। इसे अपनी अपनी साख का विषय न बनाये। हार को भूलकर एक समझदार नागरिक होने का परिचय दे और सहनशील बने।

दूसरी ओर जीते उम्मीदवार की जिम्मेवारी ऐसे समय और बढ़ जाती है। वह उसे वोट न करने वालों को भी अपना समझे। क्योंकि अब वो सभी के प्रतिनधि है। मगर दुर्भाग्य से कुछ जीते हुए उम्मीदवार इस बात को नहीं समझ पाते और वो बदलें की भावना से हारे हुए पक्ष को चिढ़ाते है। जिससे भाईचारे और आपसी तालमेल को ठेस पहुँचती है। जो आस-पास के वातावरण को खराब करती हुई पूरे गाँव को अपनी चपेट में ले लेती है। कई बार तो ऐसी छोटी-छोटी बातें भयानक मुद्दे बन जाती है। जो अंतत थानों और कोर्ट कचहरी तक पहुँच जाती है। जहाँ दोनों पक्षों को नुक्सान के अलावा कुछ नसीब नहीं होता।

ऐसा भी देखने में आता है कि कई प्रतिद्वंदी ऐसे समय अपनी पिछली हारों का बदला लेने को आतुर रहते है। और इस बदले कि आग में गाँवों में आपसी दंगे-फसाद शुरू हो जाते है। जो गाँव का वातावरण खराब ही नहीं करते; कई बार गाँव की पावन भूमि को लहूलुहान कर देते है। जो लम्बे तनाव का कारण बनती है। ऐसे समय हमें सोचना चाहिए कि चुनाव खेल कि तरह है और इसमें खेल भावना का महत्व है। हार-जीत जीवन में चलती रहती है। इसे अपनी अपनी साख का विषय न बनाये। हार को भूलकर एक समझदार नागरिक होने का परिचय दे और सहनशील बने। दूसरी ओर जीते उम्मीदवार की जिम्मेवारी ऐसे समय और बढ़ जाती है। वह उसे वोट न करने वालों को भी अपना समझे। क्योंकि अब वो सभी के प्रतिनधि है।

इसलिए चुनाव के समय एक समझदार नागरिक होने का परिचय दे। चुनावी राजनीति में भाईचारे को बचाकर रखे। वोट का सम्मान तभी होगा जब हम एक दूसरे का सम्मान करेंगे। योग्य व्यक्ति को वोट देंगे तो साख के प्रश्न ही नहीं उठेंगे। प्रश्न नहीं उठेंगे तो शांति होगी। शांति होगी तो उचित तरीके से मतदान होंगे और सही प्रतिनिधि चुने जायेंगे और सही प्रतिनिधि ही जनहित के काम कर सकते है। इसलिए ऐसे समय चुनावी लाभ के लिए साम्प्रदायिक सद्भाव, भाईचारे के शांतिपूर्ण माहौल को बिगाड` का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

आजकल राजनीतिक प्रत्याशियों में मानवीयता विलोपित हो चुकी है। येन-केन-प्रकारेण वोट प्राप्ति ही लक्ष्य रह गया है। इसे रोका जाना चाहिए व राजनीतिक सुचिता का बीजारोपण करना चाहिए। धन-बल का प्रयोग कर क्षेत्र में माहौल खराब किया जाता है, बूथ कैप्चरिंग किया जाता है और मतदान दलों को बंधक बनाया जाता है। इस समस्या को दूर करने के लिए विशेष रूप से कानून में प्रावधान किया जाना चाहिए। कानून का उल्लंघन करने वाले संबंधित दलों के प्रत्याशी व कार्यकताओं पर कड़ा जुमार्ना लगाया जाना चाहिए और प्रत्याशी के चुनाव लड` पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और जो भी नियमों का उल्लंघन करते पाए जाते हैं।

ऐसे लोगों पर मुकदमा भी दर्ज किया जाना चाहिए। जब भी चुनाव घोषणा होती है, नेता लोग जनता को प्रलोभन, वादे, संप्रदायिकता, जाति के नाम पर लोगो में द्वेष पैदा करके चुनावी लाभ लेते नजर आते है। चुनावी लाभ के लिए एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं, विवादास्पद बयानबाजी करते हैं और अपना वोट बैंक बढ़ाने की कोशिश करते रहते हैं। इसी प्रयास में वे जनता को गुमराह करते हैं और माहौल को खराब करते हैं। राजनीतिक लाभ के लिए वर्तमान में राजनीति का स्तर बहुत अधिक गिर गया है। सत्ता के लालच और विभिन्न पद पाने के लिए आजकल के नेता धर्म और जाति का सहारा लेकर अलग-अलग धर्म के लोगों को आपस में लड़वाने में कोई गुरेज नहीं कर रहे हैं। भड़काऊ भाषणों में शब्दों का चयन और मुद्दे ऐसे उठाए जाते हैं, जिससे आम जनता भड़कती है। अनर्गल बातें देश के शांतिप्रिय माहौल को बिगाड़ रही हैं। चुनावी लाभ के लिए होने वाले असंयमित और अमर्यादित बोल और भाषा पर लगाम लगाए जाने की सख्त आवश्यकता है।

जब रक्षक बन जाए भक्षक फिर बेटी कौन बचाये

हमारे देश में जहां कन्याओं व महिलाओं के कल्याण व उनके संरक्षण,सुरक्षा व आत्मनिर्भरता के लिये सरकार द्वारा तरह तरह की योजनाओं के दावे किये जाते हैं। जहां हमारा समाज कन्याओं की देवी स्वरूप पूजा करता और नवरात्रों में कंजक बिठाता है। जहां धार्मिक प्रवचनों व सत्संगों में पुरुषों से अधिक महिलायें बढ़चढ़कर हिस्सा लेती हों और तालियां बजा बजाकर व नृत्य कर अपनी धार्मिक श्रद्धा व भक्ति का प्रदर्शन करते न थकती हों, जहाँ लड़कियों की पूजा कर उनके पैर भी धोये जाते हों,उन्हीं कन्याओं व महिलाओं के साथ आखिर कौन सा जुल्म नहीं होता ? बलात्कार,सामूहिक बलात्कार,बलात्कार के बाद हत्या,लड़कियों के चेहरे पर तेजाब डालकर उनके चेहरे को बदसूरत बनाने जैसा जघन्य अपराध,शादी करने का झांसा देकर अपनी वासना की हवस पूरी कर किसी लड़की को धोखा देना, दहेज की मांग,और मांग न पूरी होने पर हत्या कर देना या पत्नी को छोड़ देना अथवा मनमुटाव रखना या इसी बहाने मार पीट करते रहना

जहां हमारा समाज कन्याओं की देवी स्वरूप पूजा करता और नवरात्रों में कंजक बिठाता है। जहां धार्मिक प्रवचनों व सत्संगों में पुरुषों से अधिक महिलायें बढ़चढ़कर हिस्सा लेती हों और तालियां बजा बजाकर व नृत्य कर अपनी धार्मिक श्रद्धा व भक्ति का प्रदर्शन करते न थकती हों, जहाँ लड़कियों की पूजा कर उनके पैर भी धोये जाते हों,उन्हीं कन्याओं व महिलाओं के साथ आखिर कौन सा जुल्म नहीं होता ? बलात्कार,सामूहिक बलात्कार,बलात्कार के बाद हत्या,लड़कियों के चेहरे पर तेजाब डालकर उनके चेहरे को बदसूरत बनाने जैसा जघन्य अपराध,शादी करने का झांसा देकर अपनी वासना की हवस पूरी कर किसी लड़की को धोखा देना, दहेज की मांग,और मांग न पूरी होने पर हत्या कर देना या पत्नी को छोड़ देना अथवा मनमुटाव रखना या इसी बहाने मार पीट करते रहना आदि जैसे अनेक जुल्म इसी ह्यदेवी रुपी कन्याओं के साथ आये दिन होते रहते हैं। एक आंकलन के अनुसार भारत में 88 मिनट के अंतराल में बलात्कार की एक घटना होती है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या समाज व परिवार का कोई वर्ग या रिश्ता ऐसा भी है जहां कन्या को व उसकी इज्जत आबरू को पूरी तरह सुरक्षित समझा जाये ? क्या पिता के पास उसकी अपनी पुत्री सुरक्षित है? क्या भाई के पास उसकी बहन सुरक्षित है ?

आदि जैसे अनेक जुल्म इसी ह्यदेवी रुपीह्न कन्याओं के साथ आये दिन होते रहते हैं। एक आंकलन के अनुसार भारत में 88 मिनट के अंतराल में बलात्कार की एक घटना होती है।

ऐसे में सवाल यह है कि क्या समाज व परिवार का कोई वर्ग या रिश्ता ऐसा भी है जहां कन्या को व उसकी इज्जत आबरू को पूरी तरह सुरक्षित समझा जाये ? क्या पिता के पास उसकी अपनी पुत्री सुरक्षित है? क्या भाई के पास उसकी बहन सुरक्षित है ? क्या गुरु के पास उसकी शिष्या, किसी संत,पुजारी या मौलवी के पास श्रद्धा भाव लेकर सत्कारवश जाने वाली किसी बच्ची की इज्जत सुरक्षित है ? किसी अधिकारी के मातहत काम करने वाली महिला, किसी नेता के पास अपनी फरियाद लेकर पहुंची कोई लड़की अपना दुखड़ा लेकर इंसाफ मांगने के लिये थाने पहुंची कोई लड़की,आखिर कौन सी ऐसी जगह है जहाँ हम और आप दावे से यह कह सकें कि अमुक वर्ग या अमुक रिश्ते के अंतर्गत बेटियां और उनकी इस्मत व आबरू पूरी तरह सुरक्षित है।लड़कियों के प्रति असुरक्षा की इस तरह की भावना कोई कोरी कल्पना पर नहीं बल्कि भारत के किसी न किसी कोने से प्राप्त होने वाली अविश्वसनीय किन्तु सत्य व दिल दहलाने वाली खबरों पर आधारित हैं।

उदारहरण के तौर पर पिछले दिनों इंदौर शहर के खजलाना थाना क्षेत्र से एक ऐसी खबर आई जिसे सुनकर किसी भी मानव ह्रदय रखने वाले व्यक्ति की रूह काँप उठे। खबरों के अनुसार एक दुराचारी व्यक्ति जोकि किसी खाड़ी देश में एक पेट्रोकेमिकल कंपनी में कार्यरत है वह अपनी ग्यारह वर्षीय सगी बेटी के साथ दुष्कर्म करने का आदी हो गया था। उसने अपनी बेटी की आयु 15 वर्ष होने तक यह कुकर्म जारी रखा। हद तो यह कि उसने इन चार वर्षों में कई बार अपनी बेटी से अप्राकृतिक दुष्कर्म भी किया। वह केवल अपनी बेटी से दुष्कर्म करने की खातिर ही वर्ष में दो बार अरब देश से इंदौर आता और जब मौका मिलता वह उसके साथ कुकर्म करता। वह बेटी को यह बात किसी से भी न बताने को कहता और बताने पर उसे जान से मारने की धमकी देता। पिछले दिनों एक दिन जब उसके शरीर में पीड़ा हुई तो उसने अपनी मां से इन बातों का जिक्र किया। पहले तो उसकी मां को यकीन ही नहीं हुआ। परन्तु लड़की के बहुत यकीन दिलाने पर वह मान गयी। और बेटी के साथ उसने पुलिस में जाकर एफ आई आर कर दी। जब वासना का भेड़िया उसका हब्शी बाप पिछले दिनों पुनः अपनी बेटी को अपनी हवस का शिकार बनाने भारत आया तो इंदौर पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। इसी तरह भाई,चाचा,मामा,ससुर,जेठ,देवर,जीजा जैसे पवित्र रिश्तों को कलंकित करने वाले अनेक समाचार प्राप्त होते रहते हैं। इसी तरह एक सामूहिक बलात्कार पीड़िता जब आप बीती लेकर थाने पहुंची तो मौका पाकर थानेदार ने भी उसके साथ बलात्कार कर दिया। इससे बड़ा राक्षसीय व अमानवीय कृत्य और क्या होगा ? गुरु शिष्या या अध्यापक व छात्रा का रिश्ता भी किसी पिता या अभिभावक के कम नहीं। परन्तु यह रिश्ता भी हमारे देश में तार तार हो चुका है। इसके उदाहरण गिनने की तो जरुरत ही नहीं क्योंकि कई ह्यकुप्रसिद्ध गुरु घंटाल ह्य आज भी अपने ऐसे ही दुषकर्मों की सजाएं जेल की सलाखों के पीछे रहकर काट रहे हैं। मंदिर-मस्जिद-

गुरु शिष्या या अध्यापक व छात्रा का रिश्ता भी किसी पिता या अभिभावक के कम नहीं। परन्तु यह रिश्ता भी हमारे देश में तार तार हो चुका है। इसके उदाहरण गिनने की तो जरुरत ही नहीं क्योंकि कई ह्यकुप्रसिद्ध गुरु घंटाल ह्य आज भी अपने ऐसे ही दुषकर्मों की सजाएं जेल की सलाखों के पीछे रहकर काट रहे हैं। मंदिर-मस्जिद-मदरसा आदि कितने पवित्र स्थलों में गिने जाते हैं। परन्तु आये दिन यह खबर आती है कि कभी किसी महंत ने किसी बाबा या पुजारी ने अथवा किसी मौलवी या हाफिज ने किसी बच्ची या महिला के साथ अपना मुंह काला किया। उदाहरण स्वरूप पिछले दिनों एक ताजातरीन ह्रदय विदारक घटना राजस्थान के अलवर जिले के मालाखेड़ा क्षेत्र में घटी।यहां एक 60 वर्षीय पुजारी एक पांच वर्ष की मासूम बच्ची को बहला फुसला कर मंदिर में ले गया और वहीं उसके साथ जोर जबरदस्ती कर दुष्कर्म करने लगा।

मदरसा आदि कितने पवित्र स्थलों में गिने जाते हैं। परन्तु आये दिन यह खबर आती है कि कभी किसी महंत ने किसी बाबा या पुजारी ने अथवा किसी मौलवी या हाफिज ने किसी बच्ची या महिला के साथ अपना मुंह काला किया। उदाहरण स्वरूप पिछले दिनों एक ताजातरीन ह्रदय विदारक घटना राजस्थान के अलवर जिले के मालाखेड़ा क्षेत्र में घटी।यहां एक 60 वर्षीय पुजारी एक पांच वर्ष की मासूम बच्ची को बहला फुसला कर मंदिर में ले गया और वहीं उसके साथ जोर जबरदस्ती कर दुष्कर्म करने लगा। जब लड़की असहनीय पीड़ा से जोर जोर चीखी चिल्लाई तब उसकी आवाज सुनकर पड़ोस से लोग इकठ्ठा हुये और पुजारी को रंगे हाथों पकड़ा। उसकी आम लोगों ने खूब पिटाई की। बताया जाता है कि अलवर की पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम स्वयं घटना स्थल पर पहुंचीं और पुजारी पर एफ आई आर से लेकर मेडिकल जांच आदि तक की कार्रवाई स्वयं अपनी देखरेख में कराई। इसी प्रकार कुछ समय पूर्व एक समाचार उत्तर प्रदेश से आया था जिसके अनुसार कोई मौलवी तलाक के बाद हलाला व्यवस्था के नाम पर तलाक शुदा महिलाओं से ऐय्याशी का धंधा चलाता था। हमारे ही देश में सत्ता के लोग विधान सभा में बैठकर ब्लू फिल्म देखते पकड़े गये। उत्तर प्रदेश का ही एक बाहुबली विधायक तो बलात्कार व कत्ल के इलजाम में अभी भी जेल में है। गोया हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि चाहे जिस पद,गद्दी अथवा धार्मिक या संवैधानिक मरतबे पर बैठा व्यक्ति क्यों न हो,रिश्ता भी चाहे जितना पवित्र क्यों न हो,परन्तु कभी भी उसके भीतर बैठा वासना का राक्षस उसे किसी भी पद अथवा रिश्ते को तार तार करने के लिये मजबूर कर सकता है। ऐसे में समाज के सामने आज का सुलगता सवाल यही है कि आखिर जब रक्षक ही बन जाये भक्षक,फिर बेटी कौन बचाये ?

मन की थोथ भरने आता हर साल करवाचौथ

करवा चौथ विवाहित हिंदू महिलाओं द्वारा प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला एक त्योहार है जिसमें वे सूर्योदय से चंद्रोदय तक उपवास रखकर पति की भलाई और दीघार्यु के लिए प्रार्थना करती हैं। यह त्यौहार अविवाहित महिलाओं द्वारा भी मनाया जाता है जो मनचाहा जीवनसाथी पाने की आशा में प्रार्थना करती हैं। यह हिंदू चंद्र कैलेंडर के कार्तिक महीने में अंधेरे पखवाड़े (कृष्ण पक्ष या चंद्रमा के घटते चरण) के चौथे दिन पड़ता है। तारीख मोटे तौर पर मध्य से अक्टूबर के अंत के बीच कभी भी हो सकती है। यह मुख्य रूप से उत्तरी भारत के राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में मनाया जाता है। करवा चौथ शब्द दो शब्दों करवाह्न से बना है, जिसका अर्थ है टोंटी वाला मिट्टी का बर्तन और ह्यचौथह्न जिसका अर्थ है चौथा। मिट्टी के बर्तन का बहुत महत्व है क्योंकि इसका उपयोग महिलाओं द्वारा त्योहार की रस्मों के हिस्से के रूप में चंद्रमा को जल चढ़ाने के लिए किया जाता है।

बदलते समय में खासकर नवविवाहितों के बीच पतियों ने भी अपनी पत्नियों के लिए व्रत रखना शुरू कर दिया है। इस प्रकार अब, एक पुराना त्योहार ग्रामीण और शहरी सामाजिक परिवेश दोनों में अपने पुनर्निमाण के माध्यम से लोकप्रिय बना हुआ है। हमारे यहाँ करवा चौथ से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं हैं। मगर सबसे लोकप्रिय सावित्री और सत्यवान से संबंधित है जिसमें सावित्री ने अपने पति को अपनी प्रार्थना और दृढ़ संकल्प के साथ मृत्यु के चंगुल से वापस लाया। जब भगवान यम सत्यवान की आत्मा को प्राप्त करने आए, तो सावित्री ने उन्हें जीवन प्रदान करने की भीख मांगी। जब उन्होंने मना कर दिया, तो उसने खाना-पीना बंद कर दिया और यम का पीछा किया जो उसके मृत पति को ले गया। यम ने कहा कि वह अपने पति के जीवन के अलावा कोई अन्य वरदान मांग सकती है। सावित्री ने उससे कहा कि उसे संतान की प्राप्ति हो। यम राजी हो गए। ह्लपति-व्रतह्न (समर्पित) पत्नी होने के नाते, सावित्री कभी भी किसी अन्य व्यक्ति को अपने बच्चों का पिता नहीं बनने देगी। ऐसे में यम के पास सावित्री के पति को फिर से जीवित करने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था।

करवा चौथ विवाहित हिंदू महिलाओं द्वारा प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला एक त्योहार है जिसमें वे सूर्योदय से चंद्रोदय तक उपवास रखकर पति की भलाई और दीघार्यु के लिए प्रार्थना करती हैं। यह त्यौहार अविवाहित महिलाओं द्वारा भी मनाया जाता है जो मनचाहा

जीवनसाथी पाने की आशा में प्रार्थना करती हैं। यह हिंदू चंद्र कैलेंडर के कार्तिक महीने में अंधेरे पखवाड़े (कृष्ण पक्ष या चंद्रमा के घटते चरण) के चौथे दिन पड़ता है। तारीख मोटे तौर पर मध्य से अक्टूबर के अंत के बीच कभी भी हो सकती है। यह मुख्य रूप से उत्तरी भारत के राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में मनाया जाता है। करवा चौथ शब्द दो शब्दों करवा से बना है, जिसका अर्थ है टोंटी वाला मिट्टी का बर्तन और चौथ जिसका अर्थ है चौथा। मिट्टी के बर्तन का बहुत महत्व है क्योंकि इसका उपयोग महिलाओं द्वारा त्योहार की रस्मों के हिस्से के रूप में चंद्रमा को जल चढ़ाने के लिए किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस त्योहार की शुरूआत तब हुई जब महिलाएं अपने पति की सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना करने लगीं, जो दूर देशों में युद्ध लड़ने गए थे। यह भी माना जाता है कि यह फसल के मौसम के अंत को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। मूल जो भी हो, त्योहार पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है।

त्योहार में एक निर्जला व्रत रखना शामिल है जिसमें महिलाएं दिन भर न तो खाती हैं और न ही पानी की एक बूंद लेती हैं और पार्वती के अवतार देवी गौरी की पूजा की जाती है, जो लंबे और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद देती हैं। करवा चौथ से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं हैं। सबसे लोकप्रिय सावित्री और सत्यवान से संबंधित है जिसमें सावित्री ने अपने पति को अपनी प्रार्थना और दृढ़ संकल्प के साथ मृत्यु के चंगुल से वापस लाया। जब भगवान यम सत्यवान की आत्मा को प्राप्त करने आए, तो सावित्री ने उन्हें जीवन प्रदान करने की भीख मांगी। जब उसने मना कर दिया, तो उसने खाना-पीना बंद कर दिया और यम का पीछा किया जो उसके मृत पति को ले गया। यम ने कहा कि वह अपने पति के जीवन के अलावा कोई अन्य वरदान मांग सकती है। सावित्री ने उससे कहा कि उसे संतान की प्राप्ति हो। यम राजी हो गए। ह्लपति-व्रतह्व (समर्पित) पत्नी होने के नाते, सावित्री कभी भी किसी अन्य व्यक्ति को अपने बच्चों का पिता नहीं बनने देगी। यम के पास सावित्री के पति को फिर से जीवित करने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था।

ऐसी ही एक और कहानी है सात प्यारे भाइयों की इकलौती बहन वीरवती की। जब भाइयों ने उसे पूरे दिन उपवास करते हुए नहीं देखा तो उन्होंने उसे यह विश्वास दिलाने के लिए गुमराह किया कि चाँद उग आया है। वीरवती ने अपना उपवास तोड़ा और भोजन किया लेकिन जल्द ही उन्हें अपने पति की मृत्यु की खबर मिली। उसने पूरे एक साल तक प्रार्थना की और देवताओं ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसके पति का जीवन वापस दे दिया। ऐसे ही एक करवा नाम की एक महिला अपने पति के प्रति गहरी समर्पित थी। उनके प्रति उनके गहन प्रेम और समर्पण ने उन्हें शक्ति (आध्यात्मिक शक्ति) दी। नदी में नहाते समय उसके पति को मगरमच्छ ने पकड़ लिया। करवा ने मगरमच्छ को सूती धागे से बांध दिया और यम (मृत्यु के देवता) को मगरमच्छ को नरक भेजने के लिए कहा। यम ने मना कर दिया। करवा ने यम को श्राप देने और उसे नष्ट करने की धमकी दी। पति-व्रत (भक्त) पत्नी द्वारा शाप दिए जाने के डर से यम ने मगरमच्छ को नरक भेज दिया

और करवा के पति को लंबी उम्र का आशीर्वाद दिया। करवा और उनके पति ने कई वर्षों तक वैवाहिक आनंद का आनंद लिया। आज भी करवा चौथ को बड़ी आस्था और विश्वास के साथ मनाया जाता है।

देश में करवा चौथ से संबंधित उत्सव सुबह जल्दी शुरू होते हैं जहां विवाहित महिलाएं सूरज उगने से पहले उठती हैं और तैयार हो जाती हैं। करवा चौथ से एक रात पहले, महिला की मां बया भेजती है जिसमें उसकी बेटी के लिए कपड़े, नारियल, मिठाई, फल और सिंदूर (सिंदूर) और सास के लिए उपहार होते हैं। तब बहू को अपनी सास द्वारा दी गई सरगी (करवा चौथ के दिन सूर्योदय से पहले खाया गया भोजन) खाना चाहिए। इसमें ताजे फल, सूखे मेवे, मिठाई, चपाती और सब्जियां शामिल हैं। जैसे ही दोपहर आती है, महिलाएं अपनी-अपनी थालियों (एक बड़ी प्लेट) के साथ आ जाती हैं। इसमें नारियल, फल, मेवा, एक दीया, एक गिलास कच्ची लस्सी (दूध और पानी से बना पेय), मीठी मठरी और सास को दिए जाने वाले उपहार शामिल हैं। थाली को कपड़े से ढक दिया जाता है। तब महिलाएं एक साथ आती हैं और गौरा मां (देवी पार्वती) की मूर्ति की परिक्रमा करती हैं और करवा चौथ की कहानी एक बुद्धिमान बुजुर्ग महिला द्वारा सुनाई जाती है जो यह सुनिश्चित करती है कि पूजा सही तरीके से हो। इसके बाद महिलाएं थालियों को घेरे में घुमाना शुरू कर देती हैं। इसे थाली बटाना कहते हैं। यह अनुष्ठान सात बार किया जाता है। पूजा के बाद, महिलाएं अपनी सास के पैर छूती हैं और उन्हें सम्मान के प्रतीक के रूप में सूखे मेवे भेंट करती हैं।

देश में करवा चौथ से संबंधित उत्सव सुबह जल्दी शुरू होते हैं जहां विवाहित महिलाएं सूरज उगने से पहले उठती हैं और तैयार हो जाती हैं। करवा चौथ से एक रात पहले, महिला की मां बया भेजती है जिसमें उसकी बेटी के लिए कपड़े, नारियल, मिठाई, फल और सिंदूर (सिंदूर) और सास के लिए उपहार होते हैं। तब बहू को अपनी सास द्वारा दी गई सरगी (करवा चौथ के दिन सूर्योदय से पहले खाया गया भोजन) खाना चाहिए। इसमें ताजे फल, सूखे मेवे, मिठाई, चपाती और सब्जियां शामिल हैं। जैसे ही दोपहर आती है, महिलाएं अपनी-अपनी थालियों (एक बड़ी प्लेट) के साथ आ जाती हैं। इसमें नारियल, फल, मेवा, एक दीया, एक गिलास कच्ची लस्सी (दूध और पानी से बना पेय), मीठी मठरी और सास को दिए जाने वाले उपहार शामिल हैं।

व्रत तोड़ा तब होता है जब चंद्रमा अंधेरे आकाश में चमकता है। वे एक चन्नी (छलनी) और एक पूजा थाली ले जाते हैं जिसमें एक दीया (गेहूं के आटे से बना), मिठाई और एक गिलास पानी होता है। वे ऐसी जगह जाते हैं जहां चांद साफ दिखाई देता है, आमतौर पर छत। वे चलनी से चाँद को देखती हैं और चाँद को कच्ची लस्सी चढ़ाती हैं और अपने पति के लिए प्रार्थना करती हैं। अब पति वही कच्ची लस्सी और पत्नी को मिठाई खिलाता है और वह अपने पति के पैर छूती है। दोनों अपने बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हैं और ऐसे ही व्रत तोड़ा जाता है। करवा चौथ के दिन पंजाबियों के बीच रात के खाने में कोई भी साबूत दाल जैसे लाल बीन्स, हरी दालें, पूरी (तली हुई भारतीय फ्लैटब्रेड), चावल और बया की मिठाइयाँ शामिल होती हैं। वर्तमान समय में बॉलीवुड फिल्मों और टेलीविजन शो में इसके चित्रण के कारण इस त्योहार से जुड़े अनुष्ठानों में समय के साथ बदलाव आया है। इसने इस त्यौहार को भारत के ऐसे हिस्सों में लोकप्रिय बनाने में भी मदद की है जहाँ इसे पारंपरिक रूप से नहीं मनाया जाता था। अब बदलते समय में खासकर नवविवाहितों के बीच पतियों ने भी अपनी पत्नियों के लिए व्रत रखना शुरू कर दिया है। इस प्रकार, एक पुराना त्योहार ग्रामीण और शहरी सामाजिक परिवेश दोनों में अपने पुनर्निमाण के माध्यम से लोकप्रिय बना हुआ है।

क्या आपके घर पर भी होता हैं बच्चों में झगड़ा

इन तरीकों से संभाले यह परिस्थिति

घर में दो या दो से ज्यादा बच्चे हो तो उन्हें कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होता है क्योंकि उनके साथ खेलने और बात करने के लिए घर में कोई होता हैं। लेकिन खेल-खेल में बच्चों के बीच लड़ाई-झगड़े भी होते हैं जो कि आम बात हैं। लेकिन ये झगड़े हर बात पर होने लगे तो चिंता की बात हैं। यदि यह नोंक-झोंक रोज की बात हो जाए तो यह पूरे घर में तनाव का माहौल पैदा कर देती है। साथ ही यह उनकी दैनिक गतिविधियों पर भी बुरा असर डालती है। ऐसे में पेरेंट्स को स्थिति को संभालते हुए बच्चों की समझाइश करने की जरूरत होती हैं। हम आपको बताने जा रहे हैं कि किस तरह इस स्थिति को संभाला जाए ताकि बच्चों के बीच आपसी प्रेम बना रहे और उनकी लड़ाई गंभीर रूप न ले।

समझदारी से काम लेना सिखाएंबच्चों को समझाएं कि उनके दोस्त या कजन्स जब उसके खिलौनों के साथ खेल रहे होते हैं तो हो सकता है उनके पास वो खास खिलौना न हो, जो उनके मन में उस खिलौने को लेकर उत्सुकता पैदा कर रहा हो। ऐसे में उनके इस व्यवहार पर चिढ ` की जगह उनके साथ मिलकर खेलने की कोशिश करें। बच्चे को समझाएं की जब आप उनकी जगह होते हैं और ऐसा महसूस करते हैं तो उस समय उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए।बात रखने का तरीका सिखाएंघर पर बच्चे अक्सर अपनी बात साबित करने के लिए एक दूसरे से लड़ते हों तो उन्हें अपनी बात रखने का सही तरीका सिखाएं। उन्हें सिखाएं कि लड़ाई करने या चिल्लाने से वह सही साबित नहीं हो जाएंगे।

लड़ाई से स्थिति बिगड़ सकती है। इसलिए शालीनता के साथ अन्य बच्चों से बात करें और अपनी बात को समझाएं।समस्या सुलझाना सिखाएंआप बच्चे के झगड़ों को सुलझाने की जगह उसे खुद उसकी समस्या का समाधान ढूंढ ा सिखाएं। उदाहरण के लिए उससे कहें कि वो बारी-बारी अपने दोस्त के साथ खिलौने से खेलें। हो सकता है कई बार उन्हें मामला सुलझाने में दिक्कत हो तो उन्हें विश्वास दिलाएं कि आप उन्हें बेहतर सुझाव दे सकती हैं। ऐसे में जब बच्चों के बीच झगड़ा बढ ` लगेगा तो वो सबसे पहले आप के पास आएगा। बच्चे के सकारात्मक व्यवहार की तारीफ करेंअगर आपका बच्चा बिना लड़ाई या बहस के अन्य बच्चे से अपनी समस्याएं सुलझाता है तो उसके इस सकारात्मकता व्यवहार की तारीफ करें।

बच्चे के इस तरह के व्यवहार को प्रोत्साहन दें ताकि वह भविष्य में भी लड़ाई झगड़े की स्थिति से निपटने के लिए सकारात्मक तरीका ही अपनाएं।बच्चों को दें समयबच्चों को समान समय देना भी जरूरी है। अगर आप बच्चों के साथ समान समय नहीं दे पा रहे हैं या आप किसी काम में व्यस्त हैं तो आप उन्हें समझाएं। साथ ही अपनी परिस्थिति के बारे में बताएं। इससे अलग ऐसी जीवन दिनचर्या निर्धारित करें, जिससे आप थोड़ा समय अपने बच्चों को भी देता है।शांत रहना सिखाएंअपने बच्चे को गुस्सा आने पर खुद को शांत रखने का तरीका सिखाएं। उदाहरण के लिए, उन्हें समझाएं कि जब कभी उन्हें गुस्सा आए, वो लंबी सांसें लें या फिर वहां से हट जाएं या कहीं और अपना ध्यान लगाएं।

ना करें प्लास्टिक बोतल में पानी पीने की गलती, सेहत को होते हैं ये नुकसान

बच्चों को सिखाएं कैसे समझें दूसरों की बातेंअकसर बच्चों की आदत होती है कि वह दूसरों की बात ना सुनकर केवल अपनी ही बात कहे चले जाते हैं। ऐसे में माता पिता का फर्ज है की वे अपने बच्चों को सिखाएं कि दूसरों की बात को सुनना भी जरूरी है।

चिकित्सा क्षेत्र में क्रांति का शंखनाद है अमृता अस्पताल

कांग्रेस के साथ अजीब विडंबना है। एक तरफ राहुल गांधी भारत जोड़ो अभियान चला रहे हैं दूसरी तरफ अपने घर यानी पार्टी को बिखरने से खुद नहीं बचा पा रहे हैं। फिर इस तरह की राजनीति का क्या मतलब निकलता है।कांग्रेस को जितनी उठाने की कोशिश की जा रही है वह दिन-ब-दिन उतनी कमजोर होती जा रही है। पार्टी स्वयं में अपना अर्थ खोती दिखती है। गुलाम नबी आजाद और दूसरे राजनेताओं का कांग्रेस के साथ न रहना साफ-साफ बताता है कि पार्टी में सामंजस्य की स्थित नहीं है। स्थिति यह भी इशारा करती है कि पार्टी में सोनिया गांधी की नहीं चल रही है। राहुल गांधी तानाशाह जैसे फैसले ले रहे हैं ? राहुल गांधी एक तरफ खुद पार्टी की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते दूसरी तरफ पर्दे के पीछे से पार्टी चलाना चाहते हैं। गुलाम नबी आजाद जैसे अनुभवी राजनेता का पार्टी छोड़ना कांग्रेस के लिए शुभ संकेत नहीं है।

कांग्रेस का जहाज डूब रहा है इसका मलाल ह्यगांधी परिवार को भले न हो, लेकिन देश यह सब देख रहा है। लेकिन कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व आंखों पर पट्टी बांध रखा है। गुलाम नबी आजाद कांग्रेस की टॉप लीडरशिप से आते हैं। ऐसा राजनेता जो पार्टी के लिए अपनी पूरी उम्र खपा दिया और सियासी कैरियर के अंतिम पड़ाव में उसे बेआबरू होकर पार्टी को अलविदा कहना पड़ा। कांग्रेस ऐसे विषय पर भाजपा बनना चाहती है। लेकिन वह न भाजपा बन पा रही न कांग्रेस। कांग्रेस को छोड़ने का गुलाम नबी को मलाल भी है। कांग्रेस की नीतियों से नाराज होकर पार्टी में जी -23 के लोग लामबंद हो गए तब भी नाराज राजनेताओं को पार्टी मना नहीं पायी। गुलाम नबी आजाद, कपिल सिब्बल, जितीन प्रसाद जैसे अनगिनत दिग्गज पार्टी से किनारा करते गए।

कांग्रेस की कमान जब तक सोनिया गांधी के हाथों में थी और मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री रहे। उस दौरान बुरे आर्थिक हालात में भी कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन किया था। जिसका उल्लेख आजाद ने अपने त्यागपत्र में भी किया है। उस दौर में देश की अर्थव्यवस्था की हालत बेहद नाजुक थीं लेकिन आर्थिक सुधारों बेहद मजबूती मिली।सोनिया गांधी के त्याग को लेकर देश में चचाएं थीं। उस दौरान कांग्रेस में जी-23 जैसी कोई बात नहीं थी। लेकिन पार्टी की कमान राहुल गांधी के हाथों में आते ही अनुभवी राजनेताओं को हाशिए पर रखा जाने लगा। नई सोच के युवाओं को आगे लाने की कोशिश में कांग्रेस डुबती चली गयी। निश्चित रूप से इन सारी विफलताओं के पीछे कहीं न कहीं राहुल गांधी जिम्मेदार हैं। आप घर नहीं संभाल पा रहे हैं फिर देश का विश्वास कैसे जीत पाएंगे। भाजपा का विकल्प कांग्रेस आज भी है, लेकिन इस हालात में जनता उस पर कैसे भरोसा करे। गुलाम नबी आजाद कांग्रेस से आजाद हो गए। फिलहाल यह कहना मुश्किल है कि कांग्रेस से आजाद होने का उनका फैसला कितना उचित है। लेकिन पार्टी के पास जम्मू कश्मीर से बड़ा चेहरा गायब हो गया। कांग्रेस गुलाम नबी को राज्यसभा न भेजकर बड़ी गलती की। सदन में आजाद की मौजूदगी में कांग्रेस कहीं न कहीं से मजबूत बनती। कम से कम बंगाल के अधीर रंजन चौधरी से तो लाख गुने आजाद भले थे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पर गलत बयानी देकर कांग्रेस की जो दुर्गति उन्होंने करायी उससे तो वह बच जाती। राहुल गांधी के फैसलों से गुलाम नबी आजाद जैसे कई राजनेता नाराज चल रहे थे। इसका दर्द उनकी पांच पन्नों की चिट्ठी कहती है, जिसे उन्होंने सोनिया गांधी को लिखा है। उन्होंने साफ-साफ लिखा है कि कांग्रेस की दुर्गति के लिए राहुल गांधी जिम्मेदार हैं। कांग्रेस को राहुल गांधी और उनकी चाटुकार मंडली चला रहीं हैं। जिनके पास न कोई अनुभव है और न ही राजनीति का ज्ञान। कांग्रेस छोड़ने वाले राजनेताओं में अभी तक किसी ने राहुल गांधी पर सीधे इस तरह का हमला नहीं किया था।

आजाद ने अपने पत्र में कई गंभीर मुद्दे और अहम सवाल भी उठाएं हैं। इस पर कांग्रेस को गंभीर चिंतन करना चाहिए, लेकिन लगता है कि गांधी परिवार अपने वफादारों से घिरा है। उसे जितनी चिंता अपने वफादारों की है उतनी कांग्रेस और उसके भविष्य की नहीं है। जिसका मूल कारण है कि पार्टी बिखर रही है। संगठन में भी अनुभवी नेताओं को दरकिनार किया गया है। आजाद ने सरकारी अध्यादेश को फाड़ने के लिए भी राहुल गांधी को कटघरे में खड़ा किया है। गुलाम नबी ने तो यहां तक आरोप लगाया है कि पार्टी के अहम फैसले सिक्योरिटी गार्ड और राहुल गांधी के पीए ले रहे हैं। लेकिन गुलाम नबी आजाद कांग्रेस में रहते हुए इस तरह के आरोप क्यों नहीं लगाए। चुप क्यों बैठे रहे। यह गलत परम्परा है। पार्टी में रहते हुए लोग मुंह नहीं खोलते बाहर आते है। वाकयुद्ध पर उतर आते हैं।

गुलाम नबी के आरोपों में दम है तो निश्चित रूप से इसके लिए कांग्रेस जिम्मेदार है। उन्होंने यहां तक कहा कि साल 2014 में चुनावी जंग के दौरान जो निर्णय लिए गए थे वह आज भी कांग्रेस के स्टोर रूम में बंद है, उन्हें कभी खोला नहीं गया। पार्टी में अगर ऐसे हालात हैं जहां संगठन की नहीं सुनी जाती उस दशा में कांग्रेस का जिंदा रह पाना मुश्किल है। इसकी वजह भी साफ दिखती है कि कांग्रेस साल 2014 से 2022 के बीच दो लोकसभा चुनाव हार चुकी है। जहाँ छह राज्यों में गठबंधन के साथ उसकी सरकार थीं आज वह दो राज्यों तक सिमट गयी है। साफ जाहिर है कि पार्टी में संगठन नहीं व्यक्तिवाद हावी है। कांग्रेस पूरी तरह से रिमोट कंट्रोल आधारित पार्टी हो चली है। संगठन के फैसलों में पार्टी के राजनेताओं का कोई मतलब नहीं रह गया। राहुल गांधी के सामने खुद सोनिया गांधी की नहीं चल रही है। जिसकी वजह से कांग्रेस पतन की तरफ बढ़ रही है। सोनिया गांधी की अगर चलती तो कांग्रेस की ऐसी दुर्गति नहीं होती। वरिष्ठ राजनेताओं का सम्मान और उनके दिए गए सुझावों पर अमल किया जाता। यह बात आजाद ने भी कहा है। उन्होंने सोनिया गाँधी की तारीफ भी की है साथ ही गांधी परिवार का देश के लिए किए गए योगदान की भी सराहना की है। लेकिन राहुल गांधी से खासे नाराज हैं। अब सवाल उठता है कि कांग्रेस से आजाद हुए आजाद का नया सियासी ठिकाना क्या होगा। क्या वे भाजपा में जा सकते हैं। भाजपा क्या उनकी विचारधारा से मेल खाती है। फिलहाल इस मुद्दे पर अभी कुछ कहना अंधेरे में तीर चलाना होगा। लेकिन गुलाम नबी का कांग्रेस से आजाद होना कांग्रेस के लिए अच्छी बात नहीं है। अध्यात्म और मानव कल्याण की दिशा में सराहनीय प्रयासों के लिये श्री माता अमृतानन्दमयी देवी (अम्मा) दुनियाभर में मशहूर हैं। वे सारे विश्व में अपने निःस्वार्थ प्रेम और करुणा के लिये जानी जाती हैं। उन्होंने अपना जीवन गरीबों तथा पीड़ितों की सेवा व जन साधारण के आध्यात्मिक उद्धार के लिये समर्पित कर दिया है। अपने निःस्वार्थ प्रेमपूर्ण आश्लेष से, गहन आध्यात्मिक सारसिक्त वचनों से तथा संसार में व्याप्त अपनी सेवा संस्थाओं के माध्यम से अम्मा मानव का उत्थान कर रही हैं, उन्हें प्रेरणा दे रही हैं, उनका संबल बन रही है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं। इसका एक नवीन एवं प्रेरक उदाहरण है एशिया का सबसे बड़ा प्राइवेट अमृता अस्पताल। जो न केवल दिल्ली-एनसीआर के लोगों के लिये बल्कि देश के तमाम रोगियों के लिये अनुपम तोहफा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फरीदाबाद में लगभग 6,000 करोड़ रुपये की लागत से 133 एकड़ क्षेत्र में बने 2,600

बेड वाले अमृता अस्पताल का उद्घाटन किया। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस इस अस्पताल का प्रबंधन माता अमृतानन्दमयी मठ की ओर से किया जाएगा। अब तक इसमें कुल 4,000 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं। लगभग 1 करोड़ वर्ग फुट के इस क्षेत्र में न केवल एक बड़ा सुपर-स्पेशियलिटी अस्पताल बल्कि एक फोर स्टार होटल, मेडिकल कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान के लिए एक कॉलेज, एक पुनर्वास केंद्र, रोगियों के लिए एक हेलीपैड और कई अन्य सुविधाओं के साथ रोगियों के परिवार के लोगों के लिए 498 कमरों वाला गेस्टहाउस भी होगा। इस देश में चिकित्सा सुविधाओं के लिये तरसते लोगों के लिये यह एक राहत का माध्यम बनेगा।

इस अस्पताल का निर्माण माता अमृतानंदमयी मिशन ट्रस्ट की ओर से किया गया है हालांकि यह निजी क्षेत्र का अस्पताल हैं, लेकिन ट्रस्ट की प्रमुख आध्यात्मिक गुरु मां अमृतानंमयी की जिस तरह से सेवा भावना वाली छवि है, उसे देखते हुए इस अस्पताल का लाभ आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंदों को बेहद रियायती दर पर देने की बात भी कही जा रही है। अस्पताल के रेजीडेंट मेडिकल निदेशक डा.संजीव के सिंह के अनुसार अम्मा यानी माता अमृतानंदमयी के आशीर्वाद से दो साल बाद अस्पताल में बेड की संख्या बढ़कर 750 और पांच साल में एक हजार बेड की हो जाएगी। इसमें 534 क्रिटिकल केयर बेड भी शामिल होंगे। फिर चरण दर चरण इसमें विस्तार करते हुए 2600 बेड का अस्पताल जनता को समर्पित होगा। ट्रस्ट की ओर से पहले से ही 11 बड़े अस्पताल संचालित हैं और इनमें कोच्चि में सबसे बड़ा 1350 बेड का अस्पताल है। अब यह 2600 बेड का अस्पताल होगा। प्रधानमंत्री मोदी के अनुसार हमारे यहां कहा गया है वसुधैव कुटुंबकम। अम्मा प्रेम, करुणा, सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति हैं। वो भारत की आध्यत्मिक परंपरा की वाहक है।ह्न यही कारण 1987 में, अपने श्रद्धालुओं के अनुरोध पर, अम्मा विश्व के सभी देशों में भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक उन्नयन के कार्यक्रम आयोजित करने लगीं। उनमे निम्न देश शामिल हैं- ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, ब्राजील, कनाडा, चिली, दुबई, इंग्लैंड, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, होलैंड, आयरलैंड, इटली, जापान, केन्या, कुवैत, मलेशिया, मॉरिशस, रीयूनियन, रशिया, सिंगापुर, स्पेन, श्रीलंका, स्वीडेन, स्विटजरलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका। वे केवल विदेशों में ही नहीं बल्कि भारत के कोने-कोने में भी भ्रमण करते हुए सेवा एवं परोपकार की गंगा को प्रवहमान करती है।

अम्मा के विश्वव्यापी धर्मार्थ मिशन में बेघर लोगों के लिए 100,000 घर, 3 अनाथ आश्रम बनाने का कार्यक्रम और 2004 में भारतीय सागर में सुनामी जैसी आपदाओं से सामना होने की अवस्था में राहत-और-पुनर्वास, मुफ्त चिकित्सकीय देखभाल, विधवाओं और असमर्थ व्यक्तियों के लिए पेंशन, पर्यावरणीय सुरक्षा समूह, मलिन बस्तियों का नवीनीकरण, वृद्धों के लिए देखभाल केंद्र और गरीबों के लिए मुफ्त वस्त्र और भोजन आदि कार्यक्रम सम्मिलित हैं। ये परियोजनाएं उनके द्वारा संस्थापित संगठनों द्वारा संचालित की जाती हैं जिसमे माता अमृतानंदमयी मठ (भारत), माता अमृतानंदमयी सेंटर (संयुक्त राज्य अमेरिका), अम्मा-यूरोप, अम्मा-जापान, अम्मा-केन्या, अम्मा-ऑस्ट्रेलिया आदि शामिल हैं। यह सभी संगठन संयुक्त रूप से एम्ब्रेसिंग द वर्ल्ड (विश्व को गले लगाने वाले) के रूप में जाने जाते हैं। वह समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने, सामाजिक उत्थान और समाज के आखिरी इंसान तक के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिये प्रयासरत है। वे विश्व आध्यात्मिक गुरु होने के साथ-साथ समाज सुधारक है। महिला होने के नाते वह औरतों के प्रति समाज में हो रहे अत्याचारों से बहुत दुखी हैं और महिला उत्थान के अनेक कार्यक्रम संचालित कर रही है। जिससे महिला सशक्तिकरण हो सके और समाज में उनका मान बढ़ सके। पिछले चार दशकों से भी ऊपर से चलाये जा रहे ये कार्यक्रम न सिर्फ भारत बल्कि विदेशों में भी एक नव क्रांति और नये दर्शन का संचार कर रहे हैं। अमृता अस्पताल श्रृंखला चिकित्सा-जगत में एक क्रांति का शंखनाद है। जब 2004 में उनसे यह पूछा गया कि उनके धर्मार्थ मिशन का विकास कैसा चल रहा है तो अम्मा ने कहा, सब कुछ सहज रूप से होता है। गरीबों और व्यथित लोगों की दुर्दशा देखकर एक कार्य ही दूसरे कार्य का माध्यम बना। अम्मा प्रत्येक व्यक्ति से मिलती हैं, वे प्रत्यक्ष ही उनकी समस्याओं को देखती हैं और उनके कष्टों को दूर करने का प्रयास करती हैं।

राहुल बाबा कोरे महान बनने का नाटक न करो

महंगाई और बेरोजगारी के खिलाफ हल्ला बोल कांग्रेस रैली अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने एवं अपनी लगातार कम होती राजनीति ताकत को पाने का जरिया मात्र है। इस रैली में अपनी ताकत दिखाने की दृष्टि से तो काफी हद तक कांग्रेस सफल रही, लेकिन यह कहना कठिन है कि इस प्रदर्शन से वह अपनी राजनीतिक अहमियत बढ़ा सकेगी। यह रैली एक ओर कारण से भी आयोजित हुई है और वह है राहुल गांधी की पार्टी में आम-स्वीकार्यता का वातावरण बनाना। इस दृष्टि से रैली कितनी सफल हुई, यह वक्त ही बतायेगा। इतना तय है कि कांग्रेस पार्टी अपनी तमाम गलतियों एवं नाकामयाबियों से कोई सीख लेती हुई नहीं दिख रही है।

इस रैली के माध्यम से राहुल गांधी को एक ताकतवर नेता के रूप में प्रस्तुति देने के तमाम प्रयास किये गये। यही कारण है कि इस रैली में सबकी निगाहें इस बात पर लगी थीं कि राहुल गांधी क्या कहते हैं, क्या नया करते है, क्या अनूठा एवं विलक्षण करते हुए स्वयं को सक्षम नेतृत्व के लिये प्रस्तुत करते हैं। वे किन वक्ताओं को बोलने का अवसर देते है? राहुल गांधी ने अपने चिर-परिचित अंदाज में रैली को संबोधित किया, लेकिन उनके भाषण में ऐसी कोई नई बात नहीं थी जिसे वह पहले न कहते रहे हों। सदैव की तरह उन्होंने महंगाई और बेरोजगारी के साथ अन्य अनेक समस्याओं के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जिम्मेदार ठहराया और यह पुराना आरोप नए सिरे से दोहराया कि वह चंद उद्यमियों के लिए काम कर रहे हैं। इतना सब करते हुए यही प्रतीत हुआ कि अपने स्वार्थ हेतु, प्रतिष्ठा हेतु, आंकड़ों की ओट में राहुल-नेतृत्व झूठा श्रेय लेता रहा और भीड़ आरती उतारती रही। कांग्रेस की आज विडम्बना है कि सभी राहुल की बातें मानें और जिसकी प्रशस्ति गायें, लेकिन यह नेतृत्व की सबसे कमजोर कड़ी है, जहां सत्य को सत्य कहने का साहस न हो।

कांग्रेस एवं राहुल वास्तव में महंगाई एवं बेरोजगारी के खिलाफ आवाज बुलन्द करना ही चाहते हैं तो ठोस तथ्य प्रस्तुत करते, इन समस्याओं के निवारण का कोई रोड-मेप प्रस्तुत करते। सचाई यह है कि विगत आठ वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री ने महंगाई के कारकों पर कड़ी निगाह रखी क्योंकि महंगाई सबसे ज्यादा गरीबों को प्रभावित करती है। जब प्रधानमंत्री ने काम संभाला तो भारतीय अर्थव्यवस्था उच्च इन्फ्लेशन के दौर से गुजर रही थी। परंतु उनके मार्गदर्शन में यह इन्फ्लेशन सफलतापूर्वक छह प्रतिशत से नीचे आया। विकास का एक नया चरण शुरू करने के लिए जब 2019 में अर्थव्यवस्था सुधरने लगी तब तक दुनिया 2020 में कोविड वैश्विक महामारी की चपेट में आ गई थी। भारत को भी गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मोबिलिटी में अवरोध उत्पन्न हुए, सप्लाई चेन बाधित हुई, स्वास्थ्य प्रणाली ने भी नई चुनौतियों को देखा। वर्ष 2020 में, प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भरता के विजन पर केंद्रित, एक नए भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। यह सुनिश्चित करने पर ध्यान दिया कि सदी की इस सबसे भीषण महामारी के दौरान कोई भी परिवार भूखा न रहे। और साथ ही, उन्होंने अर्थव्यवस्था के लिए एक नया निवेश चक्र शुरू किया। क्या राहुल गांधी के पास है इन बातों का कोई जबाव।

हल्ला बोल रैली के जरिये कांग्रेस ने शक्ति प्रदर्शन अवश्य किया, लेकिन वह एकजुटता का प्रदर्शन करने में नाकाम रही। इस रैली में भूपेंद्र सिंह हुड्डा को छोड़कर उन नेताओं को कोई प्राथमिकता नहीं दी गई जो पार्टी के संचालन के तौर-तरीकों को लेकर लंबे अर्से से सवाल उठाते आ रहे हैं और इन दिनों अध्यक्ष पद के चुनाव में पारदर्शिता की मांग कर रहे हैं। इस रैली ने यह भी स्पष्ट किया कि कांग्रेस नेता राहुल को ही नेतृत्व सौंपने पर जोर दे रहे हैं। पता नहीं राहुल अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ेंगे या नहीं, लेकिन यदि वह नहीं भी लड़ते तो आसार इसी के हैं कि नेतृत्व गांधी परिवार के पसंदीदा नेता को ही मिलेगा। जब यही सब होना है तो क्यों बिन वजह की एक्सरसाइज की जा रही है। कांग्रेस को नेतृत्व की प्रारंभिक परिभाषा से परिचित होने की जरूरत है। नेतृत्व की पुरानी परिभाषा थी, ह्वसबको साथ लेकर चलना, निर्णय लेने की क्षमता, समस्या का सही समाधान, कथनी-करनी की समानता, लोगों का विश्वास,

दूरदर्शिता, कल्पनाशीलता और सृजनशीलता।ह्ल इन शब्दों को तो कांग्रेस ने किताबों में डालकर अलमारियों में रख दिया गया है।

कहना कठिन है कि राहुल की बातों से आम जनता कितना प्रभावित होगी, लेकिन इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि महंगाई और बेरोजगारी सरीखी समस्याएं सिर उठाए हुए हैं। पता नहीं सरकार इन समस्याओं पर कब तक नियंत्रण पाएगी, लेकिन आम जनता यह जान-समझ रही है कि ये वे समस्याएं हैं जिनसे देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया जूझ रही है। बेहतर होता कि प्रमुख विपक्षी दल के रूप में कांग्रेस इन समस्याओं के समाधान पर भी चर्चा करती, लेकिन वह यह काम न तो संसद में कर रही है और न ही संसद के बाहर। हम स्वर्ग को जमीन पर नहीं उतार सकते, पर बुराइयों से तो लड़ अवश्य सकते हैं, यह लोकभावना कांग्रेस में जागे। महानता की लोरियाँ गाने से किसी भी राजनीतिक दल एवं उसके नेता का भाग्य नहीं बदलता, बल्कि तन्द्रा आती है। इसे तो जगाना होगा, भैरवी गाकर। महानता को सिर्फ छूने का प्रयास जिसने किया वह स्वयं बौना हो गया और जिसने संकल्पित होकर स्वयं को ऊंचा उठाया, महानता उसके लिए स्वयं झुकी है। राहुल बाबा कोरे महान बनने का नाटक न करो, महान बनने जैसे काम भी करो।

हमें गुलाम बनाने वाले सदैव विदेशी नहीं होते। अपने ही समाज का एक वर्ग दूसरे को गुलाम बनाता है- शोषण करता है। इसी मानसिकता से मुक्ति दिलाने के लिये ही नरेन्द्र मोदी ने सुशासन और विकास केंद्रित गुजरात मॉडल में ह्यनिवेशह्ल को विकास के वाहन के रूप में सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया था। गुजरात का उनका अनुभव और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में विकास के चरणों की उनकी गहरी समझ ने देश में मैन्युफैक्चरिंग, खनन, आवास और इंफ्रास्ट्रक्चर में नए निवेश कार्यक्रमों को आकार दिया।

अर्थव्यवस्था के ये तीन क्षेत्र रोजगार के सबसे बड़े सृजक हैं। अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की ग्रोथ भी इन क्षेत्रों के विकास पर ही निर्भर है। ह्यमेक इन इंडियाह्ल जैसी पहल के सफल परिणाम अब विश्वभर में माने जा रहे हैं। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निमार्ता बन गया है। इतना ही नहीं, दस साल पहले जो इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग नगण्य था, वह आज बढ़कर लगभग 80 बिलियन अमरीकी डॉलर का हो गया। भारत का निर्यात लैंडमार्क 600 बिलियन अमरीकी डॉलर को पार कर चुका है।

कांग्रेस को चाहिए कि वह हल्ला बोल रैली जैसे आयोजनों के साथ जनता की वास्तविक समस्याओं को जोड़े, केवल राजनीति करने के लिये हल्ला बोल का सहारा न लें। जनता सब समझती है। देश हर दिन नयी-नयी उपलब्धियों एवं खुशियों से रु-ब-रु हो रहा है। जमीन से आसमान तक हर जरूरतों को देश में ही निर्मित किया जाने लगा है। यह देश के लिए बड़ी खुशखबरी है कि भारतीय नौसेना को पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत भी मिल गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में केरल तट पर विशाल पोत आईएनएस विक्रांत भारत की आन-बान-शान में शुमार हो गया। इसी के साथ आजादी के अमृत महोत्सव मनाते हुए हमने अनेक गुलामी की निशानियों को भी समाप्त कर दिया है। यह अतिरिक्त खुशी की बात है कि नौसेना का ध्वज न केवल बदल गया है, बल्कि अब उस पर शिवाजी की छाप दिखने लगी है। हालांकि, यह अफसोस की बात है कि गुलामी के दौर के अंत के इतने वर्ष बाद भी नौसेना के झंडे में अंग्रेजों का एक प्रतीक चिह्न सेंट जॉर्ज क्रॉस शामिल था। आखिर पूर्व सरकारें गुलामी के इस प्रतीक को क्यों ढोती रहीं? क्या ऐसे ही अनेक शर्मनाक प्रतीक अब भी देश पर लदे हुए हैं? नए भारत में गुलाम भारत की कोई चीज बची न रहे, यह सुनिश्चित करना चाहिए। बेशक, आईएनएस विक्रांत का पदार्पण एक आगाज होना चाहिए। भारत में सामरिक निर्माण विकास में तेजी लाने की जरूरत है। भारत जिस तरह से चुनौतियों से घिरता जा रहा है, उसमें स्वदेशी तैयारी और जरूरी हो गई है। भारतीयों को रक्षा मामले में सच्चा गौरव तब हासिल होगा, जब हम अपने अधिकतम अस्त्र-शस्त्र, सैन्य साजो-सामान, वाहन स्वयं बनाने लगेंगे। ऐसी बातों पर भी कांग्रेस का ध्यान जाना चाहिए।

अर्थव्यवस्था के ये तीन क्षेत्र रोजगार के सबसे बड़े सृजक हैं। अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की ग्रोथ भी इन क्षेत्रों के विकास पर ही निर्भर है। ह्यमेक इन इंडियाह्ल जैसी पहल के सफल परिणाम अब विश्वभर में माने जा रहे हैं। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निमार्ता बन गया है। इतना ही नहीं, दस साल पहले जो इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग नगण्य था, वह आज बढ़कर लगभग 80 बिलियन अमरीकी डॉलर का हो गया। भारत का निर्यात लैंडमार्क 600 बिलियन अमरीकी डॉलर को पार कर चुका है।कांग्रेस को चाहिए कि वह हल्ला बोल रैली जैसे आयोजनों के साथ जनता की वास्तविक समस्याओं को जोड़े, केवल राजनीति करने के लिये हल्ला बोल का सहारा न लें। जनता सब समझती है। देश हर दिन नयी-नयी उपलब्धियों एवं खुशियों से रु-ब-रु हो रहा है। जमीन से आसमान तक हर जरूरतों को देश में ही निर्मित किया जाने लगा है। यह देश के लिए बड़ी खुशखबरी है कि भारतीय नौसेना को पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत भी मिल गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में केरल तट पर विशाल पोत आईएनएस विक्रांत भारत की आन-बान-शान में शुमार हो गया। इसी के साथ आजादी के अमृत महोत्सव मनाते हुए हमने अनेक गुलामी की निशानियों को भी समाप्त कर दिया है।

भारत में त्यौहारों का मौसम देता है अर्थव्यवस्था को गति

भारतीय संस्कृति में त्यौहारों का विशेष महत्व है एवं भारतीय नागरिक इन त्यौहारों को बहुत ही श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाते है। गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली, होली, ओणम, रामनवमी, महाशिवरात्रि, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, आदि त्यौहारों को भारत में सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में गिना जाता है। कुछ त्यौहारों, जैसे दीपावली, के तो एक दो माह पूर्व ही सभी परिवारों द्वारा इसे मनाने की तैयारियां प्रारम्भ कर दी जाती हैं। उक्त त्यौहार अक्सर भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी लाते हैं क्योंकि देश के सभी नागरिक मिलकर इन त्यौहारों के शुभ अवसर पर वस्तुओं की खूब खरीदारी करते हैं जिसके कारण देश की अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। इन त्यौहारों के दौरान देश में एक से लेकर दो लाख करोड़ रुपए के बीच खुदरा व्यापार सम्पन्न होता है जो पूरे वर्ष के दौरान होने वाले खुदरा व्यापार का एक बहुत बढ़ा हिस्सा रहता है। त्यौहारों के खंडकाल में रोजगार के नए लाखों अवसर निर्मित होते हैं और नौकरियों की तो जैसे बहार ही आ जाती है। सूचना प्रौद्योगिकी से लेकर ई-कामर्स तक, खुदरा व्यापार से लेकर थोक व्यापार तक, विनिर्माण इकाईयों से लेकर सेवा क्षेत्र तक झ विशेष रूप से पर्यटन, होटेल एवं परिवहन आदि, लगभग सभी क्षेत्रों में न केवल व्यापार में अतुलनीय वृद्धि दर्ज होती है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी निर्मित होते हैं।

भारत में पिछले 5/6 माह से लगातार वस्तु एवं सेवा कर संग्रहण 140,000 करोड़ रुपए के आसपास बना हुआ है परंतु अब अक्टोबर 2022 माह में इसके 150,000 करोड़ रुपए के आंकड़े को पार कर जाने की उम्मीद की जा रही है क्योंकि दशहरा एवं दीपावली जैसे त्यौहार इस माह में आने वाले हैं। त्यौहारों के मौसम में न केवल टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, कपड़े, सोना, चांदी से निर्मित कीमती आभूषणों की खरीद बढ़ती है बल्कि दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों के साथ साथ कई नागरिक नए मकान एवं फ़्लैट खरीदना भी शुभ मानते हैं। कुल मिलाकर चारों ओर लगभग सभी क्षेत्रों में उत्साह भरा माहौल रहता है एवं सभी लोग कुछ न कुछ खरीदते ही नजर आते हैं। हालांकि इन त्यौहारों का आध्यात्मिक एवं सामाजिक महत्व तो बना ही रहता है।

भारत के बारे में यदि यह कहा जाय कि यहां एक तरह से संस्कृति की अर्थव्यवस्था ही चल पड़ी है, तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगा। वैसे भी पिछले हजारों सालों से भारत की संस्कृति सम्पन्न रही है और देश की संस्कृति जो इसका प्राण है को मूल में रखकर यदि आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाएगा तो यह देश हित का कार्य होगा। अतः भारत की जो अस्मिता, उसकी पहिचान है उसे साथ लेकर आगे बढ़ने में ही देश का भला होगा। उदाहरण के तौर पर हमारे देश में उक्त वर्णित कुछ बड़े त्योहारों को ही ले लीजिए, ये भी सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा हैं। इन्हें कैसे व्यवस्थित किया जा सकता है ताकि देश के नागरिकों में इन त्योहारों के प्रति उत्साह में और भी बढ़ोतरी हो और इन त्योहारों को मनाने का पैमाना बढ़ाया जा सके और इन त्योहारों पर विदेशी पर्यटकों को भी देश में आकर्षित किया जा सके, इसके बारे में आज विचार किए जाने की आवश्यकता है। भारत की जो सांस्कृतिक विविधता एवं सम्पन्नता है उसको सबसे आगे लाकर हम भारत को एक सांस्कृतिक महाशक्ति के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। यह हमारा उद्देश्य एवं आकांक्षा होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में मुख्य रूप से शामिल हैं झ खाद्य संस्कृति, संगीत, नृत्य, फाइन-आर्ट्स, सिनेमा, सांस्कृतिक पर्यटन (जिसमें हेरिटेज, साइट्स, म्यूजीयम, आदि शामिल है) एवं धार्मिक पर्यटन, आदि। इन सभी पहलुओं को विभिन्न त्यौहारों के

दौरान भारत में प्रोत्साहित किये जाने की आज महती आवश्यकता है।

भारत में खाद्य संस्कृति का नाम यहां उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है जो अपने आप में एक बहुत विस्तृत क्षेत्र है। हर देश की अपनी-अपनी खाद्य संस्कृति होती है। भारत तो इस मामले में पूरे विश्व में सबसे धनी देश है। हमारे यहां पुरातन काल से देश के हर भाग की, हर प्रदेश की, हर गांव की, हर जाति की अपनी-अपनी खाद्य संस्कृति है, इसको हम पूरे विश्व में प्रोत्साहित कर सकते हैं। त्यौहारों के दौरान तो भारत में खाद्य संस्कृति अपने पूरे उफान पर रहती है, और इसे भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के साथ त्यौहारों के दौरान प्रोत्साहित किया जा सकता है।

किसी समाज का यदि अपनी संस्कृति के प्रति रुझान नहीं है तो उस समाज की संस्कृति का स्तर नीचे गिरता जाता है। यही स्थिति देश की संस्कृति पर भी लागू होती है। जैसे भारत में एक समय पर नृत्य कला इतनी सम्पन्न थी कि लगभग सभी राजे-रजवाड़े एवं सभी समारोहों, धार्मिक समारोह मिलाकर, में नृत्य के बिना कार्य प्रारम्भ एवं सम्पन्न नहीं होता था। परंतु, आज यह कला हम लगभग भूल गए हैं। संगीत, नृत्य, काव्य, साहित्य, मिलकर देश की विभिन्न कलाओं को मूर्त रूप देता है। संस्कृति के अमूर्त रूप को जब तक मूर्त रूप नहीं दिया जाता तब तक आर्थिक पक्ष इसके साथ नहीं जुड़ पाएगा। कला के क्षेत्र में भारत में बहुत ही सूक्ष्म ज्ञान उपलब्ध है। परंतु, इस प्रकार के ज्ञान को मूर्त रूप देने की जरूरत है। आज नृत्य करने वालों की देश में कोई पूछ नहीं हैं। इस प्रकार तो हम हमारी अपनी कला को भूलते जा रहे है। देश में बुनकर आगे नहीं बढ़ पा रहे है। इनकी कला को जीवित रखने के लिए जुलाहों को आगे बढ़ाने की जरूरत है। इस प्रकार की कला को आगे बढ़ाने के लिए न केवल देश की विभिन्न स्तर की सरकारों को बल्कि निगमित सामाजिक जवाबदारी के अंतर्गत विभिन्न कम्पनियों को तथा समाज को भी आगे आने की आवश्यकता है।

विश्व के कई देश अपनी संस्कृति की अर्थव्यवस्था का आंकलन कर चुके हैं और लगातार इस ओर अपना पूरा ध्यान दे रहे हैं। दुनिया भर में अलग-अलग देशों में इस उद्योग को आंकने के पैमाने उपलब्ध हैं। भारत में अभी इस क्षेत्र में ज्यादा काम नहीं हुआ है क्योंकि हमारी विरासत बहुत बड़ी है एवं बहुत बड़े क्षेत्र में फैली हुई है। दुनिया भर में इसे सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग का नाम दिया गया है।

यूनेस्को भी सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग को वैज्ञानिक तरीके से आंकने का प्रयास कर रहा है और यूनेस्को के एक आंकलन के अनुसार, विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में 4 प्रतिशत हिस्सा सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग से आता है। अमेरिका जैसे देशों की जीडीपी में तो सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग का योगदान बहुत अधिक है। एक आंकलन के अनुसार, दुनिया भर में सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग एशिया पेसिफिक, उत्तरी अमेरिका, यूरोप एवं भारत में विकसित अवस्था में पाया गया है। इस उद्योग में विश्व की एक प्रतिशत आबादी को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। भारत में चूंकि इसके आर्थिक पहलू का मूल्यांकन नहीं किया जा सका है अतः देश में इस उद्योग में उपलब्ध रोजगार एवं देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान सम्बंधी

विश्व के कई देश अपनी संस्कृति की अर्थव्यवस्था का आंकलन कर चुके हैं और लगातार इस ओर अपना पूरा ध्यान दे रहे हैं। दुनिया भर में अलग-अलग देशों में इस उद्योग को आंकने के पैमाने उपलब्ध हैं। भारत में अभी इस क्षेत्र में ज्यादा काम नहीं हुआ है क्योंकि हमारी विरासत बहुत बड़ी है एवं बहुत बड़े क्षेत्र में फैली हुई है। दुनिया भर में इसे सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग का नाम दिया गया है। यूनेस्को भी सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग को वैज्ञानिक तरीके से आंकने का प्रयास कर रहा है और यूनेस्को के एक आंकलन के अनुसार, विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में 4 प्रतिशत हिस्सा सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग से आता है। अमेरिका जैसे देशों की जीडीपी में तो सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग का योगदान बहुत अधिक है। एक आंकलन के अनुसार, दुनिया भर में सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग एशिया पेसिफिक, उत्तरी अमेरिका, यूरोप एवं भारत में विकसित अवस्था में पाया गया है।

पुख़्ता आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। हर देश की अपनी विशेष संस्कृति है और हर देश को इसे मूर्त रूप देने एवं इसे आगे बढ़ाने के लिए अलग अलग रणनीति की आवश्यकता होती है।

विकसित देशों ने अपनी संस्कृति की अर्थव्यवस्था को मूर्त रूप देने में बहुत सफलता पाई है, इसमें वैल्यू एडिशन कर इसे बहुत ही अच्छे तरीके से प्रोत्साहित किया है, इसीलिए अमेरिका एवं ब्राजील जैसे देशों के सकल घरेलू उत्पाद में सांस्कृतिक एवं रचनात्मक उद्योग का बहुत अच्छा योगदान है। भारत में अभी तक संस्कृति की अर्थव्यवस्था पर ज्यादा ध्यान ही नहीं दिया गया है। हमें, हमारे देश में विभिन कलाओं का ज्ञान अमूर्त रूप में तो उपलब्ध है परंतु उसे विकसित कर मूर्त रूप प्रदान करने की जरूरत है एवं इन भारतीय कलाओं से पूरे विश्व को अवगत कराये जाने आवश्यकता है, ताकि विश्व का भारत के प्रति आकर्षण बढ़े। आज के इस डिजिटल युग में तो यह बहुत ही आसानी से किया जा सकता है। कला के अमूर्त रूप को यदि हम डिजिटल स्पेस में ले जाकर स्थापित कर सकें तो इसे विश्व में मूर्त रूप दिया जा सकता है। इस महान कार्य में देश में लगातार प्रगति कर रहे स्टार्ट-अप उद्योग की भी मदद ली जा सकती है। साथ ही, भारतीय संस्कृति के उपरोक्त वर्णित विभिन्न पहलुओं को देश में मनाए जा रहे त्यौहारों के दौरान प्रोत्साहित किए जाने की विशेष जरूरत हैं क्योंकि इस दौरान देश के नागरिकों में जबरदस्त उत्साह पाया जाता है।

भागवत के विजय-उद्बोधन में नये भारत के सुखद संकेत

विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत के वार्षिक विजय-उद्बोधन का न केवल राष्ट्रीय बल्कि सामाजिक एवं राजनीतिक महत्व है। सर संघचालक ने अपने विजय-उद्बोधन में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों का उल्लेख करते हुए संघ सोच को एक बार फिर से स्पष्ट किया है। उन्होंने देश में साम्प्रदायिक सद्भाव पर अपना विस्तृत दृष्टिकोण पेश करते हुए न केवल हिन्दू शब्द का विरोध करने वालों पर करारा प्रहार किया है, बल्कि देश में अराजकता का माहौल पैदा करने वाले मुस्लिम संगठनों पर भी सीधी चोट की है। उन्होंने देश के समग्र एवं त्वरित विकास के लिये जनसंख्या नियंत्रण की नीति पर जोर दिया है। यह विजय-उद्बोधन देकर उन्होंने जहां देश की जनता को जगाया वहीं राजनीतिक दलों की नींद उड़ा दी। सरकार को कुछ जरूरी कार्यों का दिशा-निर्देश भी दिया गया। संघ की नजरों में धर्मांतरण और घुसपैठ से जनसंख्या का संतुलन बिगड़ा है और देश का विकास बाधित हुआ है, भागवत इन समस्याओं से निपटने और उनके खिलाफ जनमत का निर्माण करने के लिए संकल्प ले चुके हैं। उन्होंने देश के सामने कुछ ऐसी बड़ी चुनौतियों को रेखांकित किया, जिसे लेकर राजनीतिक दलों एवं साम्प्रदायिक संगठनों की भृकुटि कुछ तन गई है।

भागवत का विजय-उद्बोधन एक छोटी-सी किरण है, जो सूर्य का प्रकाश भी दे रही है और चन्द्रमा की ठण्डक भी। और सबसे बड़ी बात, भागवत जो हो रहा है और जो होना है उसकी स्पष्ट दृष्टि से तटस्थ विश्लेषण करते हुए सरकार की रक्षा, आर्थिक नीतियों से काफी संतुष्ट दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया का भरोसा बढ़ा है। भारत की ताकत बढ़ी है। दुनिया में भारत की आवाज सुनी जा रही है। दुनिया में भारत की प्रतिष्ठा और साख बढ़ी है और आत्मनिर्भर भारत की आहट सुनाई दे रही है। उन्होंने बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए स्कूलों, कालेजों पर निर्भरता की बजाए घरों और समाज के वातावरण को स्वस्थ बनाने का संदेश दिया। निश्चित ही विजय-उद्बोधन कोई स्वप्न नहीं, जो कभी पूरा नहीं होता। यह तो भारत को सशक्त एवं विकसित बनाने के लिए ताजी हवा की खिड़की है।

अनेक विशेषताओं वाले इस वर्ष के विजय-उद्बोधन में संघ प्रमुख ने देश के मुस्लिम समुदाय को अराजकता फैलाने वाले तत्वों से सतर्क रहने की नसीहत भी दी। संघ और मुस्लिम समाज में संवाद की आज सकारात्मक कोशिशें हो रही हैं। संघ इस संवाद को कायम रखेगा क्योंकि समाज को तोड़ने के लिए बहुत सी कोशिशें हो रही हैं। संघ को इस बात के लिए बार-बार निशाना बनाया जाता रहा है कि वह मुस्लिम समाज को नजरंदाज करता है। लेकिन ऐसा नहीं है। देश में कई जगह हुई जघन्य घटनाओं का जिक्र करते हुए भागवत ने मुस्लिम समुदाय से यह आग्रह किया कि वे अन्याय, असत्य, अत्याचार के खिलाफ खड़े हों। हम सबको मिलकर संविधान का पालन करना चाहिए और ऐसी क्रूरतम घटनाओं का विरोध मुखरता से किया जाना चाहिए। इसके लिये जरूरी है कि संघ को संकीर्ण नजरिये से देखने की बजाय व्यापक देशहित में देखा जाना चाहिए। जरूरी यह भी है कि जब भी कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन ह्यपॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडियाह्न जैसे अराष्ट्रीय संगठनों के खिलाफ कोई कदम उठाया जायें तो उसे सकारात्मक लेने की जरूरी है। जब मोहन भागवत किसी मस्जिद में जा सकते हैं और उन्हें इमामों के एक संगठन के प्रमुख द्वारा ह्यराष्ट्रपिताह्न संबोधन दिया जाये तो संघ को मुस्लिम विरोधी कैसे कहा जा सकता है?

संघ की राष्ट्रवादी विचारधारा से अनेक मुस्लिम संगठन एवं लोग सहमत है। संघ की राष्ट्रभक्ति पर तनिक भी संदेह नहीं किया जा सकता। प्राकृतिक आपदाएं हों या युद्ध काल संघ का एक-एक स्वयंसेवक राष्ट्र के लिए हमेशा तैयार रहा। इसी शिक्षा, सेवा, जन-कल्याणा के लिये भी संघ गतिशील है। यही कारण है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से लेकर पंडित जवाहर लाल नेहरू को संघ की सराहना करनी पड़ी थी। संघ को बेवजह बदनाम करने की साजिशें होती रही हैं। संघ पर पूर्व की सरकारों ने कई बार प्रतिबंध लगाए लेकिन यह प्रतिबंध ज्यादा दिन ठहर नहीं पाए। संघ प्रमुख ने आज के संबोधन में भी संघ को बदनाम करने की कुचेष्टाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि संघ तो विश्व में सब जगह और सबके साथ भाईचारा और शांति का पक्षधर है।

संघ को इस बात के लिए बार-बार निशाना बनाया जाता रहा है कि वह महिलाओं की भूमिका को नजरंदाज करता है और उन्हें उचित सम्मान नहीं देता, लेकिन इस बार संघ के विजयदशमी कार्यक्रम में माउंट एवरेस्ट विजेता पर्वतारोही श्रीमती संतोष यादव बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुईं। उन्हें मुख्य अतिथि बनाकर संघ ने आलोचकों को जवाब दे दिया है। संघ प्रमुख ने कहा कि संघ के कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी डा. हेडगेवार के वक्त से ही हो रही है।

अनुसूईया काले से लेकर इंडियन वीमन्स कॉन्फ्रेंस की मुखिया राजकुमारी अमृत कौर, कुमुदताई रांगेनकर आदि कई महिलाओं ने संघ के कार्यक्रमों में भागीदारी की है। उल्लेखनीय है कि संघ की महिला विंग महिलाओं के सशक्तिकरण, उनकी शिक्षा के लिए

लगातार काम कर रही है। भले ही संघ की शाखाओं में महिलाओं को शामिल नहीं किया जाता है, लेकिन महिलाओं से संघ को परहेज भी नही है। निश्चित ही इन स्थितियों एवं संदेशों से भारतीय जन-मानस में संघ की राष्ट्रीयता सम्भलती रही, सजती रही और कसौटी पर आती रही तथा बचती रही। एक बार फिर भागवत ने राजनीति से परे जाकर देश को जोड़ने, सशक्त बनाने एवं नया भारत निर्मित करने का सन्देश दिया है और इस सन्देश को जिस तरह आकार दिया जाना है, उसका दिशा-निर्देश भी दिया गया है।

संघ प्रमुख भागवत एक सक्रिय, साहसी, चिन्तनशील, राष्ट्रयोद्धा, समाजसुधारक और बदलाव लाने वाले संघ प्रमुख हैं। वे देशहित में अच्छी रचनात्मक एवं सृजनात्मक बातें करते हैं, बदलाव चाहते हैं, राष्ट्र को तोड़ना नहीं जोड़ना चाहते हैं, अच्छी बात यह भी है कि संघ एक जागरूक संगठन है और हर समस्या पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। हर व्यक्ति के दिमाग में एक समस्या है और हर व्यक्ति के दिमाग में एक समाधान है। एक समस्या को सब अपनी समस्या समझे और एक का समाधान सबके काम आए। समाधान के अभाव में बढ़ती हुई समस्या संक्रामक बीमारी का रूप न ले सके, इस दृष्टि से आज का समाधान आज प्रस्तुत करने के लिए आरएसएस निरन्तर जागरूक रहता है। इसीलिये मोहन भागवत ने अपने भाषण में समान जनसंख्याा नीति बनाने पर जोर दिया है। संघ प्रमुख के भाषण को इस मसले पर बारीकी से समझने की जरूरत है। भले ही केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में जनसंख्या नियंत्रण पर कानून लाने को लेकर अपनी अनिश्चितता जताई हो लेकिन संघ प्रमुख इस दिशा में तुरन्त कदम उठाने के पक्षधर दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि जनसंख्या कम होने से देश में बुजुर्गों की संख्या बढ़ती जाएगी जबकि जनसंख्या को एक सम्पत्ति माना जाता है। दूसरी तरफ जनसंख्या को संसाधनों की आवश्यकता होती है। यदि जनसंख्या बिना संसाधनों का निर्माण किए बढ़ती है तो यह एक बोझ बन जाती है। कहते हैं कि जनसंख्या में असमानता भौगोलिक सीमाओं में बदलाव लाती है। यही देश विकास का बाधक तत्व है, इसी से गरीबी कायम है। लेकिन बावजूद इसके ऐसे ज्वलंत विषयों पर भी राजनीति की जाती है, संकीर्णता दशार्यी जाती है।

हर बार की तरह इस बार भी मोहन भागवत के उद्बोधन पर अनेक शंकाएं, जिज्ञासाएं और कल्पनाएं अपना रंग दिखा रही हैं। किसी भी नई प्रवृत्ति या नई दिशा को लेकर ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है। कुछ लोगों की दृष्टि में संघ का कोई उपयोग नहीं है तो कुछ लोगों को उसमें अनेक नई संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। कुछ लोग उसे असफल बनाने का सपना देख रहे हैं और कुछ व्यक्ति उसकी सफलता के लिए पूरे मन से जुटे हुए हैं। इन स्थितियों के बीच संघ प्रमुख ने सामाजिक समता की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि मंदिर, पानी, श्मशान सबके लिए एक हो, इसकी व्यवस्था सुनिश्चित करनी ही होगी। सबको एक-दूसरे का सम्मान करना होगा। किसी भी समाज में बिखराव की स्थिति होती है तो उसकी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं हो सकता। उपयोग के लिए क्षमताओं को केन्द्रित करना जरूरी है। समाज का हर व्यक्ति अपने आप में एक शक्ति है। इस शक्ति को काम में लेने से पहले उसे एकात्ममुख करना जरूरी है।

संघ को इस बात के लिए बार-बार निशाना बनाया जाता रहा है कि वह महिलाओं की भूमिका को नजरंदाज करता है और उन्हें उचित सम्मान नहीं देता, लेकिन इस बार संघ के विजयदशमी कार्यक्रम में माउंट एवरेस्ट विजेता पर्वतारोही श्रीमती संतोष यादव बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुईं। उन्हें मुख्य अतिथि बनाकर संघ ने आलोचकों को जवाब दे दिया है। संघ प्रमुख ने कहा कि संघ के कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी डा. हेडगेवार के वक्त से ही हो रही है। अनुसूईया काले से लेकर इंडियन वीमन्स कॉन्फ्रेंस की मुखिया राजकुमारी अमृत कौर, कुमुदताई रांगेनकर आदि कई महिलाओं ने संघ के कार्यक्रमों में भागीदारी की है। उल्लेखनीय है कि संघ की महिला विंग महिलाओं के सशक्तिकरण, उनकी शिक्षा के लिए लगातार काम कर रही है। भले ही संघ की शाखाओं में महिलाओं को शामिल नहीं किया जाता है, लेकिन महिलाओं से संघ को परहेज भी नही है। निश्चित ही इन स्थितियों एवं संदेशों से भारतीय जन-मानस में संघ की राष्ट्रीयता सम्भलती रही, सजती रही और कसौटी पर आती रही तथा बचती रही। एक बार फिर भागवत ने राजनीति से परे जाकर देश को जोड़ने, सशक्त बनाने एवं नया भारत निर्मित करने का सन्देश दिया है और इस सन्देश को जिस तरह आकार दिया जाना है, उसका दिशा-निर्देश भी दिया गया है।

भागवत के आह्वान का हार्द व्यवस्था को सशक्त बनाते हुए राष्ट्र को नयी शक्ल देने का है। वास्तव में यदि हम भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के अपने सपने को साकार करना चाहते हैं तो हमें अपनी सोच और अपने तौर-तरीके बदलने होंगे। जब संघ-प्रमुख देश को बदलने और आगे ले जाने के लिए संकल्प व्यक्त कर रहे हैं तो फिर देश की जनता का भी यह दायित्व बनता है कि वह अपने हिस्से के संकल्प ले।

बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने की जरूरत

दुनिया में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा एक विशेष संस्कृति, माधुर्य, रंग का प्रतिनिधित्व करती है और एक संपत्ति है। कई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रयोगों ने साबित किया कि मातृभाषा के माध्यम से सीखना गहरा, तेज और अधिक प्रभावी है। एक बच्चे का भविष्य का अधिकांश सामाजिक और बौद्धिक विकास मातृभाषा के मील के पत्थर पर टिका होता है। अपूर्ण प्रथम भाषा कौशल अक्सर अन्य भाषाओं को सीखना अधिक कठिन बना देते हैं। यह तभी होगा जब वे युवा प्रेमपूर्ण भाषा के रूप में बड़े होंगे, उन्हें खतरा महसूस नहीं होगा और इससे उन्हें आंका जाएगा। हमें उनकी जरूरत है कविता और गीत और उपन्यास लिखने के लिए। हमें चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा पर गर्व महसूस करें, न कि क्षमाप्रार्थी और लज्जित हों, न की सफलता इस बात पर आधारित है कि वे कितनी अंग्रेजी जानते हैं।

भाषा जनगणना के अनुसार भारत में 19,500 भाषाएँ या बोलियाँ हैं, जिनमें से 121 भाषाएँ हमारे देश में 10,000 या उससे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं। 2020 में जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में क्षेत्रीय भाषा या मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की पुरजोर वकालत की गई है। व्यक्ति के निर्माण में मातृभाषा का बहुत शक्तिशाली प्रभाव होता है। एक बच्चे की अपने आस-पास की दुनिया की पहली समझ, अवधारणाओं और कौशलों की शिक्षा और अस्तित्व की उसकी धारणा, उसकी मातृभाषा से शुरू होती है जो उसे सबसे पहले सिखाई जाती है। जब कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा बोलता है, तो हृदय, मस्तिष्क और जीभ के बीच सीधा संबंध स्थापित हो जाता है।

जैसे-जैसे अधिक से अधिक भाषाएं लुप्त होती जा रही हैं, भाषाई विविधता पर खतरा बढ़ता जा रहा है। विश्व स्तर पर लगभग 40 प्रतिशत आबादी के पास उस भाषा में शिक्षा तक पहुंच नहीं है जो वे बोलते या समझते हैं। हालाँकि, स्कूल और उच्च शिक्षा में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषाओं का उपयोग स्वतंत्रता-पूर्व के समय से ही किया जाता रहा है, दुर्भाग्य से, अंग्रेजी में अध्ययन करने के इच्छुक लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसने अंग्रेजी भाषा द्वारा शासित एकभाषी शिक्षण संस्थानों का दबदबा बढ़ा दिया है और एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहा है जो संवेदनशील, न्यायसंगत और न्यायसंगत नहीं है। अन्य सभी मातृभाषाओं पर अंग्रेजी के प्रभुत्व की प्रकृति छात्रों की शक्ति, स्थिति और पहचान से जुड़ी है। विभिन्न मातृभाषाएं बोलने वाले छात्र एक शैक्षिक संस्थान में अध्ययन करने के लिए एक साथ आते हैं जहां वे स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों स्तरों पर बिना किसी कठिनाई के एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। फिर भी उन्हें एक विदेशी भाषा के माध्यम से एक भाषा में पढ़ाया जा रहा है जिससे सभी छात्र संबद्ध नहीं हो पाते हैं। पूरी प्रक्रिया ने मातृभाषाओं की अज्ञानता और छात्रों में अलगाव की भावना को जन्म दिया है।

भारत की प्राथमिक शिक्षा रटकर सीखने, खराब प्रशिक्षित शिक्षकों और धन की कमी के लिए कुख्यात है (भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का केवल 2.6% शिक्षा पर खर्च करता है; चीन 4.1 खर्च करता है और ब्राजील 5.7 पर भारत के दोगुने से अधिक है)। शिक्षा की भाषा के रूप में अंग्रेजी इसे बदतर बना देती है झ्र विकास की दृष्टि से, यह एक आपदा है। बच्चे के दृष्टिकोण से स्कूल पर विचार करें। ज्यादातर बच्चे छोटे होते हैं जब वे घर से निकलते हैं। अपने जीवन में पहली बार, उन्हें कई घंटों के लिए एक अजीब वातावरण में बड़ी संख्या में अन्य बच्चों के साथ सामना करना पड़ता है जिन्हें वे नहीं जानते हैं। उन्हें शांत बैठना चाहिए, चुप रहना चाहिए और केवल आदेश पर ही बोलना चाहिए। शिक्षक, जो एक अजनबी भी है, उम्मीद करता है कि बच्चे पूरी तरह से नई अवधारणाओं में महारत हासिल करेंगे: पढ़ना और लिखना; जोड़ना और घटाना; प्रकाश संश्लेषण; एक शहर और राज्य और देश के बीच का अंतर।

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशन, प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार, भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या में 2003 और

2011 के बीच आश्चर्यजनक रूप से 273% की वृद्धि हुई है। उनके माता-पिता सोचते हैं कि वे ठीक-ठीक जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और क्यों? उनका मानना है कि अंग्रेजी का ज्ञान नौकरी की सुरक्षा और ऊर्ध्वगामी गतिशीलता की कुंजी है, और वे आश्वस्त हैं कि उनके बच्चों के अवसरों में उनकी अंग्रेजी शब्दावली के सीधे अनुपात में वृद्धि होगी। वे सही हैं, लेकिन उन्हें यह समझने की जरूरत है कि अंग्रेजी जानने से अच्छी नौकरी पाने में बहुत मदद मिलती है, लेकिन केवल तभी जब अंग्रेजी अर्थपूर्ण हो, अन्य सभी चीजों में समझ और बुनियादी ज्ञान के साथ बच्चे सीखने के लिए स्कूल जाते हैं। अधिकांश भारतीय स्कूलों में इस्तेमाल की जाने वाली अंग्रेजी किसी भी चीज को वास्तविक रूप से सीखने की अनुमति नहीं देती है।

भारत की प्राथमिक शिक्षा रटकर सीखने, खराब प्रशिक्षित शिक्षकों और धन की कमी के लिए कुख्यात है (भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का केवल 2.6% शिक्षा पर खर्च करता है; चीन 4.1 खर्च करता है और ब्राजील 5.7 पर भारत के दोगुने से अधिक है)। शिक्षा की भाषा के रूप में अंग्रेजी इसे बदतर बना देती है झ विकास की दृष्टि से, यह एक आपदा है। बच्चे के दृष्टिकोण से स्कूल पर विचार करें। ज्यादातर बच्चे छोटे होते हैं जब वे घर से निकलते हैं। अपने जीवन में पहली बार, उन्हें कई घंटों के लिए एक अजीब वातावरण में बड़ी संख्या में अन्य बच्चों के साथ सामना करना पड़ता है जिन्हें वे नहीं जानते हैं। उन्हें शांत बैठना चाहिए, चुप रहना चाहिए और केवल आदेश पर ही बोलना चाहिए। शिक्षक, जो एक अजनबी भी है, उम्मीद करता है कि बच्चे पूरी तरह से नई अवधारणाओं में महारत हासिल करेंगे: पढ़ना और लिखना; जोड़ना और घटाना; प्रकाश संश्लेषण; एक शहर और राज्य और देश के बीच का अंतर। अन्य देश अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं करते झ चीन, फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड या स्पेन आदि।

शिक्षा की भाषा बस एक वाहन, व्याकरण और शब्दों का एक सहज प्रवाह होना चाहिए, जिसे हर कोई अर्थ और परिभाषा के लिए पहेली किए बिना समझ सके। देश को अपनी अगली पीढ़ी के नेताओं की जरूरत है ताकि वे अपने क्षेत्र में पूरी तरह से महारत हासिल कर सकें ताकि वे दवा का अभ्यास कर सकें, पुल बना सकें, प्लंबिंग लगा सकें और सोलर लाइटिंग सिस्टम डिजाइन कर सकें। और बच्चे दूसरी, तीसरी और चौथी भाषाएँ सभी अच्छे समय में सीख सकते हैं। लेकिन यह तभी होगा जब वे युवा प्रेमपूर्ण भाषा के रूप में बड़े होंगे, उन्हें खतरा महसूस नहीं होगा और इससे उन्हें आंका जाएगा। हमें उनकी जरूरत है कविता और गीत और उपन्यास लिखने के लिए। हमें चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा पर गर्व महसूस करें, न कि क्षमाप्रार्थी और लज्जित हों जैसे कि उनकी सफलता इस बात पर आधारित है कि वे कितनी अंग्रेजी जानते हैं। बुनियादी स्तर पर, शिक्षार्थियों द्वारा साक्षरता और संख्यात्मकता की समझ सुनिश्चित करना वाणिज्य की भाषा पर जोर देने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1953 में ह्लशिक्षा में स्थानीय भाषाओं का उपयोगह्व शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में, दो पहलू सामने आए। एक, इसकी पुनरावृत्ति कि स्कूल की उम्र के हर बच्चे को स्कूल जाना चाहिए और शिक्षण का सबसे अच्छा माध्यम छात्र की मातृभाषा है। और दूसरा, इसका जोर इस बात पर है कि ह्लसभी भाषाएं, यहां तक कि तथाकथित आदिम भाषाएं, स्कूली शिक्षा के लिए माध्यम बनने में सक्षम हैं; कुछ केवल दूसरी भाषा के लिए एक सेतु के रूप में, जबकि अन्य शिक्षा के सभी स्तरों पर। प्रारंभिक वर्षों में स्कूलों में मातृभाषा का उपयोग पहुंच और ड्रॉप-आउट को रोकने के लिए आधारशिला है। भारत में 121 मातृभाषाएँ हैं, जिनमें से 22 भाषाएँ हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हैं, और 96.72% भारतीयों की मातृभाषा है। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में शिक्षा के दो माध्यमों तक (उदाहरण के लिए, असमिया, बंगाली, बोडो, हिंदी, अंग्रेजी, मणिपुरी और गारो) शिक्षा के दो माध्यम हैं, जिनमें से एक राज्य की मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा है और दूसरी अंग्रेजी/हिंदी। स्कूलों में शिक्षा के पहले माध्यम के रूप में 25 से अधिक भाषाएं प्रचलित हैं। प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में प्राप्त करने वाले 95% छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में पीछे नहीं रहना चाहिए। इसलिए तकनीकी शिक्षा को मातृभाषा में भी सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

दुनिया में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा एक विशेष संस्कृति, माधुर्य, रंग का प्रतिनिधित्व करती है और एक संपत्ति है। कई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रयोगों ने साबित किया कि मातृभाषा के माध्यम से सीखना गहरा, तेज और अधिक प्रभावी है। एक बच्चे का भविष्य का अधिकांश सामाजिक और बौद्धिक विकास मातृभाषा के मील के पत्थर पर टिका होता है। अपूर्ण प्रथम भाषा कौशल अक्सर अन्य भाषाओं को सीखना अधिक कठिन बना देते हैं।

अब यह साबित करने के लिए पर्याप्त शोध और सबूत हैं कि यदि बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, विशेष रूप से मूलभूत वर्षों (उम्र 3 से 8) में, तो उच्च दक्षता और बेहतर परीक्षण स्कोर देखे जाते हैं। उपलब्ध संसाधनों को देखते हुए, द्विभाषी पाठ्य पुस्तकों और ई-सामग्री आदि की सहायता से द्विभाषी शिक्षण हमारे शिक्षार्थियों के भविष्य और उनकी क्षमताओं को सुरक्षित करने के लिए एक अच्छी शुरूआत हो सकती है।

क्रिएटिव लिबर्टी के बहाने आस्था पर निाने

बुद्धिजीवियों और बॉलीवुड को इस बात पर मंथन करना चाहिए। भगवान श्री राम और रामायण से हमारी आस्था जुडी हुई इसलिए उनसे जुडी हुई किसी भी चीज का लोकतान्त्रिक तरीके से विरोध करना हमारा संवैधानिक अधिकार है। सबसे बड़ा सवाल है की अगर आने वाली पीढ़ी रामायण को इस तरह देखेंगी तो वो उसके महत्त्व को कैसे समझेंगी। ये सिर्फ एक मनोरंजन का साधन मात्र बन कर रह जाएगी। आस्था में जमाने के बदलाव का तर्क देना बेवकूफी है। आस्था कभी नहीं बदलती। इसलिए क्रिएटिव लिबर्टी के नाम पर अभिव्यक्ति की आजादी का ढोल पीटना बंद कीजिये। रामायण और महाभारत हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत हैं। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण हमारे परम पूज्य ईश्वर हैं और इनसे जुड़े हुए दूसरे पात्र भी हमारे लिए अनुकरणीय और पूज्य हैं। इनसे सम्बंधित कोई भी बदलाव हमें स्वीकार नहीं है। हमें अपने अतीत के पात्रों और उनके द्वारा स्थापित मूल्यों पर अथाह गर्व है।

आदिपुरुष अल्टीमेटम ने आदिपुरुष मूवी के टीजर के रिलीज होने के बाद पूरे भारत में विवाद और बहस छेड़ दी है। कई बार ऐसा लगता है कि हिंदू देवी-देवताओं का उपहास उड़ाना, सनातन धर्म का मजाक बनाना और देवी-देवताओं को गलत तरीके से चित्रित करना नए ट्रेंड का हिस्सा बन गया है। ऐसा करने वालों को लगता है कि ये सब करने से वह काफी कूल लग रहे हैं। कई बार बोलने की आजादी के नाम पर, तो कभी धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर या फिर कला की आजादी के नाम पर, अक्सर हिंदू देवी-देवताओं का मजाक उड़ाया जाता है। आखिर सस्ती पब्लिसिटी के लिए कब तक हिंदू धर्म और देवी देवताओं का अपमान होगा? एक सवाल और उठता है कि आखिर लोगों में इतनी हिम्मत आती कहां से है? अब यूं ही मेरे मन में एक सवाल आया कि किसी और धर्म के देवता या गुरु होते तो क्या इसी तरह से उनका भी मजाक उड़ाया जा सकता था? यह हिंदू देवी-

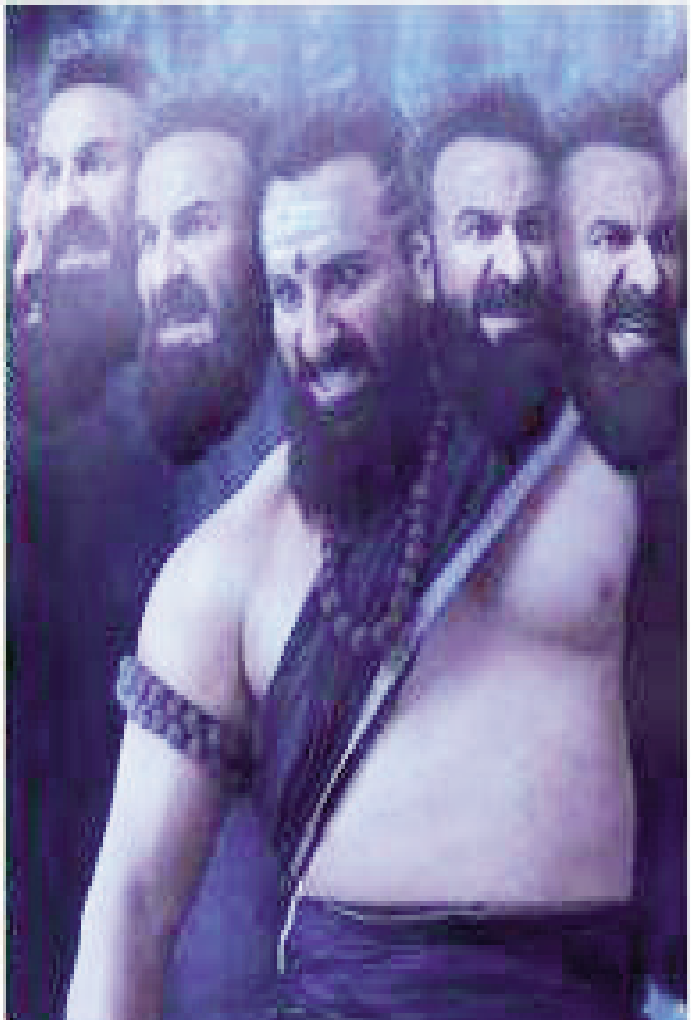

देवताओं की खिल्ली उड़ाने का पहला मामला नहीं है। रोज सोशल मीडिया, टीवी और अन्य मंचों पर हिंदू धर्म के देवी-देवताओं का जो मजाक उड़ रहा है, उस पर हमने चुप्पी ओढ़ रखी है। ऐसा नहीं है कि हम लोगों को बुरा नहीं लगता है। लगता है। बस हम सोचते हैं कि इसका विरोध कोई और कर देगा। सोचने की बात है कि किसी भी धर्म का मखौल उड़ाने वाले व्यक्ति की भावना क्या होती है? सच तो ये है कि हिंदू धर्म में ही ऐसे कई लोग हैं, जो आपको खुद टारगेट करते हैं। क्या फैक्ट्स पर क्रिएटिविटी की जीत होगी? हमें भ्रमित पारिस्थितिकी तंत्र के यू.एस. रूप की ओर धकेल रहा है जहां सही को गलत से और अच्छे को बुरे से अलग करना मुश्किल है। उत्तर बहुत सरल है; रचनात्मकता एक ऐसे क्षेत्र में शामिल हो सकती है जो धर्म के पहलुओं और सिद्धांतों को बदलने की कोशिश नहीं करता है। रचनात्मकता का उपयोग दोनों तरह से किया जा सकता है झ नुकसान पहुँचाने के लिए या अच्छा करने के लिए। रचनात्मक कार्य जो समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, हतोत्साहित करते हैं और उन्हें खुले तौर पर खारिज कर दिया जाना चाहिए और इसमें शामिल हैंः फिल्मों में अत्यधिक भ्रष्टता जो काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं से संबंधित नहीं हैं, महिलाओं को ह्लवस्तुओंह्व के रूप में चित्रित करना, शराब को बढ़ावा देना और व्यभिचार आदि। मुख्य मुद्दा यह है कि आज हम रचनात्मक कलाकारों की ह्लजिम्मेदारियोंह्व के बीच अंतर नहीं कर पा रहे हैं और यदि इन जिम्मेदारियों का उल्लंघन करते हैं तो उन्हें दंडित किया जा सकता है। लेकिन यह कानूनी प्रक्रिया के अनुसार ही किया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक राज्य अपने नागरिकों की किसी भी बौद्धिक संपदा पर प्रतिबंध या प्रतिबंध की खुले तौर पर वकालत नहीं कर सकता है। चुनौती सभी कलाकारों और लेखकों के अधिकारों की रक्षा करने की है, जबकि समान रूप से उन्हें समाज को प्रभावित करने की कोशिश के लिए दंडित करने के लिए कानून है। यह बहुत सीधा है और यहां हम एक ऐसे मुद्दे पर लगातार बहस कर रहे हैं जिसे सामान्य ज्ञान से निपटा जा सकता है।

तथाकथित बॉलीवुड सभी को निशाना बना रहा है। अभिव्यक्ति की आजादी तभी तक है जब तक किसी दूसरे समुदाय की आस्था पर चोट ना करे। धार्मिक नायको पर, फिल्म में नायको का सम्मान नही तो यह सनातनी आस्था पर कुठाराघात है। इसपर तत्काल प्रभाव से वैन लगना अति आवश्यक है। हिंदी फिल्म निमार्ताओं को 60 और 70 के दशक की फिल्म निर्माण की ओर लौटना चाहिए। जहां अच्छे अभिनय, कहानी में मेलोड्रामा और अच्छे संगीत ने फिल्म को हिट बनाया। निमार्ता लालची हो गए हैं और हिंदू धर्म के साथ सीमा पार करने और स्वतंत्रता लेने को तैयार है।

अभिव्यक्ति की आजादी सिर्फ एक धर्म के लिए क्यों ? अगर किसी और धर्म के बारे में कोई कुछ बोल दे तो सर तन से जुदा , ये दोहरा मापदंड क्यों ? एक लोकतान्त्रिक देश में जहां सब बराबर है, संवैधानिक तरीके से विरोध की आजादी सबको है। किसी को बीच सड़क पर मार देना सही है या लोकतान्त्रिक तरीके से विरोध करना। रामानंद सागर ने जब रामायण को टीवी पर प्रसारित किया तो इस देश के बहुसंख्यक समाज ने खुले मन से इसका स्वागत किया,किसी ने इसका विरोध नहीं किया। फिर आज ऐसा क्यों है की लोगो को हिन्दू धर्म से जुडी फिल्मो का विरोध करना पड़ रहा है। बुद्धिजीवियों और बॉलीवुड को इस बात पर मंथन करना चाहिए। भगवान् श्री राम और रामायण से हमारी आस्था जुडी हुई है इसलिए उनसे जुडी हुई किसी भी चीज का लोकतान्त्रिक तरीके से विरोध करना हमारा संवैधानिक अधिकार है। सबसे बड़ा सवाल है की अगर आने वाली पीढ़ी रामायण को इस तरह देखेंगी तो वो उसके महत्त्व को कैसे समझेंगी? ये सिर्फ एक मनोरंजन का साधन मात्र बन कर रह जाएगी। आस्था में जमाने के बदलाव का तर्क देना बेवकूफी है। आस्था कभी नहीं बदलती। इसलिए क्रिएटिव लिबर्टी के नाम पर अभिव्यक्ति की आजादी का ढोल पीटना बंद कीजिये। रामायण और महाभारत हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत हैं। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण हमारे परम पूज्य ईश्वर हैं और इनसे जुड़े हुए दूसरे पात्र भी हमारे लिए अनुकरणीय और पूज्य हैं। इनसे सम्बंधित कोई भी बदलाव हमें स्वीकार नहीं है। हमें अपने अतीत के पात्रों और उनके द्वारा स्थापित मूल्यों पर अथाह गर्व है।

पृथ्वी पर अशांति फैलाते ये कलयुगी धर्मगुरु

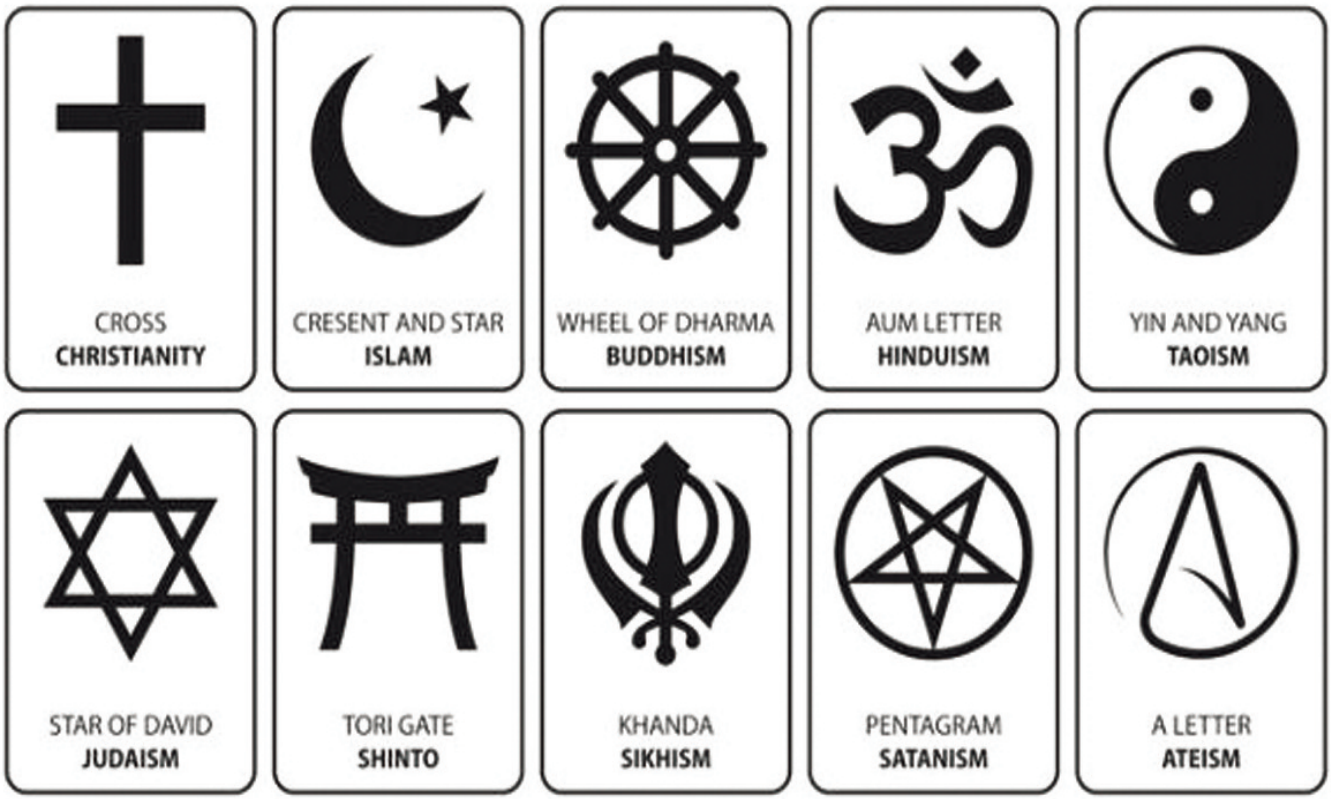

सवाल यह कि आज के पाकिस्तान में जहाँ बाढ़ व मंहगाई से देश के हालात अति दयनीय बने हुये हैं, इस दौर में खुदा से डरने,लोगों के दिलों की दुआयें हासिल करने,अपने आमाल सुधारने, अपने किये गये गुनाहों के लिये अल्लाह से तौबा करने के बजाये, कब्रें खोदने,मस्जिदों,मंदिरों व गुरद्वारों पर हमले करने जैसी अमानवीय व राक्षसीय सोच आखिर कहाँ से आती है ? यह समझने के लिये भी हमें इस्लामी इतिहास के अतीत में ही झांकना पड़ेगा। और फिर हम यही पायेंगे कि स्वयं को मुसलमान कहने वाली यही जालिम व क्रूर शक्तियां जो आज भी कब्रें खोदने पर आमादा हैं यह उसी मानसिकता के मुसलमान हैं जिन्होंने करबला में इमाम हुसैन के छः महीने के बच्चे अली असगर को पहले तो तीर मारकर कत्ल किया फिर जब इमाम हुसैन ने शहीद अली असगर की लाश करबला की तपती धरती में दफ़्न कर दी तो इन्हीं ह्यस्वयंभू मुसलमानोंह्न ने इमाम हुसैन को कत्ल करने के बाद अली असगर की लाश को भी कब्र खोद कर बाहर निकाल कर उसकी गर्दन काटी ।

किसी भी धर्म व समुदाय के धर्मगुरु से वैसे तो प्रायः यही उम्मीद की जाती है कि वह अपने अनुयायियों को सद्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करे। उन्हें बुराइयों से दूर रहने व सत्कर्म करने के लिये प्रोत्साहित करे। उनमें मानवता का संचार करे। उन्हें दया, सहृदयता, मानवता, क्षमा, परोपकार, जनकल्याण व मानव प्रेम सिखाये। परन्तु आज के दौर में कभी कभी तो मौलवी और साधू संतों के वेश में ही ऐसी राक्षसी मानसिकता रखने वाले लोगों को देखा जाने लगा है जिससे कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होने लगता है गोया यही ह्यकलयुग का उत्कर्ष कालह्न है। क्योंकि आम तौर पर समाज विशेषकर अपने अनुयायियों को सही राह दिखाने वाले यही कथित मौलवी-संत-साधू अब समाज में साम्प्रदायिकता फैलाने,विषवमन करने,एक दूसरे धर्म या समुदाय के लोगों के विरुद्ध नफरत फैलाने यहाँ तक कि अपने समर्थकों को हत्या,हिंसा,आगजनी व तोड़फोड़ करने के लिये उकसाने जैसे काम कर रहे हैं। अफसोस की बात तो यह है कि धर्म की आड़ में और धर्म के नाम पर यह अधर्म प्रायः बहुसंख्य समाज के कथित मौलवियों व धर्म गुरुओं द्वारा अल्पसंख्यक समाज के विरुद्ध किया जा रहा है। और अधर्म भी ऐसा जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिसे देख व सुनकर इंसानी रूह काँप उठे ,राक्षसी कृत्य भी जिसके आगे फीके पड़ जायें।

पाकिस्तान में गत 22 अगस्त को लाहौर से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित फैसलाबाद ज़िले के चक 203 आरबी मनावाला में अहमदिया समुदाय के एक कब्रिस्तान में अहमदिया समुदाय के लोगों की 16 कब्रों को स्वयं को मुसलमान बताने का दावा करने

वाले साम्प्रदायिकतावादियों ने तोड़ फोड़ कर उन्हें क्षतिग्रस्त कर दिया तथा उन कब्रों पर पत्थर भी बरसाये । बताया जाता है कि यह कब्रिस्तान 75 वर्ष पुराना है। हमलावर चरमपंथियों को शिकायत है कि अहमदिया समुदाय के लोगों द्वारा अपने मृत परिजनों की कब्रों के पत्थरों पर इस्लामिक चिन्हों व कुरआनी आयतों आदि का इस्तेमाल क्यों किया गया? इन हमलावरों को इन कब्रों को क्षतिग्रस्त करने के लिये इस इलाके में सक्रिय उन मौलवियों ने प्रेरित किया जो आते तो हैं अपने प्रवचन अल्लाह,रसूल,कुरआन व हदीस के नाम पर देने के लिये परन्तु इसके बजाय वे दूसरे समुदाय के लोगों के विरुद्ध अपने समर्थकों व अनुयायियों को भड़काने का काम करते हैं। परिणाम स्वरूप गरीबी व बेरोजगारी से जूझ रहे लोग ऐसे कलयुगी मोलवियों व धर्मगुरुओं के बहकावे में आकर कब्रों को खोदने व उन्हें क्षतिग्रस्त करने जैसे अधार्मिक व अमानवीय काम करने लगते हैं। खबरों के अनुसार पाकिस्तान में केवल इसी वर्ष अब तक अहमदिया लोगों की 185 कब्रों को क्षतिग्रस्त किया जा चुका है।

इसी तरह की क्रूर व अमानवीय मानसिकता के लोग कभी मानव बम बनकर मस्जिदों में नमाज पढ़ रहे लोगों के बीच विस्फोट कर नमाज़ियों की हत्यायें कर देते हैं ,कभी किसी का सर कलम करते दिखाई दे जाते हैं,कभी अल्पसंख्यकों पर जुल्म ढहाते नजर आते हैं तो कभी अल्पसंख्यकों की इबादतगाहों, मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, दरगाहों व इमाम बारगाहों पर हमले करते व तोड़फोड़ व आगजनी करते दिखाई दे जाते हैं। पिछले दिनों मालदीव के पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं तकनीकी राज्यमंत्री अली सोलिह पर राजधानी माले के हुल्हुमाले में एक शख्स ने चाकू से हमला किया। हमलावर कुरान की आयतें पढ़ने के बाद हमलावर उनका गला रेतना चाहता था। कुरान की आयतें पढ़ने के बाद इस तरह की अमानवीयता व अधर्म की प्रेरणा केवल मौलवियों,मुल्लाओं व धर्मगुरुओं के उकसाने व भड़काने से ही मिल सकती है।

तो क्या किसी धर्म या समुदाय विशेष व उनके धर्मग्रंथों में इस बात की शिक्षा दी गयी है कि जिनके सोच विचार आप के विचारों से मेल न खाते हों उनके पूर्वजों की कब्रें उधेड़ दी जायें ? उनके सर कलम कर दिए जाएं ? उनकी इबादतगाहों को नुकसान पहुँचाया जाये ? जिनके नमाज या पूजा अरदास आदि के तरीके आपकी इबादत पद्धति से मेल न खाते हों उनके धर्मस्थलों पर विस्फोट कर बेगुनाह लोगों की जान ले ली जाये ? न तो मैं अहमदिया समुदाय से संबद्ध हूँ न ही उनका अनुयायी। परन्तु इस अति अल्पसंख्यक परन्तु शिक्षित मुस्लिम समुदाय के लोगों के साथ आये दिन होने वाले जुल्म-ो-सितम की दास्ताँ सुनसुनकर मानवता के नाते इनके प्रति मेरी हमदर्दी जरूर बढ़ गयी है। और इनपर या इन जैसे दूसरे अल्पसंख्यकों पर जुल्म ढहाने वालों के विरुद्ध नफरत और गुस्सा। आश्चर्य है कि पाकिस्तान की संसद ने 1974 में अहमदिया समुदाय को गैर -मुस्लिम घोषित कर दिया। इस समुदाय पर खुद को मुस्लिम कहलवाने पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। यहाँ तक कि अहमदिया मुसलमानों का धार्मिक उपदेश देना और हज के लिए सऊदी अरब जाना तक प्रतिबंधित कर दिया गया। जबकि अहमदिया स्वयं को मुसलमान भी कहते हैं,कुरआन व रसूल पर भी अक ीदा

तो क्या किसी धर्म या समुदाय विोष व उनके धर्मग्रंथों में इस बात की िक्षा दी गयी है कि जिनके सोच विचार आप के विचारों से मेल न खाते हों उनके पूर्वजों की कब्रें उधेड़ दी जायें ? उनके सर कलम कर दिए जाएं ? उनकी इबादतगाहों को नुकसान पहुँचाया जाये ? जिनके नमाज या पूजा अरदास आदि के तरीके आपकी इबादत पद्धति से मेल न खाते हों उनके धर्मस्थलों पर विस्फोट कर बेगुनाह लोगों की जान ले ली जाये ? न तो मैं अहमदिया समुदाय से संबद्ध हूँ न ही उनका अनुयायी।

रखते हैं। सवाल यह कि आज के पाकिस्तान में जहाँ बाढ़ व मंहगाई से देश के हालात अति दयनीय बने हुये हैं, इस दौर में खुदा से डरने,लोगों के दिलों की दुआयें हासिल करने,अपने आमाल सुधारने, अपने किये गये गुनाहों के लिये अल्लाह से तौबा करने के बजाये, कब्रें खोदने,मस्जिदों,मंदिरों व गुरद्वारों पर हमले करने जैसी अमानवीय व राक्षसीय सोच आखिर कहाँ से आती है ? यह समझने के लिये भी हमें इस्लामी इतिहास के अतीत में ही झांकना पड़ेगा। और फिर हम यही पायेंगे कि स्वयं को मुसलमान कहने वाली यही जालिम व क्रूर शक्तियां जो आज भी कब्रें खोदने पर आमादा हैं यह उसी मानसिकता के मुसलमान हैं जिन्होंने करबला में इमाम हुसैन के छः महीने के बच्चे अली असगर को पहले तो तीर मारकर कत्ल किया फिर जब इमाम हुसैन ने शहीद अली असगर की लाश करबला की तपती धरती में दफ़्न कर दी तो इन्हीं ह्यस्वयंभू मुसलमानोंह्ल ने इमाम हुसैन को कत्ल करने के बाद अली असगर की लाश को भी कब्र खोद कर बाहर निकाल कर उसकी गर्दन काटी और भाले की नोक पर बुलंद कर बाजारों में घुमाया। नमाज़ियों पर हमले की प्रेरणा भी इन्हें करबला से ही मिलती है। दस मुहर्रम की सुबह जब इमाम हुसैन के साथी अपनी आखिरी नमाज अदा कर रहे थे उस समय यजीदी सेना ने तीरों की बौछार कर नमाज में विघ्न पैदा किया था। आगजनी की प्रेरणा भी इन्हें करबला से ही मिलती है क्योंकि इमाम हुसैन की शहादत के बाद इसी यजीदी लश्कर ने उन तंबुओं में आग लगा दी थी जिनमें इमाम हुसैन के परिवार की महिलायें व बच्चे रह रहे थे। इसी विचारधारा के लोगों ने पैगंबर हजरत मुहम्मद की बेटी हजरत फातिमा के घर में आग लगा कर उनकी हत्या की थी। गोया जो लोग इस्लाम के नाम पर और मुसलमानों का चोगा पहनकर इस्लाम के उद्भवकाल में इस्लाम व मुसलमानों के दुश्मन थे आज भी उसी मानसिकता के कलयुगी धर्मगुरु पूरी पृथ्वी पर अशांति फैलाने में लगे हुये हैं।

सोशल मीडिया पर स्क्रॉल होती जिंदगी

हम में से ज्यादातर लोग आज सोशल मीडिया के आदी हैं। चाहे आप इसका इस्तेमाल दोस्तों और रिश्तेदारों से जुड़ने के लिए करें या वीडियो देखने के लिए, सोशल मीडिया हम में से हर एक के लिए जाना-पहचाना तरीका है। प्रौद्योगिकी और स्मार्ट उपकरणों के प्रभुत्व वाली दुनिया में नेटफ्लिक्स को बिंग करना या फेसबुक पर स्क्रॉल करना, इन दिनों मिनटों और घंटों को खोना बहुत आम है। ये वेबसाइट और ऐप हमारा ज्यादातर समय खा रहे हैं, इतना कि यह अब एक लत में बदल गया है। सोशल मीडिया की लत जल्दी से उस कीमती समय को खा सकती है जो कौशल विकसित करने, प्रियजनों के साथ समय का आनंद लेने या बाहरी दुनिया की खोज में खर्च किया जा सकता है।

अगर आप समाज से अलग-थलग महसूस करते हैं, और सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे ऐप्स पर ज्यादा समय बिताते हैं तो एक नए शोध के अनुसार, इससे स्थिति और बिगड़ सकती है। सोशल मीडिया से युवाओं में अवसाद बढ़ रहा है। फेसबुक से डिप्रेशन का खतरा 7% बढ़ा है, फेसबुक से चिड़चिड़ापन का खतरा 20% बढ़ा है। सोशल मीडिया ने मोटापा, अनिद्रा और आलस्य की समस्या बढ़ा दी है, ह्यफियर ऑफ मिसिंग आउटह्न को लेकर भी चिंताएं बढ़ गई हैं। स्टडी के मुताबिक सोशल मीडिया से सुसाइड रेट बढ़े है। इंस्टाग्राम से लड़कियों मे हीन भावना आ रही है। सोशल मीडिया के माध्यम से जांच करना और स्क्रॉल करना पिछले एक दशक में तेजी से लोकप्रिय गतिविधि बन गया है। अधिकांश लोगों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग सोशल नेटवर्किंग साइटों के आदी हो जाने से हो रहा हैं। वास्तव में, सोशल मीडिया की लत एक व्यवहारिक लत है जिस में सोशल मीडिया के बारे में अत्यधिक चिंतित होने की विशेषता है, जो सोशल मीडिया पर लॉग ऑन करने या

अगर आप समाज से अलग-थलग महसूस करते हैं, और सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे ऐप्स पर ज्यादा समय बिताते हैं तो एक नए शोध के अनुसार, इससे स्थिति और बिगड़ सकती है। सोशल मीडिया से युवाओं में अवसाद बढ़ रहा है। फेसबुक से डिप्रेशन का खतरा 7% बढ़ा है, फेसबुक से चिड़चिड़ापन का खतरा 20% बढ़ा है। सोशल मीडिया ने मोटापा, अनिद्रा और आलस्य की समस्या बढ़ा दी है, ह्यफियर ऑफ मिसिंग आउटह्न को लेकर भी चिंताएं बढ़ गई हैं।

उपयोग करने के लिए एक अनियंत्रित आग्रह से प्रेरित है, और सोशल मीडिया के लिए इतना समय और प्रयास करते है जो अन्य महत्वपूर्ण जीवन क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में फोन बड़े से लेकर बच्चों तक के लए जरूरी हो गया है। बच्चों के स्कूल की पढ़ाई भी ऑनलाइन हुई है। ऐसे में बच्चे फोन पर ज्यादा समय बताते है। फोन के ज्यादा इस्तेमाल की वजह से बच्चों को सोशल मीडिया की लत भी लग रही है। सोशल मीडिया पर लत की वजह से बच्चों की नींद पर असर पड़ रहा है। नजर भी कमजोर हो जाती है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ की रिपोर्ट में ये साफ हुआ है कि अगर कोई बच्चा एक हफ्ते तक लगातार सोशल मीडिया का प्रयोग करते है, तो वह एक रात तक की नींद भी खो सकते है। अक्सर बच्चों के साथ ये होता है कि जब वो सोशल मीडिया का इस्तेमाल करके सोते है, तो आंखें बंद करने के बाद भी उनके दिमाग में वह चीजें चलती रहती है, जो वो देखकर सोए है।

सोशल मीडिया की लत एक व्यवहार संबंधी विकार है जिसमें किशोर या युवा वयस्क सोशल मीडिया से मोहित हो जाते हैं और स्पष्ट नकारात्मक परिणामों और गंभीर कमियों के बावजूद ऑनलाइन मीडिया को कम करने या बंद करने में असमर्थ होते हैं। जबकि कई किशोर दैनिक आधार पर (फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब, वाइन, स्नैपचैट और वीडियो गेम सहित) ऑनलाइन मीडिया के किसी न किसी रूप में संलग्न होते हैं, किशोर सोशल मीडिया की लत अत्यधिक खतरनाक है, एक बढ़ती हुई अच्छा महसूस करने के तरीके के रूप में सोशल मीडिया पर निर्भरता, और दोस्ती में नुकसान, शारीरिक सामाजिक जुड़ाव में कमी और स्कूल में नकारात्मक प्रभाव के बावजूद इस व्यवहार को रोकने में असमर्थता चिंता का विषय बन गई है।

दुनिया में हर पांचवा युवा यानी लगभग 19% युवाओं ने साल भर के भीतर किसी न किसी तरह के खेल में पैसा लगाया है। इसमें वे ज्यादातर बार ऑनलाइन सट्टेबाजी का शिकार हुए है। आज के समय में सोशल मीडिया का बहुत ज्यादा उपयोग से युवा वर्ग में न सिर्फ आत्मविश्वास कम हो रहा है बल्कि अकेलेपन का भी आभास बढ़ रहा है। यही कारण है कि हताशा और चिंता भी बढ़ती है। पिछले काफी समय से सोशल मीडिया पर वैसे तो सभी वर्गों की सक्रियता बढ़ी है, लेकिन सबसे ज्यादा प्रभावित युवा वर्ग हो रहा है। यहां तक की आत्महत्या का ख्याल भी युवाओं में बढ़ रही है।

लंबे समय तक सोशल मीडिया पर बने रहने के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर हो रहा है। ऐसे मामलों में 15 से 45 वर्ष आयु के केस अधिक सामने आ रहे हैं। जिसके कारण नींद की कमी के साथ-साथ कार्य की क्षमता भी प्रभावित होती है। आज का दौर मोबाइल, लैपटॉप जैसे गैजेट्स के बगैर अधूरा है। ऐसे में आप अपनी मानसिक सेहत का ध्यान रखकर और कुछ उपायों को अपनाकर सोशल मीडिया के एडिक्शन से बच सकते है। हम में से ज्यादातर लोग आज सोशल मीडिया के आदी हैं। चाहे आप इसका इस्तेमाल दोस्तों और रिश्तेदारों से जुड़ने के लिए करें या वीडियो देखने के लिए, सोशल मीडिया हम में से हर

लंबे समय तक सोशल मीडिया पर बने रहने के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर हो रहा है। ऐसे मामलों में 15 से 45 वर्ष आयु के केस अधिक सामने आ रहे हैं। जिसके कारण नींद की कमी के साथ-साथ कार्य की क्षमता भी प्रभावित होती है। आज का दौर मोबाइल, लैपटॉप जैसे गैजेट्स के बगैर अधूरा है। ऐसे में आप अपनी मानसिक सेहत का ध्यान रखकर और कुछ उपायों को अपनाकर सोशल मीडिया के एडिक्शन से बच सकते है।

एक के लिए जाना-पहचाना तरीका है। प्रौद्योगिकी और स्मार्ट उपकरणों के प्रभुत्व वाली दुनिया में नेटफ्लिक्स को बिंग करना या फेसबुक पर स्क्रॉल करना, इन दिनों मिनटों और घंटों को खोना बहुत आम है। ये वेबसाइट और ऐप हमारा ज्यादातर समय खा रहे हैं, इतना कि यह अब एक लत में बदल गया है। सोशल मीडिया की लत जल्दी से उस कीमती समय को खा सकती है जो कौशल विकसित करने, प्रियजनों के साथ समय का आनंद लेने या बाहरी दुनिया की खोज में खर्च किया जा सकता है। अध्ययनों से पता चला है कि यह मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों जैसे कम आत्मसम्मान, अकेलेपन की भावना, अवसाद और चिंता का कारण बन सकता है। सप्ताह में कम से कम एक या दो बार, ह्लसोशल मीडिया फ्रीह्व दिवस मनाएं। यह शनिवार/रविवार को हो सकता है या जो भी दिन आपको लगता है कि आपके लिए उपयुक्त है। समय के साथ, हमें अपनी स्क्रीन पर दिखने वाले छोटे-छोटे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप या फेसबुक आइकन की आदत हो जाती है। नया क्या है यह देखने के लिए नियमित रूप से अपने फोन की जांच करना हमारी आदत बन गई है। आप अपने सोशल मीडिया के उपयोग को कम करने के लिए दिन में एक बार अपने नोटिफिकेशन देख सकते हैं। सोशल मीडिया के लिए अपनी आवश्यकता पर विचार करें क्योंकि कभी-कभी सोशल मीडिया की लत हमारे ध्यान या दूसरों के साथ संबंध की आवश्यकता के कारण हो सकती है। इस पर अपने विचार लिखने के लिए कुछ समय व्यतीत करें और इस पर काम करने का प्रयास करें कि आप अपने उपयोग को कैसे कम कर सकते हैं। किशोर सोशल मीडिया व्यसन उपचार का पहला और सबसे प्राथमिक कार्य किशोरों द्वारा सोशल मीडिया पर बिताए जाने वाले समय को कम करना है। किशोरों द्वारा ऑनलाइन बातचीत करने में लगने वाले समय को सीमित करके, हम उन्हें अपने साथियों के साथ वास्तविक सामाजिक संपर्क को प्राथमिकता देने में मदद करते हैं। यह न केवल स्वस्थ है, बल्कि इस तरह, वे स्वयं की बेहतर समझ विकसित करने की अधिक संभावना रखते हैं। हम जानते हैं कि सोशल मीडिया की लत से जूझ रहे किशोरों के लिए ताजी हवा में अधिक समय बिताना महत्वपूर्ण है। सोचिये, हमारे आस- पास समुद्र तटों से लेकर पार्कों और लंबी पैदल यात्रा मार्गों तक, सुंदर प्राकृतिक स्थल क्यों बनाए गए हैं।

पेशा अध्यापन का मनोवृत्ति राक्षसीय ?

स्कूली शिक्षा ग्रहण करने वाला लगभग प्रत्येक भारतवासी संत कबीर के उन दोहों से भली भांति परिचित है जो हमें गुरु के रुतबे व उनके महत्व से परिचित कराते हैं। संत कबीर का सबसे प्रसिद्ध व प्रचलित दोहा ह्यगुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बतायह्न।। अर्थात गुरू और गोबिंद (भगवान) एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए झ गुरू को अथवा गोबिन्द को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यानी गुरु भगवान से भी पहले पूजनीय है। इसी प्रकार कबीर दास कहते हैं - ह्यगुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोष। गुरू बिन लखै न सत्य को गुरू बिन मिटै न दोष।। यानी झ हे सांसारिक प्राणियों। बिना गुरू के ज्ञान का मिलना असम्भव है। तब तक मनुष्य अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता हुआ मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है जब तक कि गुरू की कृपा प्राप्त नहीं होती। मोक्ष रूपी मार्ग दिखाने वाले गुरू हैं। बिना गुरू के सत्य एवं

गुरू और गोबिंद (भगवान) एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए झ गुरू को अथवा गोबिन्द को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यानी गुरु भगवान से भी पहले पूजनीय है। इसी प्रकार कबीर दास कहते हैं -ह्यगुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोष। गुरू बिन लखै न सत्य को गुरू बिन मिटै न दोष।। यानी झ हे सांसारिक प्राणियों। बिना गुरू के ज्ञान का मिलना असम्भव है। तब तक मनुष्य अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता हुआ मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है जब तक कि गुरू की कृपा प्राप्त नहीं होती। मोक्ष रूपी मार्ग दिखाने वाले गुरू हैं। बिना गुरू के सत्य एवं असत्य का ज्ञान नहीं होता। उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता फिर मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? अत: गुरू की शरण में जाओ। गुरू ही सच्ची राह दिखाएंगे।

असत्य का ज्ञान नहीं होता। उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता फिर मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? अतः गुरू की शरण में जाओ। गुरू ही सच्ची राह दिखाएंगे। इसी तरह -गुरू पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत। वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत।। अर्थात गुरू और पारस के अन्तर को सभी ज्ञानी पुरुष जानते हैं। पारस मणि के विषय में जग विख्यात है कि उसके स्पर्श से लोहा सोने का बन जाता है। किन्तु गुरू भी इतने महान होते हैं कि अपने गुण ज्ञान में ढालकर शिष्य को अपने जैसा ही महान बना लेते हैं। संत कबीर की ही तरह

अनेक कवियों,महापुरुषों,चिंतकों,संतों,ऋषि मुनियों ने गुरुओं की महानता का बखान अपने अपने तरीके से करते हुए गुरु या शिक्षक को सर्वोच्च स्थान देने की कोशिश की है। तो क्या हमारे उन महापुरुषों द्वारा गुरुओं के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विचार वर्तमान युग में सही साबित हो रहे हैं ? क्या आज का सम्पूर्ण शिक्षक समाज ह्यगोविन्दह्ल अर्थात ह्यभगवानह्ल के समतुल्य है ? या फिर प्रदूषित होते जा रहे अन्य पेशों की ही तरह अध्यापन जैसा यह पवित्र पेशा भी अब इस पेशे में प्रवेश कर चुके अनेक साम्प्रदायिकतावादी, जातिवादी, अहंकारी, अपराधी सोच रखने वाले पूर्वाग्रही व राक्षसी मनोवृत्ति रखने वाले लोगों की वजह से बदनाम व अविश्वसनीय होता जा रहा है ? अनेक शिक्षकों की क्रूरता के संबंध में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये दिन प्राप्त होने वाले समाचार तो कम से कम ऐसा ही आभास कराते हैं। राजस्थान के जालोर जिले के सुराणा गांव स्थित निजी स्कूल सरस्वती विद्या मंदिर की इसी वर्ष 20 जुलाई की घटना ने पूरे देश को आक्रोशित कर दिया था। इस घटना में कथित तौर पर छैल सिंह नामक एक अध्यापक ने तीसरी कक्षा के छात्र इंद्र मेघवाल को इतना पीटा कि बच्चे की कान की नस फट गई और अस्पताल में उसकी मौत हो गई थी। बताया गया था कि मृतक छात्र ने पेयजल के मटके को कथित रूप से छू लिया था। जिसके बाद ही शिक्षक छैल सिंह ने उसकी पिटाई कर डाली। इस घटना से जातिवादी तनाव भी पैदा हो गया था। क्या किसी गोविन्द समान ह्यगुरु ह्य से यह उम्मीद की जा सकती है कि वह अपने शिष्य के पानी की मटकी छू लेने मात्र से इतना क्रोधित हो उठे कि ह्यगुरु ह्य की जानलेवा पिटाई से बच्चे की मौत हो जाये? ऐसी ही एक घटना पिछले दिनों बिहार के गया ज़िले के वजीर गंज इलाके के एक स्कूल में घटी। यहां भी एक शिक्षक द्वारा बेरहमी से पीटे जाने के बाद 8 साल के एक छात्र की मौत हो गई। बताया जाता है कि होमवर्क न करने पर शिक्षक द्वारा छात्र को बेरहमी से मारा गया था। पटना में एक शिक्षक ने 5 साल के छात्र को उसके द्वारा संचालित कोचिंग क्लास में पढ़ाई ना करने पर डंडे से इतना मारा कि मारते-मारते डंडा टूट गया। इसके बाद क्रूर लालची शिक्षक ने बच्चे की लात-घूंसे से भी पिटाई की। इस दौरान बच्चा जमीन पर गिर गया परन्तु वह उसे लात-घूंसे- थप्पड़ से लगातार पीटता रहा। बच्चा चीखता चिल्लाता रहा और शिक्षक से उसे छोड़ने की मिन्नतें करता रहा, परन्तु दुष्ट अध्यापक ने उसे इतना मारा कि बच्चे की मौत हो गई। इसी तरह बिहार के गया के एक निजी स्कूल में तीसरी क्लास में पढ़ने वाले 6 साल के विवेक को उसके ह्यगुरूजी ह्य व गुरूजी की धर्मपत्नी दोनों ने कमरे में बंद कर उस बच्चे की छाती पर चढ़कर उसे इतना पीटा कि बच्चे की मौत हो गयी। बच्चे का कुसूर केवल इतना था कि उसने दुर्गा पूजा की थाली में रखे प्रसाद में से एक सेब उठा लिया था। क्या बच्चे की मौत से मां दुर्गा प्रसन्न हुई होंगी ?

यूपी के औरैया में 10वीं में पढ़ने वाले निखिल नामक एक दलित छात्र की किसी गलती को लेकर स्कूल में शिक्षक ने कथित तौर पर बुरी तरह पिटाई कर दी। इसके बाद छात्र को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। निखिल दसवीं कक्षा का छात्र था। उत्तर प्रदेश के ही श्रावस्ती ज़िले के सिरसिया क्षेत्र के एक निजी स्कूल में बनकटवा गांव निवासी तीसरी कक्षा के छात्र बृजेश विश्वकर्मा की उसके शिक्षक ने कथित तौर पर इतनी पिटाई की कि बच्चे की मौत हो गयी। मृतक छात्र के परिजनों का आरोप था कि बृजेश विश्वकर्मा को उसके शिक्षक ने स्कूल की फीस जो 250 रुपये प्रति माह है,समय पर अदा न करने के गलत आरोप में पीटा था। परिजनों के अनुसार फीस का भुगतान ऑनलाइन किया जा चुका था,परन्तु शायद अध्यापक को इसका पता नहीं चला। उपरोक्त चंद उदाहरण कलयुग के इस दौर में शिक्षक समाज में प्रवेश कर चुके कुछ क्रूर मानसिकता रखने वाले लोगों के चरित्र व उनकी क्रूर व आपराधिक मानसिकता को उजागर करने के लिये काफी हैं। परन्तु इसी शिक्षक समाज में ऐसे शिक्षक भी मौजूद हैं जो बच्चों को अपनी संतानों जैसा प्यार देते हैं। अपने छात्रों की सफलता से गौरवान्वित होते हैं। बच्चों से ट्यूशन पढ़ाने की कोई अतिरिक्त फीस नहीं लेते। यहाँ तक कि गरीब बच्चों की फीस स्वयं भरने वाले शिक्षक आज भी मौजूद हैं। यूँही नहीं भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम ने स्वयं को पूर्व राष्ट्रपति,भारत रत्न अथवा मिसाइल मैन के बजाये स्वयं को ह्य प्रोफेसर ह्य कहकर संबोधित किये जाने का अनुरोध किया था। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि इस पवित्र व नोबेल शिक्षा जगत में ऐसे लोगों का प्रवेश हो गया है जिनका पेशा तो अध्यापन का है परन्तु उनकी मनोवृत्ति राक्षसीय है ?

भारतीय दर्शन की आज पूरे विव को आवयकता है

भारत वर्ष 2047 में, लगभग 1000 वर्ष के लम्बे संघर्ष में बाद, परतंत्रता की बेढ़ियां काटने में सफल हुआ है। इस बीच भारत के सनातन हिंदू संस्कृति पर बहुत आघात किए गए और अरब आक्रांताओं एवं अंग्रेजों द्वारा इसे समाप्त करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी गई थी। परंतु, भारतीय जनमानस की हिंदू धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा एवं महान भारतीय संस्कृति के संस्कारों ने मिलकर ऐसा कुछ होने नहीं दिया।

भारत में अनेक राज्य थे एवं अनेक राजा थे परंतु राष्ट्र फिर भी एक था। भारतीयों का एकात्मता में विश्वास ही इनकी विशेषता है। आध्यात्म ने हर भारतीय को एक किया हुआ है चाहे वह देश के किसी भी कोने में निवास करता हो और किसी भी राज्य में रहता हो। आध्यात्म आधारित दृष्टिकोण है इसलिए हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। आध्यात्मवाद ने ही भारत के नागरिकों की रचना की है और आपस में जोड़ा है। इसके चार पहलू हैं। भारतीय मूल रूप से सहिष्णु हैं। यह हम भारतीयों की विशेषता है। भारत कभी भी ह्लकेवलह्व का नहीं रहा, यह सभी का है, ऐसा विश्वास किया जाता है। केवल मेरा ही सच है, बाकी सब झूठ ही है, इस सिद्धांत पर भारत ने कभी भी विश्वास नहीं किया है। भारत सभी को अपने आप में आत्मसात करता है। मुझमें भी ईश्वर, आप में भी ईश्वर। इस सिद्धांत पर विश्वास करता है।

भारतीय दर्शन विविधता में एकता एवं अनेकता में एकता देखता है। भारत अनेकता को भेद नहीं मानता है। भारत, नए आने वाले मानव समूहों की विशेषताओं को जीवित रखकर अपने आप में मिला लेता है। यह सामंजस्य भी हिंदू ही हो जाता है, यह भी भारत की विशेषता है।

भारतीय दर्शन में ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का अंश है। प्रत्येक मानव अपने देवत्व को जगाकर नारायण का रूप बन सकता है। यह विशेषता सभी भारतीयों में समान रूप से है, यह मानने वाला भारत ही है।

भारत के प्रत्येक घर में कई देवी देवताओं की मूर्तियों का निवास रहता है एवं इनकी समान रूप से पूजा अर्चना की जाती है। इस प्रकार का संग्रहण और इस संग्रहण को समान दर्जा देना भी भारतीयों की विशेषता है।

उक्त वर्णित चारों विशेषताओं को आत्मसात करने वाले व्यक्ति को हिंदू कहा जा सकता है और इस दर्शन को हिंदुत्व कह सकते हैं। पारिवारिक, व्यावसायिक, सामाजिक वातावरण में यह भावना झलकनी चाहिए। हिंदुत्व केवल एक कल्पना नहीं है बल्कि यह एक जीवन दर्शन है और जीवन जीने की कला है। आज जब पूरे विश्व में आतंकवाद फैला है ऐसे में पूरे विश्व में ही इस जीवन दर्शन को अपनाने की महती आवश्यकता है।

भारतीय दर्शन में यह भी निहित है कि राजा का यह धर्म है कि उसके राज्य में समाज का प्रत्येक व्यक्ति

सम्पन्न बने, चाहे वह किसी भी पूजा पद्धति को मानने वाला हो एवं किसी भी मत, पंथ का हो। धर्म सभी नागरिकों को एक जैसे भाव से देखने की सीख देता है एवं इनके बीच किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं होना चाहिए। जिन लोगों की समाज में अधिक आय है उनके लिए कहा गया है कि वे समाज की भलाई के लिए आगे आएं एवं समाज के लिए सहायता का कार्य करें, यह उनका धर्म है। इसीलिए कहा जाता है कि अपने स्वयं के लिए जब मकान का निर्माण कराया जाता है तो इसे ह्लघरह्व कहा जाता है परंतु जब समाज के लिए मकान का निर्माण किया जाता है तो इसे ह्लधर्मशालाह्व कहा जाता है। समाज के लिए किए जाने वाले अच्छे कार्यों में धर्म अपने आप ही जुड़ जाता है। समाज को केवल ह्लदेनाह्व, ह्लभिक्षाह्व अथवा ह्लदानह्व कहा जाता है और यदि समाज को ससम्मान लौटाया जाता है तो इसे ह्लधर्मह्व कहते हैं। इस प्रकार धर्म सभी को जोड़ना सिखाता है न कि आपस में बांटना।

अकबर, औरंगजेब और अल्लाद्दीन के समय हिंदुओं को कौन जोड़कर रखे हुए था। 15वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन की दूसरी लहर उत्तर भारत में प्रारम्भ हुई जबकि इसके पूर्व भक्ति आंदोलन की प्रथम लहर दक्षिण भारत में प्रारम्भ हो चुकी थी। आसाम, केरल एवं पंजाब आदि में लगभग एक ही समय पर भक्ति आंदोलन की शुरूआत हुई। उस समय देश के विभिन्न भागों में भक्ति आन्दोलन सफलता पूर्वक चलाया गया। यह अपने आप में एक अद्भुत आंदोलन था। उस समय स्वतंत्रता संघर्ष कुछ अलग प्रकार से संचालित किया जा रहा था और यह सब भारत के नागरिकों में ह्लस्वह्व के भाव के चलते ही सम्भव हो रहा था।

भारतीय दर्शन में बौद्धिक समृद्धि को मोक्ष के मार्ग पर आगे बढ़ने की संज्ञा दी गई है। और, बौद्धिक उन्नति एवं आध्यात्मिक उन्नति को भारत का राष्ट्रत्व माना जाता है। यह भी हिंदुत्व ही है। हमारे यहां भारतीय संस्कृति में एकात्मता का सोच है। भारत पूरे विश्व की मंगल कामना करता है एवं ह्लवसुधैव कुटुम्बकमह्व, ह्लसर्वजन हिताय सर्वजन सुखायह्व, जैसे सिद्धांतो पर विश्वास करता है।

चाहे किसी भी व्यक्ति की कोई भी पूजा पद्धति क्यों न हो, पूरे भारत में एक जैसा हिंदू दर्शन है। हिंदू दर्शन ही भारत में राष्ट्र तत्व है जो पश्चिम की सोच से अलग है। हिंदू दर्शन एक मौलिक दर्शन है। अतः मौलिक तत्वों को जितना मजबूत करेंगे राष्ट्र विरोधी ताकतें उतनी ही कमजोर होंगी। हिंदू समाज उदार दृष्टि रखकर संगठित रहे। भारतीय इतिहास में कवि रसखान के रूप में एक नहीं बल्कि हजारों की संख्या में इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े हैं। आज के खंडकाल में तो भारत में बुर्का पहिने महिलाएं जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर अपने बच्चों को श्री कृष्ण के रूप में सजा कर खड़ी दिखाई देती हैं। बहुत बड़े स्तर पर आज मुस्लिम एवं ईसाई महिलाएं कमरों में बंद होकर योग कर रही है। संयुक्त अरब अमीरात के आबू धाबी में एक भव्य मंदिर वहां की सरकार एवं नागरिक मिलकर बना रहे हैं। आज ह्लसर तन से जुदाह्व जैसे नारे कोई पसंद नहीं कर रहा है। बल्कि संयमित, सौम्य एवं भावुक मुसलमान इसका दबी जुबान में विरोध भी करने लगे हैं। हालांकि भारतीय मुसलमानों से अपेक्षा जरूर है कि आज पूरे विश्व को इस्लाम के भारतीय स्वरूप को पूरी दुनिया को दिखाएं। यह भी सर्वविदित ही है कि भारतीय मुसलमानों के पुर्खे हिंदू ही थे।

चाहे किसी भी व्यक्ति की कोई भी पूजा पद्धति क्यों न हो, पूरे भारत में एक जैसा हिंदू दर्शन है। हिंदू दर्शन ही भारत में राष्ट्र तत्व है जो पश्चिम की सोच से अलग है। हिंदू दर्शन एक मौलिक दर्शन है। अतः मौलिक तत्वों को जितना मजबूत करेंगे राष्ट्र विरोधी ताकतें उतनी ही कमजोर होंगी। हिंदू समाज उदार दृष्टि रखकर संगठित रहे। भारतीय इतिहास में कवि रसखान के रूप में एक नहीं बल्कि हजारों की संख्या में इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े हैं। आज के खंडकाल में तो भारत में बुर्का पहिने महिलाएं जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर अपने बच्चों को श्री कृष्ण के रूप में सजा कर खड़ी दिखाई देती हैं। बहुत बड़े स्तर पर आज मुस्लिम एवं ईसाई महिलाएं कमरों में बंद होकर योग कर रही है। संयुक्त अरब अमीरात के आबू धाबी में एक भव्य मंदिर वहां की सरकार एवं नागरिक मिलकर बना रहे हैं। आज ह्लसर तन से जुदाह्व जैसे नारे कोई पसंद नहीं कर रहा है। बल्कि संयमित, सौम्य एवं भावुक मुसलमान इसका दबी जुबान में विरोध भी करने लगे हैं। हालांकि भारतीय मुसलमानों से अपेक्षा जरूर है कि आज पूरे विश्व को इस्लाम के भारतीय स्वरूप को पूरी दुनिया को दिखाएं। यह भी सर्वविदित ही है कि भारतीय मुसलमानों के पुर्खे हिंदू ही थे।

इस तथ्य को तो इंडोनेशिया के मुसलमान भी जोर शोर से कहते हैं और इसीलिए उन्होंने इंडोनेशिया में भारतीय दर्शन को आज भी जीवित बनाए रखा है। इंडोनेशिया ही क्यों पूरे विश्व में ही आज भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता बढ़ रही है। बल्कि, आतंकवाद से आज हर नागरिक छुटकारा पाना चाहता है। भारत के केरल सहित विश्व के अनेक भागो में आज एक्स-मुस्लिम के रूप में एक बड़ी जमात उठ खड़ी हुई है।

पिछले 1000 साल के खंडकाल में बहुत कम साहित्य आया है जो भारत में राष्ट्रभाव को बढ़ावा दे। परंतु, अब समय आ गया है जब भारत के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रभाव को विकसित किया जाय एवं इस सम्बंध में साहित्य का निर्माण भी बहुत बड़े स्तर पर किया जाना चाहिए।

जीवन में तनाव से मुक्ति पाने का मंत्र है मुस्कान

दया शब्द को कई नामों से जाना जाता हैं जैसे करुणा, सहानुभूति, अनुकंपा, कृपा, रहम, आदि। परिस्थिति जन्य की गई सेवा दया कहलाती है। मनोस्थिति जन्य की गई सेवा करुणा कहलाती है। करुणा स्वभाव गत होती है। जिस इंसान में करुणा है उसके लिए बाहर की कोई भी परिस्थिति उस पर प्रभाव नहीं डाल पाती। सामान्य भाषा में कहें तो करुणा का ही प्रतिरूप है दया। एक मनोस्थति जन्य और दूसरा परिस्थति जन्य है। दया परिस्थति पर निर्भर करती है। करुणा मन की स्थिति पर निर्भर करती है। करुणावान व्यक्ति दयालु भी होता है। दयालु व्यक्ति करुणामयी हो ऐसा जरुरी नहीं। महावीर, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद आदि महापुरुष करुणामयी थे। इनमे दयालुता भी थी। हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थ रामचरित मानस के लेखक गोस्वामी तुलसीदास जी ने दया को धर्म का मूल कहा था। दया और धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। जहां दया है वहाँ धर्म है। धर्म रूपी मकान दया रूपी स्तम्भ पर टिका हुआ है। बिना दया के धर्म की कल्पना व्यर्थ है। दया, प्रेम का रूप है। किसी के चेहरे पर मुस्कान लाना, किसी की मदद करना दयालुता का ही प्रतीक है। आज कल लोगों का जीवन दौड़ भाग के चलते तनाव में हैं। लोगों में प्रेम का न होना तनाव का सबसे बड़ा कारण है। तनाव शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिल कर हुआ है- तन और आव। तन का तात्पर्य शरीर से है और आव का तात्पर्य घाव से है। अर्थात वह शरीर जिसमे घाव है। द्वेष, जलन, ईर्ष्या रूपी घाव व्यक्ति को तनाव रूपी नकारात्मकता की ओर धकेल देता है। तनाव वो खिचाव है जो शरीर को स्वतंत्र नहीं होने देता जिसके परिणाम स्वरुप शरीर में कई प्रकार की बीमारी जन्म ले लेती है। तनाव एक बीमारी है जो दिखाई नहीं देती है। शरीर का ऐसा घाव जो दिखाई न दे, तनाव कहलाता है। तनाव से ग्रसित इंसान को सारा समाज पागल दिखाई देता है। तनाव वो बीमारी है जिसमे इंसान हीन भावना से ग्रसित होता है । तनाव मूल रूप से विघर्सन है। घिसने की क्रिया ही विघर्सन कहलाती है। घिसना अर्थात विचारों का नकारात्मक होना या मन का घिस जाना। अतएव तनाव मनोविकार है। तनाव नकारात्मकता का पर्यायवाची है। एक कहावत है- भूखे भजन न होए गोपाला। पहले अपनी कंठी माला। भूखे पेट तो ईश्वर का भजन भी नहीं होता है। कहने का तात्पर्य जब हम स्वयं का आदर व सम्मान करते हैं तभी हम देश और समाज की सेवा कर सकते हैं। तनाव से ग्रसित इंसान जो खुद बीमार है वो दूसरों को भी बीमार करता है। तनाव से ग्रसित इंसान दूसरों को भी तनाव में डालता है। ऐसे नकारात्मक लोग जिनमे करुणा और दया का भाव न हो उनसे दूर रहना चाहिए। नकारात्मकता के विशेष लक्षण झ 1. अपने स्वार्थ के लिए दूसरों पर आरोप लगाना। 2. अपने को सही और

किसी के चेहरे पर मुस्कान लाना, किसी की मदद करना दयालुता का ही प्रतीक है। आज कल लोगों का जीवन दौड़ भाग के चलते तनाव में हैं। लोगों में प्रेम का न होना तनाव का सबसे बड़ा कारण है। तनाव शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिल कर हुआ है- तन और आव। तन का तात्पर्य शरीर से है और आव का तात्पर्य घाव से है। अर्थात वह शरीर जिसमे घाव है। द्वेष, जलन, ईर्ष्या रूपी घाव व्यक्ति को तनाव रूपी नकारात्मकता की ओर धकेल देता है। तनाव वो खिचाव है जो शरीर को स्वतंत्र नहीं होने देता जिसके परिणाम स्वरुप शरीर में कई प्रकार की बीमारी जन्म ले लेती है। तनाव एक बीमारी है जो दिखाई नहीं देती है। शरीर का ऐसा घाव जो दिखाई न दे, तनाव कहलाता है। तनाव से ग्रसित इंसान को सारा समाज पागल दिखाई देता है। तनाव वो बीमारी है जिसमे इंसान हीन भावना से ग्रसित होता है । तनाव मूल रूप से विघर्सन है। घिसने की क्रिया ही विघर्सन कहलाती है। घिसना अर्थात विचारों का नकारात्मक होना या मन का घिस जाना। अतएव तनाव मनोविकार है। तनाव नकारात्मकता का पर्यायवाची है। एक कहावत है- भूखे भजन न होए गोपाला। पहले अपनी कंठी माला। भूखे पेट तो ईश्वर का भजन भी नहीं होता है। कहने का तात्पर्य जब हम स्वयं का आदर व सम्मान करते हैं तभी हम देश और समाज की सेवा कर सकते हैं। तनाव से ग्रसित इंसान जो खुद बीमार है वो दूसरों को भी बीमार करता है। तनाव से ग्रसित इंसान दूसरों को भी तनाव में डालता है।

दूसरों को गलत समझना। हमेशा नकारात्मक चीजों पर बात करना। 3. सकारात्मक विचार और सकारात्मक लोगों से दूरी बनाना। 4. दूसरे की सफलता से ईर्ष्या करना। ऊपर दिए गए लक्षणों से बचना ही तनाव से मुक्ति का कारण है। तनाव में ही मानव अपराध करता है। तनाव अंधकार का कारक है। समाज की अवनति का कारण है तनाव। प्रेम,करुणा और दया से तनाव पर विजय पाई जा सकती है। अतएव असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योमार्मृतं गमय ॥ झ्र बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28। अर्थ- मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो॥ यही अवधारणा समाज को चिंतामुक्त और तनाव मुक्त बनाती है। प्रत्येक वर्ष, अक्टूबर महीने के प्रथम सप्ताह के शुक्रवार को विश्व मुस्कान दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2022 में 7 अक्टूबर को विश्व मुस्कान दिवस मनाया जा रहा है। इस वर्ष विश्व मुस्कान दिवस की थीम/विषय है- दयालुता का कार्य करें, एक व्यक्ति को मुस्कुराने में मदद करें (डू एन एक्ट ऑफ काइंडनेस, हेल्प वन पर्सन स्माइल)।

प्रेम में ही दयालुता की उत्पत्ति होती है। प्रेम में करुणा का वास होता है। प्रेम में आस्था का वास होता है। प्रेम एक शाश्वत सत्य है। राधा और कृष्ण का प्रेम शाश्वत है। प्रेम आस्तिकता का प्रतीक है। द्वेष नास्तिकता का प्रतीक है। आस्तिकता में सकारात्मकता होती है। नास्तिकता में नकारात्मकता होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जहां दया और करुणा है वहां प्रेम है। जहाँ प्रेम है वहाँ ईश्वर का वास है। प्रेम आनंद देता है। द्वेष दुःख देता है। मुस्कुराता हुआ चेहरा आनंद का द्योतक है। मुरझाया हुआ चेहरा दुःख का द्योतक है। एक आनंदित व्यक्ति ही दूसरों के चेहरे पर मुस्कान ला सकता है और दूसरों की मदद कर सकता है। किसी व्यक्ति को उसकी पूर्ववत स्थिति से बेहतर स्थिति में लाना ही मदद कहलाता है। जिस व्यक्ति की हम मदद कर रहे हैं उसको भी यह एहसास दिलाना होगा कि वो भी किसी की मदद कर सकता है। लोगो की मदद करना और उनके चेहरे पर मुस्कान लाना ही तनाव से मुक्ति दिलाता है। तनाव से सामाजिक असंतुलन पैदा होता है जिसके फलस्वरूप समाज में अशांति फैलती है। तनाव, प्रेम का शत्रु है। मुस्कान, प्रेम की जननी है। मुस्कान रूपी देवकी ने तनाव रूपी कंस (राक्षस) को मारने के लिए प्रेम रूपी कृष्ण को पैदा किया। भगवान् कृष्ण प्रेम के प्रतीक थे। मुस्कराहट के भाव से तनाव पर विजय प्राप्त की जा सकती है। मुस्कान, दयालुता की इकाई है। मुस्कराहट और दयालुता, सामाजिक संतुलन रूपी सेतु के दो छोर हैं। एक मुस्कान बड़ी से बड़ी कठनाई को सरल बनाने में कारगर है। मुस्कराहट से चिंता के काले बादल छंट जाते हैं। जब होंठों पर हंसी फूटती है तब बंजर जिंदगी लहलहा उठती है। अतएव हम कह सकते हैं कि मुस्कान, तनाव से मुक्ति का मंत्र है।

भारत में क्यों है मंदी की शून्य सम्भावना

अभी हाल ही में एक अमेरिकी बहुराष्ट्रीय निवेश प्रबंधन एवं वित्तीय सेवा कम्पनी मोर्गन स्टेनली के अर्थशास्त्रियों ने एक प्रतिवेदन जारी कर कहा है कि वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत एशिया में सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था बन कर उभरने जा रहा है। इनके अनुमान के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था वित्तीय वर्ष 2022-23 में 7 प्रतिशत से अधिक की विकास दर हासिल कर लेगी जो विश्व में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक होगी एवं भारत का एशियाई एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकास दर में क्रमशः 28 प्रतिशत एवं 22 प्रतिशत का योगदान रहने जा रहा है। भारत में सुदृढ़ आर्थिक मांग उत्पन्न होने की प्रबल सम्भावनाएं मौजूद है। साथ ही, आर्थिक सुधार कार्यक्रम भी तेजी से लागू किये जा रहे हैं। देश में पर्याप्त मात्रा में युवा श्रम शक्ति मौजूद है एवं व्यापार में लगातार निवेश बढ़ रहा है। अभी हाल ही में ब्लूम्बर्ग द्वारा सम्पन किए गए एक सरवे के अनुसार कोविड महामारी एवं रूस युक्रेन युद्ध के बीच भारत में मंदी की शून्य सम्भावनाहै जबकि कई विकसित एवं विकासशील देश भी मंदी की परेशानी से जूझ रहे है। यह भारत के लिए एक अच्छी खबर कही जा सकती है।

दरअसल भारत ने पिछले 8 वर्ष के दौरान आर्थिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए है जिनका प्रभाव अब भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। जो क्षेत्र अभी तक लगभग पूर्णतः आयात पर निर्भर थे, उन क्षेत्रों से भी निर्यात अब बहुत तेज गति पकड़ रहा है। जैसे कि खिलोना उद्योग, सुरक्षा उपकरण निर्माण उद्योग, फार्मा उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटो उद्योग आदि आदि।

भारतीय खिलौना उद्योग से पूरी दुनिया भर को निर्यात किया जा रहा है और अब भारतीय खिलौना बाजार वैश्विक आकार लेता दिखाई दे रहा है। उद्योग मंडल फिक्की और केपीएमजी की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय खिलौना बाजार वर्ष 2024-25 तक बढ़कर 200 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाने का अनुमान है। आंकड़ों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पिछले 3 वर्षों में भारत से खिलौना निर्यात में 61 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। पहले भारत घरेलू स्तर पर तैयार खिलौनों का सिर्फ लगभग 400 करोड़ रुपए का निर्यात करता था, लेकिन अब ये आंकड़ा 2600 करोड़ रुपये को पार कर गया है।

देश की रक्षा एजेंसियों, विशेष रूप से डीआरडीओ (डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन), द्वारा भारत को रक्षा उपकरणों के निर्यातक देशों की श्रेणी में ऊपर लाने की लगातार कोशिश की जा रही हैं एवं अब इसके सुखद परिणाम भी दिखाई देने लगे हैं। भारत जल्द ही दुनिया के कई देशों यथा फिलीपींस, वियतनाम एवं इंडोनेशिया आदि को ब्रह्मोस मिसाइल भी निर्यात करने की तैयारी कर रहा है। कुछ अन्य देशों जैसे सउदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात एवं दक्षिण अफ्रीका आदि ने भी भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने में अपनी रुचि दिखाई है। ध्वनि की रफ्तार से तीन गुना तेज, माक 3 की गति से चलने वाली और 290 किलोमीटर की रेंज वाली ब्रह्मोस मिसाइलें भारत-रूस सैन्य सहयोग का एक

उत्कृष्ट उदाहरण है। जमीन, आकाश और समुद्र स्थित किसी भी लांच उपकरण से छोड़े जा सकने वाले ब्रह्मोस की खूबी यह है कि यह अपनी तरह का अकेला क्रूज मिसाइल है। आज भारत से 84 से अधिक देशों को रक्षा उपकरणों का निर्यात किया जा रहा है। इस सूची में कतर, लेबनान, इराक, इक्वाडोर और जापान जैसे देश भी शामिल हैं जिन्हें भारत द्वारा बॉडी प्रोटेक्टिंग उपकरण, आदि निर्यात किए जा रहे हैं।

1970 के दशक में अस्तित्व में आया भारत का सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग आज देश और दुनिया में नित नये आयाम स्थापित कर रहा है। इंडस्ट्री बॉडी नेस्कॉम की 2022 की एक रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष आईटी सेक्टर में 15.5 प्रतिशत की विकास दर दृष्टिगोचर होने की पूरी सम्भावना है। आज आईटी सेक्टर में करीब 50 लाख लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला हुआ है। जिसमें लगभग 18 लाख महिलाएं शामिल हैं और आईटी सेक्टर का आकार 200 अरब डॉलर से भी अधिक का है। भारत का आईटी सेक्टर जिस तरह से आगे बढ़ रहा है, वो दिन दूर नहीं जब दुनिया की सबसे बड़ी आईटी कंपनियों में बस भारत की ही कंपनियों का नाम शुमार होगा।

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की तर्ज.पर ही भारत का इलेक्ट्रॉनिक वाहन बाजार भी बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। इंडिया एनर्जी स्टोरेज एलायंस (आईईएसए) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2021 से वर्ष 2030 के बीच भारत का इलेक्ट्रिक वाहन बाजार 49 प्रतिशत की दर से प्रगति करेगा, इतना ही नहीं इन वाहनो की वार्षिक बिक्री भी 1.7 करोड़ यूनिट तक होने की सम्भावना है। भारत में लिथियम आयन बैटरी की मांग वर्ष 2030 तक सालाना स्तर पर 41 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़कर 142 गीगा वाट तक पहुंच सकती है। घरेलू बाजार में इलेक्ट्रोनिक वाहनों का 50 प्रतिशत हिस्सा दोपहिया वाहनों की बिक्री का लगभग 4.67 लाख यूनिट के रूप में है। भारत में वर्ष 2021 में ई-रिक्शा की मांग के कारण लेड एसिड बैटरी का हिस्सा 81 प्रतिशत का रहा है।

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की तर्ज.पर ही भारत का इलेक्ट्रॉनिक वाहन बाजार भी बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। इंडिया एनर्जी स्टोरेज एलायंस (आईईएसए) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2021 से वर्ष 2030 के बीच भारत का इलेक्ट्रिक वाहन बाजार 49 प्रतिशत की दर से प्रगति करेगा, इतना ही नहीं इन वाहनो की वार्षिक बिक्री भी 1.7 करोड़ यूनिट तक होने की सम्भावना है। भारत में लिथियम आयन बैटरी की मांग वर्ष 2030 तक सालाना स्तर पर 41 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़कर 142 गीगा वाट तक पहुंच सकती है। घरेलू बाजार में इलेक्ट्रोनिक वाहनों का 50 प्रतिशत हिस्सा दोपहिया वाहनों की बिक्री का लगभग 4.67 लाख यूनिट के रूप में है। भारत में वर्ष 2021 में ई-रिक्शा की मांग के कारण लेड एसिड बैटरी का हिस्सा 81 प्रतिशत का रहा है।

उक्त वर्णित क्षेत्रों के अलावा अन्य कई क्षेत्रों में भी भारत से निर्यात में लगातार प्रभावशाली वृद्धि दर हासिल की जा रही है, क्योंकि भारत के उत्पादों की पूरी दुनिया में मांग बढ़ रही है।

इसीलिए भारत सरकार द्वारा भारत से किए जाने वाले निर्यात को वर्ष 2030 तक दो लाख करोड़ आमेरिकी डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए भारत के 100 भारतीय उत्पादों को ग्लोबल चैंपियन बनाये जाने के प्रयास किए जाएंगे और देशभर में आर्थिक क्षेत्र स्थापित किए जाएंगे। वर्ष 2012-22 में देश का वस्तु व सेवा निर्यात 67500 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है, जिसे 2030 तक 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिसके लिए बाहरी देशों के साथ लगातार मुक्त व्यापार समझौते किये जा रहे है। उक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद भारत वर्ष 2030 तक विश्व व्यापार के विदेश व्यापार में योगदान देने वाले पहले तीन-चार देशों में शामिल हो जाएगा।

खिलौना उत्पादों एवं रक्षा उत्पादों के साथ ही प्रौद्योगिकी, सूचना तकनीकी, आटोमोबाईल, फार्मा, मोबाइल उत्पादन, नवीकरण ऊर्जा, डिजिटल व्यवस्था, बुनियादी क्षेत्रों का विकास, स्टार्ट अप्स, ड्रोन, हरित ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भी भारत अपने आप को तेजी से वैश्विक स्तर पर स्थापित कर रहा है।

भारत में लगातार तेज गति से आगे बढ़ रही अर्थव्यवस्था और निर्यात में लगातार हो रही चहुन्मुखी प्रगति तथा देश के पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध विदेशी मुद्रा भंडार के चलते ही वैश्विक आर्थिक संस्थान लगातार यह आभास दे रहे हैं कि भारत में मंदी की सम्भावनाएं लगभग शून्य ही हैं।

नारी-शक्ति की पूजा तभी सार्थक जब नारी अपराध रूकें

ारदीय नवरात्र मनाते हुए हम एक बार फिर स्त्री ाक्ति के सम्मान के लिये बेटियों एवं महिलाओं के आदर एवं अस्तित्व की बात कर रहे हैं। यह देखना भी दिलचस्प है कि जहां साल में दो बार लड़कियों को महत्व देने के लिए ऐसे पर्व मनाए जाते हों, वहां लड़कियों को दोयम दर्जे का मानने वाले भी बहुत हैं, बालिकाओं और बेटियों के अस्तित्व एवं अस्मिता को नौंचने वाले भी कम नहीं है, आये दिन ऐसी घटनाएं देखने और सुनने को मिलती हैं कि किस तरह आज भी बेटियों के साथ बलात्कार, व्यभिचार एवं अत्याचार करने के बाद उन्हें मार दिया जाता है। उत्तराखण्ड की ताजा घटना में सत्ताधारी पार्टी से संबंध रखने वाले एक रिजार्ट के मालिक ने अपने सहयोगियों के साथ मिल कर एक मासूम बालिका के साथ अवैध एवं अनैतिक कृत करने के बाद हत्या कर दी। यों यह घटना आए दिन होने वाले जघन्य अपराधों की ही अगली कड़ी है, भला हमारा नारी को सम्मान देने एवं मां दुर्गा को पूजना कितना अर्थपूर्ण एवं विरोधाभासी है, साफ झलकता है। यहां हमारी कथनी और करनी का फर्क भी साफ नजर आता है, हमारी दूषित सोच एवं विकृत मानसिकता भी उजागर होती है।

इसी सप्ताह हमने राष्ट्रीय पुत्री दिवस मनाया। हालांकि, भारत में बेटी दिवस मनाने की एक खास वजह बेटियों के प्रति लगातार बढ़ रहे अपराधों पर नियंत्रण के लिये लोगों को जागरूक करना है। आज भी हमारे समाज की सोच बेटियों को लेकर विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण है। बेटी को न पढ़ाना, उन्हें जन्म से पहले मारना, घरेलू हिंसा, उनके मासूम ारीर को नौंचना, दहेज और दुष्कर्म से जुडे. बेटियों के अपराध एवं अत्याचार होना नये भारत, विकसित भारत पर एक बदनुमा दाग है। यह समझाना जरूरी है कि बेटियां बोझ नहीं होती, बल्कि आपके परिवार, समाज एवं राष्ट्र का एक अहम हिस्सा होती हैं, एक बड़ी ताकत होती है। आज बेटियां चांद तक पहुंच गई हैं, कोई भी क्षेत्र हो बेटियों ने अपना दमखम दिखा दिया है और बता दिया है कि वे किसी से कम नही है। इस सबके बावजूद बेटियों को क्यों अपनी हवस का माध्यम बनाया जाता है, यह एक बड़ा प्रन नवरात्र जैसे पर्व मनाते हुए हमारे सामने खड़ा है।

उत्तराखण्ड की ताजा घटना में समाज में रसूख के बूते अपनी धौंस जमाने वाले कुछ लोग महज मनमानी के लिए किसी बेटी के साथ अत्याचार एवं अनैतिक काम करने से नहीं हिचके। जिस लड़की की हत्या कर दी गई, वह अपने परिवार की आर्थिक हालत की वजह से भी नौकरी करने के लिये घर से निकली थी। मगर उसकी योग्यता और मेहनत की कद्र करने के बजाय रिजार्ट के मालिक ने उसे अवैध और अनैतिक काम में झोंकने की कोाि की। ऐसा हर जगह बेटियों के साथ हो रहा है। जाहिर है, लड़की ने मना किया, मगर आरोपों के मुताबिक, इसी वजह से रिजार्ट के मालिक ने उसकी हत्या कर दी। यों यह घटना आए दिन होने वाले जघन्य

अपराधों की ही अगली कड़ी है, मगर यह सत्ता और समाज के उस ढांचे को भी सामने करती है, जिसमें महिलाओं की सहज जिंदगी लगातार मुकिल बनी हुई है, संकटग्रस्त एवं असुरक्षित है। यह घटना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्न अभियान की भी धज्जियां उड़ाती है। इस घटना ने समूचे प्रासन और पुलिस की कायौली पर सवालिया निान लगाया है। हालत यह है कि अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने या फिर रसूखदार आरोपियों को बचाने की मांा से सही समय पर कार्रवाई करने को लेकर भी टालमटोल की गई है। गौरतलब है कि मुख्य आरोपी रिजार्ट का मालिक भाजपा नेता और पूर्व राज्यमंत्री का बेटा है और उसका भाई भी उत्तराखंड में अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग का उपाध्यक्ष था।

हर जगह बेटियों के साथ रसूखदार लोगों के द्वारा होने वाले अत्याचारों पर प्रासन एवं पुलिस की ाथिलता एवं लापरवाही देखने को मिलती है। उत्तराखण्ड की घटना में भी ऐसा ही हुआ। दरअसल, घटनाक्रम को लेकर अगर लोगों के बीच आक्रोा नहीं फैलता तो ायद पुलिस आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई नहीं करती, मामले को दबा देती। मार डाली गई लड़की के पिता ने आरोप लगाया कि उन्होंने बेटी के लापता होने की सूचना राजस्व पुलिस को दे दी थी, मगर उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी गई। जबकि सूचना के तुरंत बाद प्रासन को सक्रिय होना चाहिए था। क्या इसकी वजह आरोपियों का स्थानीय स्तर पर रसूखदार होना और सत्ताधारी पार्टी से संबंध होना है? भले ही घटना के तूल पकड़ने के बाद भाजपा ने इन दोनों को पार्टी से निकालने की औपचारिकता निभाई, मगर राज्य में कोई लड़की घर से बाहर सुरक्षित महसूस करे, इसकी फिक्र फिलहाल नहीं दिख रही। ार्मनाक यह है कि हत्या से सबंधित तथ्य उजागर होने के बाद भी मुख्य आरोपी के पिता ने अपने बेटे को सीधा-सादा बालकह्न बताया! एक राष्ट्रीय पार्टी के किसी नेता की यह कैसी संवेदनहीनता है? बेटियों एवं नारी के प्रति यह संवेदनहीनता कब तक चलती रहेगी? भारत विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी कई हिस्सों में बेटियों को लेकर गलत धारणा है कि बेटियां परिवार पर एक बोझ की तरह हैं। एक विकृत मानसिकता भी कायम है कि बेटियां भोग्य की वस्तु है? भारत में आज से कुछ वर्षों पहले के लिंगानुपात की बात करें तो लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या बहुत कम थी और गर्भ में बेटियों को मारने का चलन चल पड़ा था। हालांकि, पिछले कुछ दाकों में इस सोच में भारी परिवर्तन भी हुआ है। ज्यों-ज्यों ाक्षित और रोजगारुदा लड़कियों की संख्या बढ़ी है, उनकी आवाज और ताकत को नेता भी पहचानने लगे हैं। हर राजनीतिक दल अपने घोषणापत्र में औरतों के हितों की बातें करने लगा है। महिला नेताओं ने भी बेटियों एवं नारी की स्थिति बदलने में बहुत सकारात्मक भूमिका निभाई है। साल 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्न अभियान की ुरूआत हरियाणा के पानीपत जिले से की थी। इसके बाद भ्रूण हत्या को समाप्त करने व महिलाओं से जुड़े तमाम महत्वपूर्ण मुद्दों पर पुरुष मानसिकता में व्यापक परिवर्तन आया है। नरेन्द्र मोदी की पहल पर ही बड़ी संख्या में छोटे ाहरों और गांवों की लड़कियां पढ़-लिखकर दो के विकास में

उत्तराखण्ड की ताजा घटना में समाज में रसूख के बूते अपनी धौंस जमाने वाले कुछ लोग महज मनमानी के लिए किसी बेटी के साथ अत्याचार एवं अनैतिक काम करने से नहीं हिचके। जिस लड़की की हत्या कर दी गई, वह अपने परिवार की आर्थिक हालत की वजह से भी नौकरी करने के लिये घर से निकली थी। मगर उसकी योग्यता और मेहनत की कद्र करने के बजाय रिजार्ट के मालिक ने उसे अवैध और अनैतिक काम में झोंकने की कोाि की। ऐसा हर जगह बेटियों के साथ हो रहा है। जाहिर है, लड़की ने मना किया, मगर आरोपों के मुताबिक, इसी वजह से रिजार्ट के मालिक ने उसकी हत्या कर दी। यों यह घटना आए दिन होने वाले जघन्य अपराधों की ही अगली कड़ी है, मगर यह सत्ता और समाज के उस ढांचे को भी सामने करती है, जिसमें महिलाओं की सहज जिंदगी लगातार मुकिल बनी हुई है, संकटग्रस्त एवं असुरक्षित है। यह घटना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्न अभियान की भी धज्जियां उड़ाती है। इस घटना ने समूचे प्रासन और पुलिस की कायौली पर सवालिया निान लगाया है। हालत यह है कि अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने या फिर रसूखदार आरोपियों को बचाने की मांा से सही समय पर कार्रवाई करने को लेकर भी टालमटोल की गई है। गौरतलब है कि मुख्य आरोपी रिजार्ट का मालिक भाजपा नेता और पूर्व राज्यमंत्री का बेटा है और उसका भाई भी उत्तराखंड में अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग का उपाध्यक्ष था।

अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे उन क्षेत्रों में जा रही हैं, जहां उनके जाने की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। वे टैक्सी, बस, ट्रक से लेकर जेट तक चला-उड़ा रही हैं। सेना में भर्ती होकर दो की रक्षा कर रही है। अपने दम पर व्यवसायी बन रही हैं। होटलों की मालिक हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाखों रुपये की नौकरी छोड़कर स्टार्टअप ुरू कर रही हैं। वे विदेों में पढ़कर नौकरी नहीं, अपने गांव का सुधार करना चाहती हैं। अब सिर्फ अध्यापिका, नर्स, बैंकों की नौकरी, डॉक्टर आदि बनना ही लड़कियों के क्षेत्र नहीं रहे, वे अन्य क्षेत्रों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इस तरह नारी एवं बालिका ाक्ति ने अपना महत्व तो दुनिया समझाया है, लेकिन नारी एवं बालिका के प्रति हो रहे अपराधों में कमी न आना, एक चिन्तनीय प्रन है। सरकार ने सख्ती बरती है, लेकिन आम पुरुष की सोच को बदलने बिना नारी एवं बालिका सम्मान की बात अधूरी ही रहेगी। इस अधूरी सोच को बदलना नये भारत का संकल्प हो, इसीलिये तो इस दो के सर्वोच्च पद पर द्रौपदी मुर्मू को आसीन किया गया हैं। वह प्रतिभा पाटिल के बाद दो की दूसरी महिला राष्ट्रपति हैं। अमेरिका आज तक किसी महिला को राष्ट्रपति नहीं बना सका, जबकि भारत में इंदिरा गांधी तो 1966 में ही प्रधानमंत्री बन गई थीं। असल में, यही तो स्त्री ाक्ति की असली पूजा है। अब स्त्री ाक्ति के प्रति सम्मान भावना ही नहीं, सह-अस्तित्व एवं सौहार्द की भावना जागे, तभी उनके प्रति हो रहे अपराधों में कमी आ सकेगी।

भ्रष्टाचार के ट्विन टावर का ध्वस्त होना व्यर्थ ना जाये

हमारा भ्रष्ट चरित्र देश के समक्ष गंभीर समस्या बन चुका है। आजादी का अमृत महोत्सव मनाने तक की हमारी आजादी की यात्रा में पहली बार नोएडा में सन्नाटे के बीच हुए जोरदार धमाके के बीच साहसिक तरीके से ट्विन टावर रूपी भ्रष्टता के किले को ध्वस्त किया गया। इससे उठे धूल के गुबार के बीच भ्रष्टाचार की नींव पर बने अवैध ट्विन टावर को जमींदोज कर दिया गया। 3700 किलो विस्फोटक की मदद से यह इमारतें कुछ ही सैकेंड में ध्वस्त हो गईं। इस विस्फोट से उठे गुबार से ऐसी भ्रष्टता की ऊंचे किले गढ़ने वालों को कड़ा सबक मिला है। हजारों करोड़ की इस इमारत को जमींदोज करने का लक्ष्य भी यही है कि राजनीति से लेकर प्रशासन तक, समाजसेवियों से लेकर धर्मगुरुओं तक, व्यापारियों से लेकर उद्योगपतियों तक, डाक्टरों से लेकर इंजीनियर, वकील, सीए, न्यायाधिपति तक, स्कूलों से लेकर अस्पतालों तक फैले भ्रष्टाचार के ऊंचे किलो को ध्वस्त करना राष्ट्र की सबसे जरूरी प्राथमिकताओं में एक है।

आजादी के पचहतर वर्षों में हमने नैतिक, ईमानदारी एवं चरित्र की धारणाओं को पुष्ट करने की बजाय देश में यह आम धारणा को पनपाया है कि अपने यहां सब चलता है। नियम-कानूनों को धता बताते हुए जैसे भी हो जमीन लेकर बिल्डिंग खड़ी कर दो, एक बार फ्लैट्स बिक गए, लोग उसमें रहने लगे तो फिर कुछ नहीं होता। भ्रष्टाचार का टावर कहे जाने वाले इस ट्विन टावर को गिराए जाने से इस धारणा को तोड़ने में थोड़ी मदद जरूर मिलेगी। लेकिन इस प्रकरण ने कई गंभीर सवाल उठाए हैं। एक तो यही कि अवैध बिल्डिंग तो गिरी, पर बिल्डिंग बनाने वालों का क्या? आखिर बिना सरकारी, प्रशासनिक, न्यायिक संरक्षण, पुलिस के इतनी बड़ी बिल्डिंगें कैसे खड़ी हो जाती है? इस सिलसिले में पहली बात यह याद रखने की है कि बिल्डिंग को पूरी तरह से कंस्ट्रक्शन कंपनी के खर्च पर गिराया गया है। दूसरी और ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह कि इसे गलत तरीके से मंजूरी देने वाले भी कार्रवाई के दायरे में लिए गए हैं। कई अफसरों के खिलाफ कार्रवाई हुई है और जांच चल रही है। फिर भी यह बहस अपनी जगह है ही कि क्या पूरी तरह से तैयार ऐसी बिल्डिंगों को यों जमींदोज करना ही सबसे अच्छा विकल्प है? ऐसे ही अन्य भ्रष्ट टावरों का क्या हश्र होना चाहिए।

इस तरह ध्वस्त करने की बजाय क्या सरकार द्वारा जब्त कर उन्हें चिकित्सा, पर्यावरण, शिक्षा, रक्षा या किसी और रूप में इसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था? सब जानते हैं कि नियम-कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए बनाई गई यह देश की इकलौती इमारत नहीं है। तो क्या बाकी इमारतों को भी इसी तरह ध्वस्त करना पड़ेगा? जाहिर है, ऐसी कार्रवाई सांकेतिक ही हो सकती है। सो इस ट्विन टावर के जरिए जो संदेश देना था, वह दिया जा चुका है। अब आगे का काम यह सुनिश्चित करना है कि इस संदेश को बिल्डर-अफसर-नेता बिरादरी गंभीरता से ग्रहण करे और अपने कार्य व्यवहार में आवश्यक बदलाव लाए। हमारी बन चुकी मानसिकता में आचरण की पैदा हुई बुराइयों ने पूरे तंत्र और पूरी व्यवस्था को प्रदूषित कर दिया है। स्वहित और स्वयं के लाभ में ही लोकहित है, यह सोच हमारे समाज में घर कर चुकी है। यह रोग मानव की वृत्ति को इस तरह जकड़ रहा है कि हर व्यक्ति लोक के बजाए स्वयं के लिए सब कुछ कर रहा है। देश के धन को जितना अधिक अपने

लिए निचोड़ा जा सके, निचोड़ लो। देश के सौ रुपये का नुकसान हो रहा है और हमें एक रुपया प्राप्त हो रहा है तो बिना एक पल रुके ऐसा हम कर रहे हैं। भ्रष्ट आचरण और व्यवहार अब हमें पीड़ा नहीं देता। सबने अपने-अपने निजी सिद्धांत बना रखे हैं, भ्रष्टाचार की परिभाषा नई बना रखी है।

जब से नरेन्द्र मोदी एवं योगी आदित्यनाथ ने भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान छेड़ा है, उसका असर दिख रहा है। उत्तर प्रदेश में जब से योगी सरकार आई है तब से बिल्डर माफिया का नौकरशाही से नेटवर्क काफी हद तक टूट चुका है। नोएडा एवं गाजियाबाद अथॉरिटी एक समय भ्रष्टाचार के बड़े अड्डे बन गये थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। हजारों एकड़ सरकारी भूमि भूमाफिया के कब्जे से मुक्त कराई गई है। भूमाफिया और बाहुबलियों की लोगों को लूटकर बनाई गई संपत्तियों पर बुल्डोजर चल रहे हैं। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए ऐसे कदमों की सराहना हो रही है। ट्विन टॉवर तो ध्वस्त हो गए लेकिन यहां रहने वालों के सपने भी धूल में मिल गए। यद्यपि उन्हें पैसे लौटा दिए गए हैं लेकिन अपने आशियाने को सुंदर और सुविधाजनक बनाने के लिए खर्च किया गया धन व्यर्थ ही गया। नए सिरे से जिंदगी की शुरूआत करना आज के दौर में आसान नहीं है। उनके सामने चुनौतियां ही चुनौतियां हैं। नोएडा का विकास इसलिए किया गया था कि आम आदमी को एक अदद छत नसीब हो सके। बेहतर यही होगा कि सरकार बिल्डर बायर्स को लेकर के सख्त कानून बनाए ताकि किसी का घर उजड़ने की नौबत न आए, घर बनाने के सपनों पर ऐसे काले धब्बे न हो, संकट के बादल न हो। सरकार कोई ऐसी नीति बनाये जिससे वर्षों से पैसे देने के बावजूद लोगों को घर नहीं मिल पा रहे हैं, उन्हें घन दिलाये। एक बिल्डर कंपनी ने नहीं लगभग सभी बिल्डरों ने खुली लूट मचाई और बुकिंग के नाम पर करोड़ों की उगाही की। एक प्रोजेक्ट पूरा नहीं हुआ कि दूसरे प्रोजेक्ट का ऐलान कर दिया गया। नामी खिलाड़ियों और फिल्मी सितारों के चेहरों का सहारा लेकर पब्लिसिटी का ऐसा जाल बुना गया कि बिल्डर कंपनियों के बुने जाल में आम आदमी फंसता ही चला गया उन्हें आज तक न आशियाना मिला और न अपनी मेहनत की कमाई। अनेक एसोसिएशनें आज भी कानूनी लड़ाई लड़ रही हैं। खरीदारों को अपने खून-पसीने की कमाई वापस मिलने की कोई उम्मीद भी नहीं है। ट्विन टॉवर गिरने के बाद बिल्डरों की भ्रष्टता पर अब सख्ती से शिकंजा कसा जाना चाहिए। एक लंबी काली रात के बाद उजाला हुआ है। भारत के मानचित्र से एक काला धब्बा मिट गया है। इतना लंबा कानूनी सफर कर यह उजाला हुआ है, लेकिन जहां आज खड़े हैं वहां अनगिनत चुनौतियां हैं। पिछले घावों को भरना है। खुद के घर का स्वाद भी चखना है। इस इन्द्रधनुषी धरती पर कोई शोषण नहीं हो, किसी की गरिमा को चोट नहीं पहुंचे। भ्रष्टता के नाम पर आम आदमी पिसता ही नहीं रहे, बीते को भुलाकर उदाहरणीय भविष्य बनावें। तभी नई व्यवस्था विश्वसनीय बनेगी।

अपनी सब बुराइयों, कमियों को व्यवस्था प्रणाली की बुराइयां, कमजोरियां बताकर पल्ला झाड़ लो और साफ बच निकलो। कुछ मानवीय संस्थाएं इस दिशा में काम कर रही हैं कि प्रणाली शुद्ध हो, पर इनके प्रति लोग शब्दों की हमदर्दी बताते हैं, योगदान का फर्ज कोई नहीं निभाना चाहता। सच तो यह है कि बुराई लोकतांत्रिक व्यवस्था में नहीं, बुरे तो हम हैं। इसलिये बुरे हैं कि हम बुराई को होते हुए देखकर भी मौन रहते हैं। जो इन बुराइयों को लोकतांत्रिक व्यवस्था की कमजोरियां बताते हैं, वे भयंकर भ्रम में हैं। बुराई हमारे चरित्र में है इसलिए व्यवस्था बुरी है। हमारा रूपांतरण होगा तो व्यवस्था का तंत्र सुधरेगा, भ्रष्टता समाप्त होगी। वैसे हर क्षेत्र में लगे लोगों ने ढलान की ओर अपना मुंह कर लिया है चाहे वह क्षेत्र राजनीति का हो, निर्माण का हो, चिकित्सा को हो, सेवा का हो, धर्म का हो, न्याय का हो, पत्रकारिता का हो, प्रशासन का हो, सिनेमा का हो, शिक्षा का हो या व्यापार का हो। राष्ट्रद्रोही स्वभाव एवं भ्रष्टता हमारे लहू में रच चुका है। यही कारण है कि हमें कोई भी कार्य राष्ट्र के विरुद्ध नहीं लगता और न ही ऐसा कोई कार्य हमें विचलित करता है। सत्य और न्याय तो अति सरल होता है। तर्क और कारणों की आवश्यकता तो हमेशा स्वार्थी झूठ को ही पड़ती है।

जहां नैतिकता और निष्पक्षता नहीं, वहां फिर भरोसा नहीं, विश्वास नहीं, न्याय नहीं। यह ट्विन टावर वर्षों से विवादों में था और देश में बिल्डर-नौकरशाही-राजनेताओं की सांठगांठ का प्रतीक बन गया था। ईंट-चूने के गैर-कानूनी भवनों को गिराना तो बहुत सराहनीय है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरुरी है- भ्रष्टता के किलों को गिराना! किसकी हिम्मत है, जो इनको गिराएगा? इस भ्रष्टता की ऊंची मीनार का ध्वस्त होना ईमानदारी के साम्राज्य की शुरूआत है।

अपनी सब बुराइयों, कमियों को व्यवस्था प्रणाली की बुराइयां, कमजोरियां बताकर पल्ला झाड़ लो और साफ बच निकलो। कुछ मानवीय संस्थाएं इस दिशा में काम कर रही हैं कि प्रणाली शुद्ध हो, पर इनके प्रति लोग शब्दों की हमदर्दी बताते हैं, योगदान का फर्ज कोई नहीं निभाना चाहता। सच तो यह है कि बुराई लोकतांत्रिक व्यवस्था में नहीं, बुरे तो हम हैं। इसलिये बुरे हैं कि हम बुराई को होते हुए देखकर भी मौन रहते हैं। जो इन बुराइयों को लोकतांत्रिक व्यवस्था की कमजोरियां बताते हैं, वे भयंकर भ्रम में हैं। बुराई हमारे चरित्र में है इसलिए व्यवस्था बुरी है। हमारा रूपांतरण होगा तो व्यवस्था का तंत्र सुधरेगा, भ्रष्टता समाप्त होगी। वैसे हर क्षेत्र में लगे लोगों ने ढलान की ओर अपना मुंह कर लिया है चाहे वह क्षेत्र राजनीति का हो, निर्माण का हो, चिकित्सा को हो, सेवा का हो, धर्म का हो, न्याय का हो, पत्रकारिता का हो, प्रशासन का हो, सिनेमा का हो, शिक्षा का हो या व्यापार का हो।

सुखी एवं समृद्ध जीवन के आधार है गणेशजी

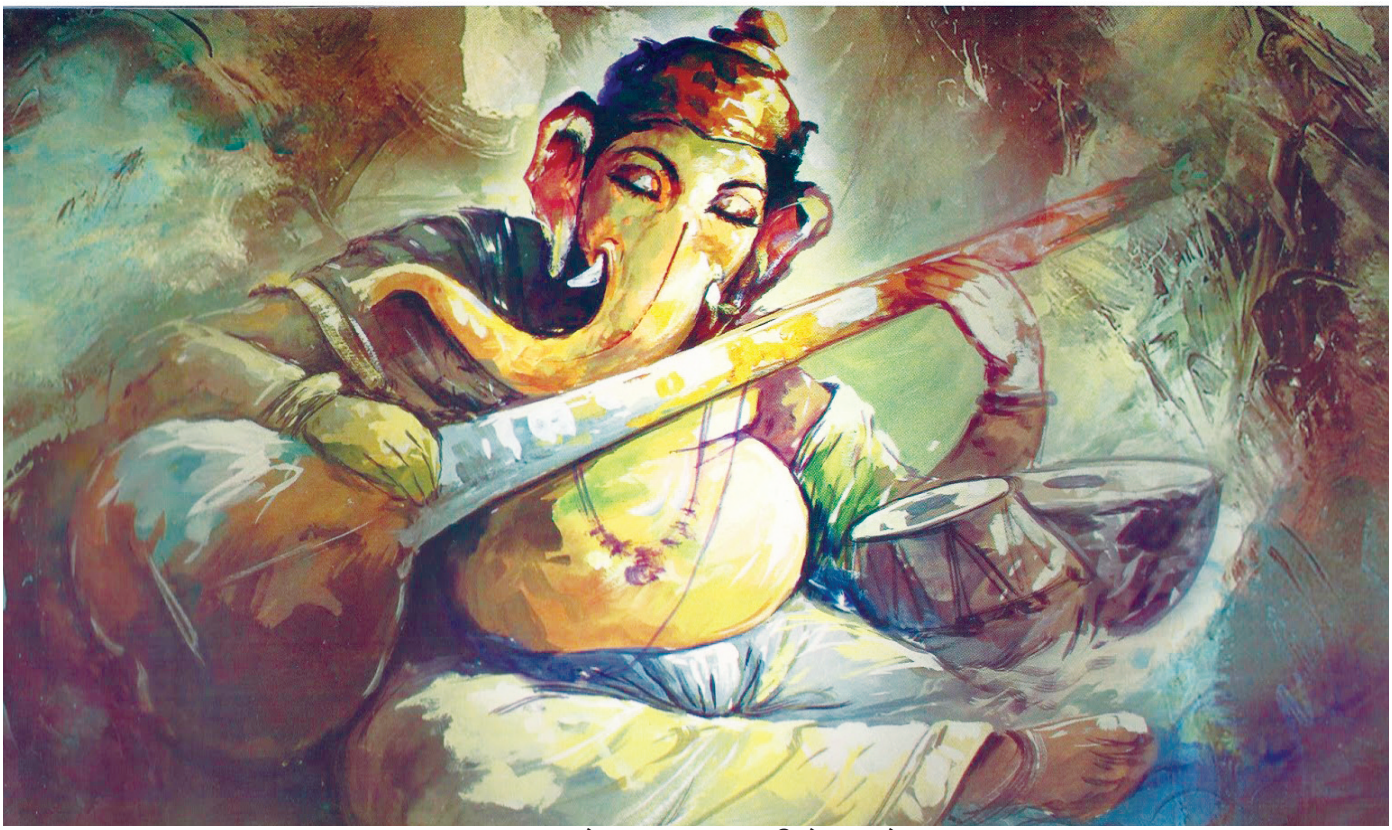

भगवान गणेश भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, वे सात्विक देवता हैं और विघ्नहर्ता हैं। वे न केवल भारतीय संस्कृति एवं जीवनशैली के कण-कण में व्याप्त है बल्कि विदेशों में भी घर-कारों-कार्यालयों एवं उत्पाद केन्द्रों में विद्यमान हैं। हर तरफ गणेश ही गणेश छाए हुए है। मनुष्य के दैनिक कार्यों में सफलता, सुख-समृद्धि की कामना, बुद्धि एवं ज्ञान के विकास एवं किसी भी मंगल कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने हेतु गणेशजी को ही सर्वप्रथम पूजा जाता है, याद किया जाता है। प्रथम देव होने के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है, लोकनायक का चरित्र हैं। भाद्रपद शुक्ल की चतुर्थी को सिद्धि विनायक भगवान गणेश का जन्मोत्सव मनाया जाता है। गणेश के रूप में विष्णु शिव-पावर्ती के पुत्र के रूप में जन्म थे। उनके जन्म पर सभी देव उन्हें आशीर्वाद देने आए थे। विष्णु ने उन्हें ज्ञान का, ब्रह्मा ने यश और पूजन का, धर्मदेव ने धर्म तथा दया का आशीर्वाद दिया। शिव ने उदारता, बुद्धि, शक्ति एवं आत्म संयम का आशीर्वाद

उनके जन्म पर सभी देव उन्हें आशीर्वाद देने आए थे। विष्णु ने उन्हें ज्ञान का, ब्रह्मा ने यश और पूजन का, धर्मदेव ने धर्म तथा दया का आशीर्वाद दिया। शिव ने उदारता, बुद्धि, शक्ति एवं आत्म संयम का आशीर्वाद दिया। लक्ष्मी ने कहा कि जहां गणेश रहेंगे, वहां मैं रहूंगी।ह्न सरस्वती ने वाणी, स्मृति एवं वक्तृत्व-शक्ति प्रदान की। सावित्री ने बुद्धि दी।

दिया। लक्ष्मी ने कहा कि जहां गणेश रहेंगे, वहां मैं रहूंगी।ह्न सरस्वती ने वाणी, स्मृति एवं वक्तृत्व-शक्ति प्रदान की। सावित्री ने बुद्धि दी। त्रिदेवों ने गणेश को अग्रपूज्य, प्रथम देव एवं रिद्धि-सिद्धि प्रदाता का वर प्रदान किया। इसलिये वे सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक लोकप्रियता वाले देव है। वे भारत सहित सिंध और तिब्बत से लेकर जापान और श्रीलंका तक की संस्कृति में समाये हैं। वे जैन सम्प्रदाय में ज्ञान का संकलन करने वाले गणाध्यक्ष के रूप में मौजूद रहते हैं तो बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का विश्वास है कि गणेश की स्तुति के बिना मंत्र सिद्धि नहीं हो सकती। नेपाली एवं तिब्बती वज्रयानी बौद्ध अपने आराध्य तथागत की मूर्ति के बगल में गणेश को स्थापित करते हैं।

भारतीय संस्कृति एक ईश्वर की विशाल कल्पना के साथ अनेकानेक देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना से फलती-फूलती रही है। सब देवताओं की पूजा से प्रथम गणपति की पूजा का विधान है। दरअसल गणेश सुख-

समृद्धि, वैभव एवं आनंद के अधिष्ठाता हैं। बड़े एवं साधारण सभी प्रकार के लौकिक कार्यों का आरंभ उनके दिव्य स्वरूप का स्मरण करके किया जाता है। व्यापारी अपने बही-खातों पर श्री गणेशाय नमः लिख कर नये वर्ष का आरंभ करते हैं। प्रत्येक कार्य का शुभारंभ गणपति पूजन एवं गणेश वंदना से किया जाता है। विवाह का मांगलिक अवसर हो या नए घर का शिलान्यास, मंदिर में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा का उत्सव हो या जीवन में षोड्स संस्कार का प्रसंग, गणपति का स्मरण सर्वप्रथम किया जाता है। सब जगह एक मत से गणेशजी की विघ्नहर्ता शक्ति को स्वीकार किया गया है।

दरअसल गणेश सुख-समृद्धि, रिद्धि-सिद्धि, वैभव, आनन्द, ज्ञान एवं शुभता के अधिष्ठाता देव हैं। संसार में अनुकूल के साथ प्रतिकूल, शुभ के साथ अशुभ, ज्ञान के साथ अज्ञान, सुख के साथ दुःख घटित होता ही है। प्रतिकूल, अशुभ, अज्ञान एवं दुःख से परेशान मनुष्य के लिये गणेश ही तारणहार है। गणेशजी की आकृति विचित्र है, किन्तु इस आकृति के आध्यात्मिक संकेतों के रहस्य को यदि समझने का प्रयास किया जाये तो सनातन लाभ प्राप्त हो सकता है। क्योंकि गणेश अर्थात शिव पुत्र अर्थात शिवत्व प्राप्त करना होगा अन्यथा क्षेम एवं लाभ की कामना सफल नहीं होगी। गजानन गणेश की व्याख्या करें तो ज्ञात होगा कि ह्यगजह्ल दो व्यंजनों से बना है। ह्यजह्ल जन्म अथवा उद्गम का प्रतीक है तो ह्यगह्ल प्रतीक है गति और गंतव्य का। अर्थात गज शब्द उत्पत्ति और अंत का संकेत देता है-जहाँ से आये हो वहीं जाओगे। जो जन्म है वही मृत्यु भी है। ब्रह्म और जगत के यथार्थ को बनाने वाला ही गजानन गणेश है।

गणेशजी की सम्पूर्ण शारीरिक रचना के पीछे भगवान शिव की व्यापक सोच रही है। एक कुशल, न्यायप्रिय एवं सशक्त शासक एवं देव के समस्त गुण उनमें समाहित किये गये हैं। गणेशजी का गज मस्तक हैं अर्थात वह बुद्धि के देवता हैं। वे विवेकशील हैं। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त कुशाग्र हैं। हाथी की भ्रांति उनकी प्रवृत्ति प्रेरणा का उद्गम स्थान धीर, गंभीर, शांत और स्थिर चेतना में है। हाथी की आंखें अपेक्षाकृत बहुत छोटी होती हैं और उन आँखों के भावों को समझ पाना बहुत कठिन होता है। दरअसल गणेश तत्ववेत्ता के आदर्श रूप हैं। वर्तमान राजनीतिज्ञों एवं शासनाध्यक्षों को गणेशजी से प्रेरणा लेनी चाहिए। गण के नेता में गुरुता और गंभीरता होनी चाहिए। उनके स्थूल शरीर में वह गुरुता निहित है। उनका विशाल शरीर सदैव सतर्क रहने तथा सभी परिस्थितियों एवं कठिनाइयों का सामना करने के लिए तत्पर रहने की भी प्रेरणा देता है। उनका लंबोदर दूसरों की बातों की गोपनीयता, बुराइयों, कमजोरियों को स्वयं में समाविष्ट कर लेने की शिक्षा देता है तथा सभी प्रकार की निंदा, आलोचना को अपने उदर में रख कर अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है। छोटा मुख कम, तर्कपूर्ण तथा मृदुभाषी होने का द्योतक है।

गणेश का व्यक्तित्व रहस्यमय हैं, जिसे पढ़ पाना एवं समझ पाना हर किसी के लिये संभव नहीं है। शासक भी वही सफल होता है जिसके मनोभावों को पढ़ा और समझा न जा सके। इस प्रकार अच्छा शासक वही होता है जो दूसरों के मन को तो अच्छी तरह से पढ़ ले परन्तु उसके मन को कोई न समझ सके। दरअसल वे शौर्य, साहस तथा नेतृत्व के भी प्रतीक हैं। उनके हेरांब रूप में युद्धप्रियता का, विनायक रूप में यक्षों जैसी विकरालता का

और विघ्नेश्वर रूप में लोकरंजक एवं परोपकारी स्वरूप का दर्शन होता है। गण का अर्थ है समूह। गणेश समूह के स्वामी हैं इसीलिए उन्हें गणाध्यक्ष, लोकनायक, गणपति आदि नामों से पुकारा जाता है। गज मुख पर कान भी इस बात के प्रतीक हैं कि शासक जनता की बात को सुनने के लिए कान सदैव खुले रखें। यदि शासक जनता की ओर से अपने कान बंद कर लेगा तो वह कभी सफल नहीं हो सकेगा। शासक को हाथी की ही भांति शक्तिशाली एवं स्वाभिमानी होना चाहिए। अपने एवं परिवार के पोषण के लिए शासक को न तो किसी पर निर्भर रहना चाहिए और न ही उसकी आय के स्रोत ज्ञात होने चाहिए। हाथी बिना झुके ही अपनी सूँड की सहायता से सब कुछ उठा कर अपना पोषण कर सकता है। शासक को किसी भी परिस्थिति में दूसरों के सामने झुकना नहीं चाहिए।

गणेशजी सात्विक देवता हैं उनके पैर छोटे हैं जो कर्मेन्द्रिय के सूचक और सत्व गुणों के प्रतीक हैं। मूषक

गणेश का व्यक्तित्व रहस्यमय हैं, जिसे पढ़ पाना एवं समझ पाना हर किसी के लिये संभव नहीं है। शासक भी वही सफल होता है जिसके मनोभावों को पढ़ा और समझा न जा सके। इस प्रकार अच्छा शासक वही होता है जो दूसरों के मन को तो अच्छी तरह से पढ़ ले परन्तु उसके मन को कोई न समझ सके। दरअसल वे शौर्य, साहस तथा नेतृत्व के भी प्रतीक हैं।

गणपति का वाहन है जो चंचलता एवं दूसरों की छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने का प्रेरक है। दरअसल मूषक अत्यंत छोटा एवं क्षुद्र प्राणी है। इसे अपना वाहन बना कर गणपति ने उसकी गरिमा को बढ़ाया है और यह संदेश दिया है कि गणनायक को तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति के प्रति भी स्नेहभाव रखना चाहिए। गणेशजी की चार भुजाएँ चार प्रकार के भक्तों, चार प्रकार की सृष्टि और चार पुरुषार्थों का ज्ञान कराती है। गणेशजी को प्रथम लिपिकार माना जाता है उन्होंने ही देवताओं की प्रार्थना पर वेद व्यासजी द्वारा रचित महाभारत को लिपिबद्ध किया था।

वर्तमान काल में स्वतंत्रता की रक्षा, राष्ट्रीय चेतना, भावनात्मक एकता और अखंडता की रक्षा के लिए गणेशजी की पूजा और गणेश चतुर्थी के पर्व का उत्साहपूर्वक मनाने का अपना विशेष महत्व है। गणेशजी को शुद्ध घी, गुड और गेहूँ के लड्डू- मोदक बहुत प्रिय हैं। ये प्रसन्नता अथवा मुदित चित्त के प्रतीक हैं। ये तीनों चीजें सात्विक एवं स्निग्ध हैं अर्थात उत्तम आहार हैं। सात्विक आहार बुद्धि में स्थिरता लाता है। उनका उदर बहुत लम्बा है। ऋद्धि-सिद्धि गणेशजी की पत्नियाँ हैं। वे प्रजापति विश्वकर्ता की पुत्रियां हैं। गणेश की पूजा यदि विधिवत की जाए, तो इनकी पतिव्रता पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि भी प्रसन्न होकर घर-परिवार में सुख-शांति-समृद्धि और संतान को निर्मल विद्या-बुद्धि देती है। सिद्धि से ह्यक्षेमह्ल और ऋद्धि से ह्यलाभह्ल नाम के शोभा सम्पन्न दो पुत्र हुए। जहां भगवान गणेश विघ्नहर्ता हैं तो उनकी पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि यशस्वी, वैभवशाली व प्रतिष्ठित बनाने वाली होती है। वहीं शुभ-लाभ हर सुख-सौभाग्य देने के साथ उसे स्थायी और सुरक्षित रखते हैं। जन-जन के कल्याण, धर्म के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने एवं सुख-समृद्धि-निर्विघ्न शासन व्यवस्था स्थापित करने के कारण मानव-जाति सदा उनकी ऋणी रहेगी। आज के शासनकताओं को गणेश के पदचिन्हों पर चलने की जरूरत है।

मुद्रा स्फीति के मोर्चे पर आई अच्छी खबर

माह जुलाई 2022 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर भारत में पिछले 5 माह के सबसे निचले स्तर 6.71 प्रतिशत तक नीचे आ गई है, यह जून 2022 माह में 7.01 प्रतिशत थी। इसका मुख्य कारण खाद्य पदार्थों की महंगाई दर में आई कमी है। हालांकि मूलभूत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई दर तो पिछले 10 माह के सबसे निचले स्तर अर्थात 5.79 प्रतिशत पर आ गई है। माह जून 2022 की तुलना में माह जुलाई 2022 में ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में मुद्रा स्फीति की दर में सुधार हुआ है। यह हम सभी भारतीयों के लिए हर्ष का विषय हो सकता है कि भारत में मुद्रा स्फीति की दर में सुधार दरअसल वस्तुओं की आपूर्ति में हुए सुधार के चलते सम्भव हुआ है। अर्थात, पहिले देश में लगातार बढ़ रही महंगाई के कारणों में 65 प्रतिशत कारण आपूर्ति पक्ष के कारक जिम्मेदार थे जो अब घटकर 58 प्रतिशत पर आ गए हैं। भारत में वस्तुओं की आपूर्ति में बहुत सुधार हुआ है और अब चूंकि समय पर वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ी है जिसके चलते मुद्रा स्फूर्ति की दर में भी कमी दृष्टिगोचर हुई है। साथ ही, वैश्विक स्तर पर आपूर्ति सम्बंधी विघ्न भी कुछ कम हुए हैं। इसके कारण मुद्रा स्फीति के बढ़ने में मांग सम्बंधी कारकों का प्रभाव 40 प्रतिशत हो गया है।

भारत के साथ ही अन्य देशों में भी कोरोना महामारी के बाद से मुद्रा स्फीति (महंगाई) बहुत तेजी से बढ़ने लगी है। अमेरिका एवं कई विकसित देशों में तो उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति 9 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है जो कि पिछले 50 वर्षों की अवधि में सबसे अधिक महंगाई की दर है। आगे आने वाले समय में, भारत में, महंगाई की दर के और भी नीचे आने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है और इसके मार्च 2023 में 5 प्रतिशत से नीचे रहने की उम्मीद की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम कुछ नरम होना शुरू हो गए हैं।

हालांकि भारत में अप्रेल से जून 2022 के बीच मुद्रा स्फीति की दर में गिरावट दर्ज की गई है। परंतु, भारत में अभी भी कुछ राज्य हैं जिनमे जुलाई 2022 में महंगाई की दर 7 प्रतिशत से अधिक के स्तर पर बनी हुई है। भारत के कुल 23 राज्यों में से 15 राज्यों में महंगाई की दर 6 प्रतिशत से अधिक है (अप्रेल 2022 माह में इस श्रेणी में 21 राज्य शामिल थे) और 8 राज्यों में महंगाई दी दर 6 प्रतिशत से नीचे आ गई है। तेलंगाना राज्य में जुलाई 2022 में महंगाई की दर सबसे अधिक अर्थात 8.58 प्रतिशत थी जो जून 2022 के 10.05 प्रतिशत के स्तर से नीचे आई है।

भारत के साथ ही अन्य देशों में भी कोरोना महामारी के बाद से मुद्रा स्फीति (महंगाई) बहुत तेजी से बढ़ने लगी है। अमेरिका एवं कई विकसित देशों में तो उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति 9 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है जो कि पिछले 50 वर्षों की अवधि में सबसे अधिक महंगाई की दर है।

आगे आने वाले समय में, भारत में, महंगाई की दर के और भी नीचे आने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है और इसके मार्च 2023 में 5 प्रतिशत से नीचे रहने की उम्मीद की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम कुछ नरम होना शुरू हो गए हैं। परंतु, अमेरिकी डॉलर के लगातार मजबूत होने और भारतीय रुपए के लगातार कमजोर होते जाने से आयातित महंगाई की दर, भारत में महंगाई की दर को तेजी से नीचे आने से रोके हुए है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मौद्रिक नीति के माध्यम से रेपो दर में लगातार वृद्धि की जा रही है ताकि देश के नागरिक अधिक बचत करने की ओर आकर्षित हों एवं अपने खर्चों में कटौती करें और बाजार में उत्पादों की मांग कम हो जिससे मुद्रा स्फीति की दर में कमी हो। हालांकि यह एक नकारात्मक उपाय माना जाता है क्योंकि नागरिकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले ऋण, बढ़ती ब्याज दरों के चलते, उनकी जेब पर भारी पड़ने लगते हैं, जिससे वे अन्य वस्तुओं की खरीद में कटौती करने को मजबूर होते हैं और इस प्रकार वस्तुओं की मांग में कमी की जाती है। परंतु इसके विपरीत यदि वस्तुओं की आपूर्ति में सुधार किया जाकर, वस्तुओं की उपलब्धता को बढ़ाया जाय, ताकि बढ़ी हुई मांग को पूरा किया जा सके तो यह एक सकारात्मक उपाय माना जाता है। और, माह जुलाई 2022 में महंगाई की दर में हुई कमी के पीछे सकारात्मक कारक ही अधिक जिम्मेदार हैं। प्राचीन भारत के इतिहास में महंगाई नामक शब्द का वर्णन ही नहीं मिलता है। क्योंकि, ग्रामीण इलाकों में कुटीर उद्योगों के माध्यम से वस्तुओं का उत्पादन प्रचुर मात्रा में किया जाता था एवं वस्तुओं की आपूर्ति सदैव ही सुनिश्चित रखी जाती थी अतः मांग एवं आपूर्ति में असंतुलन पैदा ही नहीं होने दिया जाता था। बल्कि, शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि चूंकि वस्तुओं की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में रहती थी अतः वस्तुओं के दाम कम होते रहते थे। भारत सहित पूरे विश्व में इसी विधि को अपनाकर महंगाई नामक राक्षस पर अंकुश लगाया जा सकता है।

प्राचीन भारत के इतिहास में महंगाई नामक शब्द का वर्णन ही नहीं मिलता है। क्योंकि, ग्रामीण इलाकों में कुटीर उद्योगों के माध्यम से वस्तुओं का उत्पादन प्रचुर मात्रा में किया जाता था एवं वस्तुओं की आपूर्ति सदैव ही सुनिश्चित रखी जाती थी अतः मांग एवं आपूर्ति में असंतुलन पैदा ही नहीं होने दिया जाता था। बल्कि, शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि चूंकि वस्तुओं की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में रहती थी अतः वस्तुओं के दाम कम होते रहते थे। भारत सहित पूरे विश्व में इसी विधि को अपनाकर महंगाई नामक राक्षस पर अंकुश लगाया जा सकता है।

दूसरे, ब्याज दरों में लगातार की जाने वाली बढ़ौतरी से कर्ज लेने वाली कम्पनियों एवं उपभोक्ताओं के कर्ज की लागत बढ़ जाती है एवं उनकी लाभप्रदता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिससे इन कम्पनियों एवं उपभोक्ताओं पर दबाव बढ़ता है और यह सीधे तौर पर देश के आर्थिक विकास को विपरीत रूप से प्रभावित कर सकता है। इसलिए ब्याज दरों को बढ़ाने की भी अपनी सीमाएं रहती हैं। इसी कारण से कहा जाता है कि महंगाई को यदि नियंत्रण में लाना है तो कभी कभी विकास दर से समझौता करना पड़ सकता है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रेपो रेट में अभी तक की गई 140 बिंदुओं की वृद्धि के कारण सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम तथा खुदरा उपभोक्ताओं पर, ब्याज के रूप में, 42,500 करोड़ रुपए का अतिरिक्त भार पड़ने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। इतनी बड़ी राशि को अन्यथा यह वर्ग वस्तुओं की खरीद पर खर्च सकता था और अब इन वस्तुओं की मांग एवं उत्पादन दोनो ही कम होंगे।

दरअसल अमेरिका एवं यूरोपीयन देशों में महंगाई दर को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार वृद्धि की जा रही है जिससे अमेरिकी संस्थानों एवं अन्य विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों में किए गए निवेश को वापस लाकर अमेरिकी एवं यूरोपीयन बाजारों में निवेश किया जा रहा है जिससे इन देशों की मुद्राओं पर भारी दबाव आ रहा है और अमेरिकी डॉलर की बाजार कीमत लगातार बढ़ती जा रही है। विकासशील देशों की मुद्राओं का अवमूल्यन होने से इन देशों में आयातित सामान महंगा हो रहा है जिससे इन देशों में आयातित महंगाई की दर बढ़ती जा रही है।

भारत में भी महंगाई बढ़ने के कारणों में अंतरराष्ट्रीय कारक अधिक जिम्मेदार हैं। आंतरिक स्थिति को तो केंद्र सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने बहुत बड़ी हद्द तक नियंत्रित कर रक्खा है। ब्याज दरों को बढ़ाकर कुछ समय के लिए तो मांग में कमी की जा सकती है।

साथ ही, जब बाजार पूर्णतः प्रतिस्पर्धी के रूप में कार्य कर रहा हो तभी मौद्रिक नीति के माध्यम ब्याज दरों में परिवर्तन कर वस्तुओं की मांग को कम अथवा अधिक किया जा सकता है। परंतु, लम्बे समय के लिए यदि मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण रखना हो तो वस्तुओं की उपलब्धता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अतः वैश्विक स्तर पर भारत की पुरातन आर्थिक नीतियों के माध्यम से महंगाई पर सफलतापूर्वक अंकुश लगाया जा सकता है।

कस्तूरबा बालिका विद्यालय में दिव्यांग छात्राओं को वितरण किया गया वस्त्र और मिठाईयां

कस्तूरबा विद्यालय प्रांगण में दिव्यांग छात्राओं को वस्त्र और मिठाई का वितरण करते विधायक रामनारायण मंडल व अनुपम गर्ग

राजो पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

पूरे दो में दो के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस के अवसर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं के द्वारा सेवा पखवाड़ा के रूप में मनाया जा रहा है. इसी क्रम में स्थानीय कस्तूरबा बालिका विद्यालय के दिव्यांग छात्राओं को भारतीय जनता पार्टी के व्यवसायिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अनुपम गर्ग के द्वारा वस्त्र और मिठाई प्रदान कर नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस को सेवा फखवाड़ा के रूप में मनाया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक रामनारायण मंडल के कर कमलों द्वारा कस्तूरबा बालिका विद्यालय के छात्राओं को वस्त्र एवं मिठाई देकर प्रोत्साहित किया. इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी जिला ाखा बांका के सभी कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी गण उपस्थित थे.

नेहरू युवा केंद्र के द्वारा युवा महोत्सव का हुआ आयोजन

मुख्य अतिथि जिलाधिकारी आंुल कुमारने दीप प्रज्वलित कर किया कार्यक्रम का ुभारंभ

राजो पंजिकार ब्यूरो चीफ

युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वधान में नेहरू युवा केंद्र बांका द्वारा बुधवार को ाहर के टाउन हॉल बांका में जिला स्तरिय युवा उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया ' कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला युवा अधिकारी श्रवण कुमार सहगल द्वारा की गई ' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पदाधिकारी, बांका श्री आंुल कुमार, नगर परिषद सभापति श्री संतोष सिंह मौजूद थे' कार्यक्रम का ुभारंभ दीप प्रज्वलित कर एवं भगत सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम में चित्रकला प्रतियोगिता, कविता लेखन, फोटोग्राफी, भाषण, युवा संवाद प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करवाया गया ' जिला पदाधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि बांका जिले में जितनी भी महत्वकांक्षी योजनाएं युवाओं के लिए चलाई जा रही है, उन सब में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाएं और अपना योगदान देकर जिले का नाम और खुद अपने युवा के लिए दो के लिए कार्य करें और उन्होंने कहां कि प्रतियोगिताओं में भाग लेना जरूरी है न कि विजय हो। उन्होंने अपने यूपीएससी प्रिपरेान का उदाहरण देते हुए सभी युवाओं को लगातार मेहनत करने के लिए प्रेरित भी किया। जिला युवा अधिकारी ने अपने संबोधन में बताया कि युवा उत्सव युवाओं के लिए बहुत बड़ा मंच है, जिसमे जीतने वाले प्रतिभागी को राज्य स्तर पर प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलता है तथा उनके द्वारा सभी प्रतिभागियों को पूरी क्षमता के साथ प्रतियोगिता में अपना हुनर दिखाने के लिए प्रेरित भी किया ' भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली भूमि कुमारी, द्वितीय स्थान सुरज कुमार एवं तृतीय स्थान अमर कुमार। युवा संवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तेजस्वी कुमार, द्वितीय स्थान प्रिया राज एवं तृतीय स्थान सामंत सेल। फोटोग्राफी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आनंद कुमार, द्वितीय स्थान आजाद कुमार एवं तृतीय साकेत सुमन। कविता प्रतियोगिता में प्रथम स्थान बुलबुल आरा, द्वितीय स्थान मनिषा प्रविन एवं तसमीया जहां। चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान उज्जवल राज, द्वितीय स्थान पूजा कुमारी एवं तृतीय स्थान अवनी आर्य।

विकसित देशों की तुलना में भारत में तेजी से कम हो रही है गरीबी

विकसित देशों के कुछ अर्थशास्त्रियों ने भारत के विरुद्ध जैसे एक अभियान ही चला रखा है और भारत के आर्थिक विकास को वे पचा नहीं पा रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था ने अप्रेल-जून 2022 तिमाही में 13.5 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की है और वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत 8 प्रतिशत की विकास दर हासिल करने जा रहा है। इस प्रकार भारत न केवल आज विश्व की सबसे तेज गति से आगे बढ़ रही अर्थव्यवस्था बन गया है बल्कि भारत आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन गया है। परंतु, फिर भी इन अर्थशास्त्रियों द्वारा मानव विकास सूचकांक में भारत को श्रीलंका से भी नीचे बताया जाना, आश्चर्य का विषय है। यह विरोधाभास इन अर्थशास्त्रियों को कहीं दिखाई नहीं दे रहा है, जबकि श्रीलंका की हालत तो जग जाहिर है एवं आर्थिक दृष्टि से भारत एवं श्रीलंका की तुलना ही नहीं की जा सकती है। आर्थिक विकास के साथ मानव विकास भी जुड़ा है। भारत में आर्थिक विकास तो तेज गति से हो रहा है परंतु इन अर्थशास्त्रियों की नजर में भारत में मानव विकास में लगातार गिरावट आ रही है। यह एक सोचनीय विषय है।

अभी हाल ही में संयुक्त राष्ट्र डेवलपमेंट प्रोग्राम ने मानव विकास सूचकांक (एचडीआर) प्रतिवेदन

2021-22 जारी किया है। एचडीआर की वैश्विक रैंकिंग में भारत 2020 में 130वें पायदान पर था और 2021 में 132वें पर आ गया है, ऐसा इस प्रतिवेदन में बताया गया है। मानव विकास सूचकांक का आंकलन जीने की औसत उम्र, पढ़ाई, और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर किया जाता है। कोरोना महामारी के खंडकाल में भारत का इस सूचकांक में निचले स्तर पर आना कोई हैरान करने वाली बात नहीं होनी चाहिए। परंतु, वर्ष 2015 से वर्ष 2021 के बीच भारत को एचडीआर रैंकिंग में लगातार नीचे जाता हुआ दिखाया जा रहा है। जबकि, इसी अवधि में चीन, श्रीलंका, बांग्लादेश, यूएई, भूटान और मालदीव जैसे देशों की रैंकिंग ऊपर जाती हुई दिखाई जा रही है। श्रीलंका, बांग्लादेश एवं मालदीव जैसे देशों की आर्थिक स्थिति के बारे आज हम अनभिज्ञ नहीं है।

इसी प्रकार इन अर्थशास्त्रियों द्वारा भारत में गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या को भी बढ़ाचढ़ा कर पेश किया जा रहा है। इनके अनुसार, भारत के 23 करोड़ लोग प्रतिदिन 375 रुपए से भी कम कमाते हैं। भारत की जनसंख्या यदि 140 करोड़ मानी जाय तो देश की कुल जनसंख्या के 16.42 प्रतिशत नागरिक 375 रुपए से कम कमा रहे हैं, जबकि विश्व बैंक द्वारा हाल ही में इस सम्बंध में जारी किए गए आंकड़े कुछ और ही कहानी कह रहे हैं। विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओ में आज भारत के ऊपर अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी आते है। अगर इन बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में गरीबी के आकंडें देखे तो कई चौकाने वाले खुलासे सामने आते है।

सबसे पहले अगर अमेरिका की बात की जाय तो अमेरिका की कुल आबादी के 11.4 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। जबकि अमेरिका को विश्व का सबसे अमीर एवं विकसित देश माना जाता है। चीन के सम्बंध में तो कोई वास्तविक आंकड़े सामने आते ही नही है।

समस्त जिलेवासियों को दुर्गापूजा, दिपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक ुभकामनाएं

वैद्यनाथ सिंह
जिला निबंधन पदाधिकारी, बांका

समस्त जिलेवासियों को दुर्गापूजा, दिपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक ुभकामनाएं

हरेराम प्रसाद
जिला सांख्यिकी पदाधिकारी बांका

समस्त जिलेवासियों को दुर्गापूजा, दिपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक ुभकामनाएं

रविंकर प्रसाद सिंह
कार्यपालक अभियंता डीआरडीए बांका

समस्त जिलेवासियों को दुर्गापूजा, दिपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक ुभकामनाएं

आचार्य रघुनंदन ास्त्री
आवासीय मालि एके-डमी, खेसर, बांका,
मो.:8002850364

समस्त जिलेवासियों को दुर्गापूजा, दिपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक ुभकामनाएं

डॉ. सरयू प्रसाद यादव
अध्यक्ष कुसाहा वन समिति जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को दुर्गापूजा, दिपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक ुभकामनाएं

उत्तम कुमार
बांका